जिनपूजासंग्रह

श्रीमदुपाध्यायरामचद्रजीगणी

की

आज्ञानुसार

ऋषि नानकचंदने सोधितकरके

मुद्रितकिया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

सम्वत् १९७३ मि० श्रावण वदि १

॥ विज्ञापन ॥

सकल भविक जनोंकों उचित है कि अपार ससार सागर सेतु श्रीभगवान् इष्ट स्वरूप जिनेंद्रकी उपासना में निरालस्य हो के अवश्य प्रवृत्त होना, और वह उपासना प्रवृत्ती आगम के ज्ञानही से सुकर और सफल होती है, आगम ज्ञान भी पठन पाठन और ग्रंथों की सुलभतासे सिद्ध होताहै, इस हेतु धनिक लोग पाठ शाला और मुद्राय त्रोंमे यथाशक्ति द्रव्य व्यय करें उसको व्यर्थ न समझें ग्रंथो की सुलभता और विद्या वृद्धि होगी यहतो प्रत्यक्ष फल है परंतु औरभीफल है इसमें प्रमाण श्री हेम चंद्र सूरिजी का वचन है "नते नरा दुर्गति माप्नुवति नमूकतां नैव जडस्वभाव ॥ नचांधतां बुद्धि विहीनत च ये लेखयतीह जिनस्य वाक्यं ॥ १ ॥ पठति पाठयते पठतामसौ वसन भोजन पुस्तक वस्तुभि प्रतिदिनं कुरुते य उपग्रह स इह सर्व विदेय भवे न्नर २ ॥ लेखयंति नरा धन्या ये जिनागम पुस्तकं ते सर्व वाङ्मय ज्ञात्वा सिद्धिं याति नसशय ॥ ३ ॥ „ इनवचनोंमें लेखयति इसका अर्थ यह है कि अक्षर विन्यास अर्थात् कागज पर अक्षर की रचना, सो लेखनी सेहोय, या मुद्रासे उसमें कुछ विशेष नहो, ऐसे श्रेयस्कर कार्य में प्रवृत्त नहोना यह बडी भूलहै श्री भगवान् उनके सब मनोरथ पूर्ण करें, जो वंश देशभूषण रायधनपत सिंह बहादुर ऐसे कार्यमें उत्साही होके व्यय कर रहेहैं उन्ही के सहायतासे पद्द रत्नावली १ जिनपूजा सग्रह २ मुद्रित किया है औरसिज्झाय पुस्तक मुद्रित होरहा है, ऐसे ही सकल भविक लोक प्रवृत्त होय विद्या और ग्रयों की वृद्धि करें जिसेधर्मसुरक्षितरहै ऐसी हमारी इच्छा है, भगवान शीघ्रपूर्ण करें ॥ इति ॥

॥ॐ॥ अथ श्री जिन पूजा पद्धतिः ॥



प्रथम श्री मज्जिन पूजा करनें वाला अच्छे स्थान में स्नान कर चोटी के केश बाध शुद्ध वस्त्र पहर के उत्तरासगकर मुख कोश बाधे पीछे इन मन्त्रो से वास क्षेप तीन तीन वार मंत्र के अष्ट द्रव्य कों शुद्ध करै सोही आचार दिनकर सें लिखते हैं ॥



ॐ अत्रकपोह संसारि जीवः सुवासनः सुमेधः एकचित्तो निरवद्यार्हत् पूजने निर्वृत्तों निष्पापो भूयार्त निरुपद्रवो भूयासं म तन्माश्रिता न्येपि जीवा निरवद्यार्हत् पूजने निर्बधा. निष्पापा भूयासु. स्वाहा ॥

॥ यह मंत्र पढ़के अपनें ललाटमें तिलक करै ॥

॥ अथ जल मन्त्र ॥

ॐ आपो अप्काया एकेंद्रिया जीवा निरवद्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथा निष्पापाः शुद्ध गतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ चंदन पुष्प धूप फल अक्षत शुद्धि मंत्र ॥

ॐ वनष्पतयो वनष्पति काया जीवा एकेंद्रिया निरवद्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथा निष्पाया शुद्धगतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसापाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ अग्नि और दीपक शुद्धि मंत्र ॥

ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथाः संतु निर पायाःसंतु शुद्धगतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ अथ स्नात्र पूजा प्रारंभः ॥



॥ पांखडी गाथा ॥

॥र्दूंय॥ चोतीसँ अतिशय जुत्त । वचनातिशय सजुत्त ॥ सो परमेसर देखि भवि सिंहासण सपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिंहासण बैठा जगभाण। देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठें तुझ निम्मल झाण लहिये परम महोदय ठाण॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीस जिणदा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणदा ॥ (ए पढ चरने टीकी दीजे ॥ १ ॥)

॥ गाथा ॥

कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे चोवीस सोन्नागी चो वीस वैरागी चोवीस जिणंदा कुसुमांजलि मेलो वीरजिणंदा ॥

॥ इति पांखडी गाथा ५ ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिन वर सयल जिन वर नमिय मनरंग । कल्लाणक विह संथविय । करि सुज म्म सुपवित्त सुंदर । सय इक सत्तरि तित्थं कर । इक्क समैं विहरंत महियल । चवण समैं इकवीस जिण । जम्म समैं इकवीस । न्नत्तिय न्नावें पूजिया । करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अचिरा हुलरावती एदेशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिन न्नक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना । करि थानक वीसनी सेवना ।अ ति राग प्रशस्त प्रन्नावता । मन न्नावना ए हवी न्नावता । सविजीव करूं शासन रसी इसी न्नाव दया मन उल्लसी । लहि परिणा

म एह वु ज्ञलुं। निपजाव्री जिनपद निरमलु आऊ वंध विचै इक ज्ञव करी। श्रद्धा सवेग थी थिर धरी। तिहां थी चविय लहै नर ज्ञव उदार। ज्ञरतं तिम ऐरव तेज सार। महाविदेह विजय प्रधान। मऊ खडै अवतरै जिन निधान ॥

॥ ढाल ॥

पुण्यें सुपनाहे देखें। मनमे हर्प विशेपै गजवर उज्ज्वल सुदर। निर्मल वृपज्ञ मनोहर निर्ज्ञय केसरी सिंह। लखमी अतिह अवीह अनुपम फूलनी माल। निर्मल शशि सुकमाल। तेज तरण अति दीपै। इद्ध ध्वजा जग जीपै। पूरण कलस पडूर। पदम सरोवर पूर। इग्यार में रयणायर। देखै माता जी गुण सायर। वारम ज्ञुवन विमान। तेर मे रत्न निधान। अग्नि शिखा निरधूम। देखे माताजी अनुपम। हरखी रायने ज्ञासें। राजा अर्थ प्रकाशे। जगपति जिन वर सुख कर। होस्यें पुत्र मनोहर। इद्धा दिक जसु नमस्यें। सकल मनोरथ फलस्यें ॥

॥ वस्तु ॥

पुन्य उदय पुन्य उदय उपना जिण नाह। माता तव रयणी समैं देखि सुपन हरखंत जागिय। सुपन कही निज कंत नें सुपन अ रथ सांभलो सोभागिय। त्रिभुवन तिलक म हा गुणी। होस्यें पुत्र निधान इंद्रा दिक ज सु पयनमी करस्यें सिद्ध विधान॥

॥ ढाल चंद्रा उलानी॥

सो हम पति आसन कंपियो। देई अव धें मन आणंदियो। मुक्र आतम निर्मल कर ण काज। भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज। भव अरुवी पारग सत्थ वाह केवल नाणा इय गुण अगाह। शिव साधन गुण अंकूर जेह। कारण उलट्यो आषाढ मेह। हरखें विकसैं तव रोमराय। वलया दिक मां निज तनु नमाय। सिंहासन थीऊठ्योसुरिंद। प्रणमंतो जिण आणंद कंद। सगअरू पयपमुहा आवि तत्थ। करि अंजलि प्रणमिय मत्थ सत्थ। मुख भाखें ए खिण आज सार तियलोय पहू दीठो उदार। रे रेनिसुणों सुरलोय देव। विष या नल तापित तुम समेव। तसु शांति क

रण जलधरं समान । मिथ्या विष चूरण गरुडवांन । तेदेव सकल तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ । इम जंपी सक्रस्तव करेवि । तव देव देवी हरखें सुणे वि । गावें तव रंभा गीत ज्ञान । सुर लोक ज्ञवो मंगल निधान । नर खेत्रें आरज वंश ठामं । जिन राज वधें सुर हर्ष धाम । पिता मात घरे उच्छव अलेख । जिन शासन मंगल अति विशेख । सुर पति देवा दिक हर्षसंग । संयम अरथी जननें उमंग । शुभ वेला लगनें तीर्थ नाथ । जनम्यां इंद्रादिक हर्ष साथ । सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव । वधाई वधाई थई अतीव ॥

॥ इहां चैत्य वंदन करणां धूप खेवणां ॥

॥ ढाल ॥

॥ शांति जिननों कलश कहस्यों ॥ एदेशी ॥

श्रीतीर्थ पतिनों कलस मज्जन गाइये सुखकार । नरखित्त मंडन दुह विहंडन भविक मन आधार । तिहां राव राणां हर्ष उच्छव थयो जग जय कार । दिसि कुमरि

अवधि विशेस जाणीं लह्यो हर्ष अपार ॥ निय अमंर अमरी संग कुमरी गावती गुण वृंद । जिन जननि पासें आवि पोंहती गहकती आणंद । हे माय तैं जिनराज जा यो शचि वधायो रम्म । अम्ह जम्म निम्म ल करण कारण करिस सूइय कम्म । तिहां भूमि शोधन दीप दर्प्पण वाय विंजण धार तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि म ज्जन कार ॥ वर राखडी जिन पाणि वांधी दियें एम आसीस । जुग कोडकोडी चिरंजी वो धर्म दायक ईश ॥

॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायक जी त्रिभुवन जन हित का रए । परमातम जी चिदानंद घन सारए । जिन रयणी जी दशदिस उज्जलता धरै । शुभ लगनें जी ज्योतिष चक्रते संचरै । जिन जनम्या जी जिण अवसर माता घरैं तिण अवसर जी इंद्रासन पिण थरहरै ॥

॥ त्रूटक ॥

थरहरें आसन इंद्र चिंतै कवण अवसर

ए वण्यो । जिन जन्म उच्छव काल जा
णी अतिहि आनंद ऊपनों । निज सिद्ध
संपति हेतु जिनवर जांणि भगतै ऊमह्यो ।
विकसतवदन प्रमोदवधतै देवनायकगहगह्यो

॥ ढाल ॥

तव सुरपति जी घंटा नाद करावए। सुर
लोकैं जी घोपणां एह दिरावए॥ नर खेत्रैं जी
जिनवर जन्म हुवो अछै । तसु भगतै जी
सुरपति मंदरगिर गछै ॥

॥ त्रूटक ॥

गछै मंदर शिखर ऊपर भवनं जीवन
जिन तणों। जिन जन्म उच्छव करण कारण
आवज्यो सवि सुर गणो । तुम शुद्ध समकि
त थास्ये निर्मल देवाधि देव निहालतां आ
पणां पातिक सर्व जास्यें नाथ चणर पखा
लतां ॥

॥ ढाल ॥

इम सांभल जी सुरवर कोडी बहु मि
लीं जिन वदन जी मंदरगिर साहमी चली
सोहमपति जी जिन जननी घर आविया
जिन माता जी वंदी स्वामि वधाविया ॥

॥ त्रूटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्य ऋं कृत पून्यए । त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण ध्युन्यए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वरकरी । उच्छुंग तु मचै बलिय थापिस आतमां पुन्यें न्नरी ॥

॥ ढाल ॥

सुरनायक जी जिन निज कर कमलैं ठव्या । पांच रूपैंजी अतिशय महिमा यें स्तव्या ॥ नाटक विधजी तब वत्तीस आग ल बहै । सुर कोडीजी जिन दरसण नें ऊमहै

॥ त्रूटक ॥

सुर कोड कोडी नाचती बलि नाथ शुचि गुण गावती । अपछरा कोडी हाथ जोडी हाव न्नाव दिखावती ॥ जयजयो तूं जिन राज जगगुरु एमदे आसीस ए । अम त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीसए ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरवरजी पांडुक बनमें चिहुं दिसैं गिरि सिल परजी सिंहासन सासयबसै ॥ ति हां आणीजी शकै जिन खोलै ग्रह्या । चउ

सठँ जी तिहां सुरपति आवीरह्या ॥

॥ त्रूटक ॥

आविया सुरपति सर्वजगती कलश श्रेणि वणावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणावए ॥ अचूयपति तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोडिनें । जिन मज्जनारथ नीरल्यावो सवे सुर करजोडिने ॥

॥ ढाल श्रातिने कारणे इछू कलशा भरे ॥

आत्मसाधन रसी देवकोडी हसी। उल्लसीनें धसी खीरसागर दिशि। पउमदह आदि दहगंग पमुहा नई । तीर्थजलअमल लेवा भणी ते गई । जाति अड कलश करि सहस अठोत्तरा ॥ छत्र चामर सिंहासणे शुभतरा । उपगरण पुष्फचगेरि पमुहा सवे ॥ आगमें भासिया तेम आणी ठवे । तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता। गावता भावता धर्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता धन्य अमसक्ति शुचिभक्ति इमभावता समकितैं वीज निज आत्म आरोपता । कलश पाणीमिसैं भक्ति जलसींचता। मेरु सिहरो

वरें सर्व आच्चावही। शक्र उच्छंग जिन दे
खि मन गहगही ॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा ऋणाइ कालो। ऋदिठ पुब्बो
तिलोयतारणो तिलोय बंधू मिच्छत्त मोह
विद्धंसणो ॥ ऋाणाइ तिराहा विणासणो।
देवाहि देवो दिठब्बो दिठब्बो हियकामेहिं ॥

॥ ढाल ॥

एम पन्नणंत वण जवण जोईसरा ॥ देव
वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पठिया
केवि मित्ताणुगा। केवि वर रमणि वयणेण
ऋइ उच्छगा ॥

॥ वस्तु ॥

तत्थ ऋच्चुय तत्थ ऋच्चुय इंद ऋादेश
करजोडी सब देवगण ॥ लेइ कलश ऋादे
श पामिय ऋद्भुत रूप सरूपजुय कवण एह
पुच्छंत सामिय इंद कहें जग तारणो तार
ग ऋम परमेस। नायक दायक धर्म निधि
करिये तसु अभिषेक ॥

॥ ढाल ॥

॥ तीर्थ कमल वर उदक नरीनें पुष्कर ॥
॥ सागर आवै ॥ एदेशी ॥

पूर्ण कलश शुचि उदकनीधारा जिनवर अगैनामै । आतम निर्मल नाव करतां व घतें शुन परिणाम ॥ अच्यूतादिक सुरपति मज्जन लोक पाल लोकांत । सामानिक इंद्रा णी पमुहा इम अनिषेक करंत ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईशाण सुरिंदो सक्कं पन्नणेइ कॅरिस सुपसाउं । तुम अंके महनाहो खिणमित्त अम्ह अप्पेह ॥ तासक्कि दो पन्नणइ । साह म्मि वच्छलम्मि वज्जलाहो आणा एवं गिराहइ होउ कयत्था नो ॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषन्न रूप कर। राहवण करे प्रभु अगें । करिय विलेपन पुष्फ माल ठवि वर आनरण अभंगें सो० ॥ १ ॥ तव सुरवर वज्ज जय जय रवकर । निश्चे धरि आणद । मोक्ष मारग सारथपति पाम्योन्ना जस्यू हिव नव फद सो० ॥ २ ॥ कोऊ व

त्तीस सोवन्नउवारी वाजंतै वरनाद । सुरप ति संघ अमर श्री प्रभुनें ॥ जननी नें सुप्रसा द । आणी थापी एम पयंपें । अम्ह निस्त रिया आज । पुत्र तुमारो धणिय अमारो । तारण तरण जिहाज ॥ सो० ॥ ३ ॥ मात जतन करि राखज्यो एहनें । तुम सुत अम आधार । सुरपति भक्ति सहित नंदीश्वर करै जिन भक्ति उदार ॥ सो० ४ ॥ निय नि य कप्पगया सव निर्ज्जर । कहतां प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ५ ॥ खर तर गछ जिन आणा रंगी राज सागर उवझाय । ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुरु तणै सुप साय ॥ देव चंद निज भक्तें गायो । जन्म महोच्छव छंद । बोध बीज अंकूरो उल स्यो । संघ सकल आंणद सो० ॥ ६ ॥

॥ इति स्नात्रम् ॥



॥ राग वेलाउल ॥

इम पूजा नगतै करो । आतम हित का जे तजी विनाव निज नावमां रमलां शिव राज इम० ॥ १ ॥ काल अनते जे ज़वा । होस्यें जेह जिणंद । संपइ श्री मंधर प्रनू । केवल नाण दिणंद इम० ॥ २ ॥ जन्म म होच्छव इण परै । श्रावक रुचिवंत विरचै जिन प्रतिमा तणीं । अनुमोद नखत ॥ इम० ३ ॥ देव चद जिन पूजनां । करतां नवनों पार । जिन पडिमा जिनसारखी । कही सूत्र मफ़ार इम० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ इति स्नात्रम् ॥

॥ अथ अष्ट प्रकारी पूजा ॥

विमल केवल नासन नास्करं । जगति जतु महोदय कारण जिनवरं वर्द्ध मान ज लौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १

ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ जल पूजा ॥

सकल मोह तमिस्त्र विनाशनं परम शी
तल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन
चंदनैः । सहज तत्व विकाश कृतेर्चयेः ॥ २
नुँङ्की परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्त
ये जन्म जरामृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा
य चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपू०

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै । विंशद चे
तन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनै
र्नवैः । परम तत्व मयंहि यजाम्यहं ॥ ३ ॥
नुँङ्की परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्त
येजन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा
य पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ इतिपुष्प पूजा

सकल कर्ममहेंधन दाहनं । विमल संबर
भाव सुधूपनं । अशुभ पुद्गल संग विवर्जनं
जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥
नुँङ्की परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय
धूपंयजा महे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा

नविक निर्मल बोध विकाशकं । जिनगृहे शुन्न दीपक दीपनं । सुगुण राग विशुद्धि सम न्वित । दधतु नाव विकाशकृते जनाः ॥ ५
ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति दीपपूजा

सकल मंगल केलि निकेतनं । परम मंगल नाव मय जिनं ॥ श्रयत नव्य जना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरो क्त स्वस्तिकं ॥ ६
ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ अक्षत पूजा ॥

सकल पुफल सग विवर्जनं । सहज चेतन नाव विलासकं । सरस नोजन नव्य निवेदनात् परम निर्वृति नाव महं स्पृहे ॥ ७ ॥
ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इतिनैवेद्यपूजा

कटुक कर्म विपाक विनाशनं। सरस पक्क फल व्रज ढौकनं ॥ विहित मोक्ष फलस्य विभोः पुरः । कुरुत सिद्ध फलाय महाजनाः ॥ ८ ॥ ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति फलपूजा

इति जिनवरवृंदं भक्तितः पूजयंति । परम सुख निधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रति दिवस मनंतं तत्व मुद्भासयंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ ८ ॥ ॐह्रीं परम पर मात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अर्घ्यं य जामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति अर्घ्य पूजा ।

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला। सिंहा सनो परि गतः स्नपनावशाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुम चंदन गंध धूपैः । कृत्वार्चनं तु विद धाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥

तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार

वस्त्रा दिकां । पूजां तीर्थंकृतां करोति सततं शक्त्या तिनकृत्या हतां ॥ नीरागस्य निरंज नस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः स्वस्या न्य स्य जनस्य निर्वृतिकृते कुलेशाद्या काङ्क्षया । ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति वस्त्रपूजा

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

॥ अथ लूण उतारण गाथा ॥

अह पडि भग्गा पसरं पयाहिणं मुणिव इ करेऊणं । पडि सलूणत्तण लज्जियंच लूण जय वहम्मि ॥ १ ॥ पिरकविह मुह जिन वरह दीहर नयण सलूण राहावइ गुरू मत्य नारिय । जलण पइस्सइ लूण॥ २ ॥ लूण उतारिय जिणवरह । तिन्नि पयाहिण देइ तड तड सद्द करतिते विज्जाविज्जा जलेण ॥ ३ ॥ लूण अग्निमें दीजे ॥ जजेण विज्जा यहइ जलेण तंनह अत्यि समहं । जिण अय मच्छ रेण । फिह इ लूणं तह तहस्स ॥ लूण अग्नि मे दीजे ॥

सच्चं मुणि वइ जलणि जल तंतह नमडइ पास अहव कयं तस्स निम्मलउ निगुण वुठि पयास ॥ १ ॥ जलण अनेविणु जलनिहि पास तिन्नि पयाहिण दिंतिहि पास। जिम जिय बुहै नव दुह पास । २ । जल निम्मल कर कमलेहि लेवणु । सुरविहि नावहि मुणि वइ सेवणु पन्नणह जिणवर तुह पय सरणु ॥ एह कहके लूण जल सरणकीजै ॥ इति

॥ श्री आरतिसवेरे की ॥

जय जय आरती शांत तुमारी ॥ तोरा चरण कमलकी मैं जाउं । वलिहारी विश्वसेन अचिराजी के नंदा । शांतिनाथ मुख पूनिम चंदा जै० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवन मय काया मृगलांछन प्रनु चरण सुहाया ॥ जै० २ ॥ चक्र वर्त प्रनु पंचम सोहै । सोलम जिणवर जग सब मोहै जै० ॥ ३ ॥ मंगल आरति नोरें कीजे । जनम जनम को लाहो लीजे जै० ॥ ४ ॥ कर जोडी सेवकगुण गावै । नविक गुण गावै । सो नर नारी

अमर पद पावैं ॥ जै०॥ ५ ॥

॥ आरती संध्या की ॥

रिषभ अजित सम्भव अभिनंदन सुमति पद्म श्री सुपासकी । जै महाराज कि दीन दयाल की आरति कीजे। चंद सुविधि शी तल श्रेयांसा । वासु पूज्य जिन राज की ॥ जै० ॥ १ ॥ विमल अनत धर्म हितकारी । शांति नाथ सुख कार की जैम० ॥ २ ॥ कुं थुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नमु सो वन कायकी जैम० ॥ ३ ॥ नेमि नाथ प्रभु पार्श्व चितामणि वर्द्धमान भव पार की जै० ४॥ कचन आरति बहु विध सफकर ली जेलीजे अग उछाह कीजै ० ॥ ५ ॥ सक ल सघ मिल आरति करत है आवा गमन नियार की जैमहा० ॥ ६ ॥

॥ इति सपूर्णम् ॥

॥ अथ यक्ष यक्षणी आरती ॥

जय २ जिन पद सेवन कारक जय २ जगदंबे आं० अह निशि तुझ पद समरन कारन दिल धिच ध्यान धरे ज० १ भवि जन वंछित पूरन सुरतरु चक्केस्वरि अंबे ज० ३ वसु भुज शोभित कनक छवि तनु सेवित सुरवृंदे ज० ४ पंचानन तिम खगप ति वाहन आयुध हस्तधरे ज० ५ रिधि वृ ध्दि नित प्रति सेवक आपें आनद संघ घरे ज० ६ इति चक्केश्वरी जीकी आरती ॥

जय जय रिषभ पदांबुज सेवक जय २ जखराया भविजन सुखदाया ज० । कामग वी जिम बंछित दायक कंचन बरण सुहाया ज० ॥ १ ॥ संकठ विकट निवारण कारण वर कुंजर चढिआया ज० ॥ २ ॥ उदधि भु जैं करि शोभित तनु छवि गुणनिधि गोमुख सुर राया ज० ॥ ३ ॥ आरत हरवा करत आरती श्रीसंघ चितझल साया ज० ॥ ४ ॥

॥ इति यक्ष राज आरती ॥

॥ अथ सतरहन्नेदी पूजा ॥



नाव नले नगवत नी पूजा सतर प्रकार परसिध कीधी द्रोपदी अग छठें अधिकार

॥ राग सरपदो ॥

जोति सकल जग जागती ए। सरसति समर सुनिंद ॥ सतर सुविध पूजा तणी प नणिसु परमानंद ॥ २ ॥

॥ गाहा ॥

न्हवण १ विलेवण २ वत्थजुग ३ गंधा रोहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५ माला रोहण ६ वन्नय ७ चुन्न ८ पफागाय ९ आन्नरणे १० ३ ॥ मालकलाव ११ वंसघर पुप्फंपगरंच १२ अठमगलय १३ धूवउखेवो १४ गीययं १५ नट्टं १६ वज्ज १७ तहान्नणियं ॥ ४ ॥ सतरन्नेद पूजापवरं। ज्ञाताअंगविचार। द्रुपदसुता। द्रोपदिपरें। करिये विधविस्तार ॥ ५ ॥

॥ अथन्हवणपूजा ॥

॥ रागदेशाख ॥

पूर्वं मुखसावनं। करि दशन पावनं । अहत धोती धरीउचितमानी । विहित मुख कोशकेखीरगंधोदके । सुभृत मणि कलशं करि विविधवानी । नमिवि जिनपुंगवं । लोमहत्थेनवं । मार्जनं करिय वावारि वारी । भणिय कुसुमांजली कलश विधिमनरली । न्हवति जिन इंद्र जिमातिमभ्रुगारी ॥ १ ॥

॥ राग सारंग मल्हारमें दोहा ॥

पहिली पूजासाचवें । श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल तनु जिन तणै । करै सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ परमानंद पीयूष रस । न्हवण सुगति सोपान ॥ धरम रूप तरु सींचवा । जल धर धार समान ॥ २ ॥

॥ राग सारंग मल्हार ॥

पूजा सतर प्रकारी । सुणियोरे मेरे जिनवरकी परमानंद अति ढल्योरी सुधारस ॥

तपत वुझी मेरे तनकीहो ॥ पू० १ ॥ प्रभुकुं
विलोकि नमिजतन प्रमार्जित। करत पखा
ल शुचिधार वनकी हो। न्हवण प्रथम निजप्र
जिन पुलावति पंककुंवरप जैसे घनकी हो ॥ पू
२ ॥ तरण तारण भव सिधु तरणकी मंज
री संपदफल वरधनकी। शिवपुर पंथ दि
खावण दीपी। धूमरी आपद वेल मरदन
की हो ॥ ३ पू० ॥ सकल कुशल रंगमिल्योरी
सुमतिसग। जागी सुदिसा शुभमेरे दिनकी ॥
कहै साधुकीरत सारगभरि करतां। आसफ
लीमेरे मनकीहो ॥ पू० ४ ॥

॥ इति प्रथमन्हवणपूजा १ ॥

॥ राग राम गिरीमें विलेपनपूजा ॥

गात्रलूहें जिन मनरंगसुंहोदेवा गा०। स
खरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं हांरेदेवा वास
सुं। गधक सायसुमेलिये ॥ नदन चंदन चद
मेलीये रेदेवा। न०। मांहे मृगमदकुंकुम भेली
ये। करलीये रयणपिंगा णीकचोलीये ए० १॥
पग जानु कर पंधे सिरे रे। भालकं ठउर उदरं
तरै दुपहरै हांरेदेवा सुखकरै। तिलकनवे अग

कीजिये ॥ दूजीपूजा अनुसरै रे श्रावक । हरि विरचै जिम सुरगिरै ॥ तिमकरै जिणपर जन मन रंजीये ॥ २ ॥

॥ राग ललितमें दोहा ॥

करङ्ग विलेपन सुखसदन । श्रीजिन चंद शरीर ॥ तिलक नवे अंगपूजतां । लहैं नवो दधितीर ॥ १ ॥ मिटै तापतसुदेहको । परम शिशिरता संग ॥ चित्त खेद सवि उपशमें । सुषम समरसी रंग ॥ २ ॥

॥ राग बेलाउल ॥

विलेपन कीजे । श्रीजिनवरअंगै जिनवर अंगसुगंधे होवि० कुंकुम चंदन मृगमदजक्षक र्हम । अगरमिश्रित मनरंगै हो वि० ॥ १ ॥ पग जानूकर खंधैं सिर । भालकंठ उरउदरं तरसंगै । विलुपति अघमेरो ॥ करत विलेपन तपत वुझति जिम चंगेंहो वि० ॥ २ ॥ नव अंगनवनव तिलक करतही । मिलत नवेनि धिचंगें ॥ कहैसाधु तनु सुचिकरो । सुललित पूजा जैसेगंगतरंगेंहो वि० ॥ ३ ॥

॥ इति विलेन पूंजा २ ॥

॥ अथ वस्त्रयुगलपूजा दोहा ॥

वसनयुगल उज्जल विमल । आरोपें जिनअंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥

॥ रागगोडी ॥

कमलकोमलघनंचंदनंचरचित । सुगंध गंधें अधिवासियाए ॥ कनक मंडितहयै लालप ल्लवशुचि । वसनजुगकंतअतिवासियाए । जिनप उत्तम अंगे सुविधिश्राद्धोयथा । करियपहिरावणीढोइयेए । पाप लूहणअंगलूहणो देवनें वस्त्रयुगपूजमलधोइयेए ॥ १ ॥

॥ रागवैराडी ॥

देव दुष्य जुग पूजा वन्यो है जतगगुरु । देव दुख हर अब इतनों मागु । तुहिज सवही हित तुंहीज मुगति दाता । तिण नमि २ प्रभु जी के चरणें लागुं दे० ॥ १ ॥ कहै साधु तीजी पूजा केवल दसण नाण । देव दुष्य मिसदेऊ उत्तम वागु । श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीता सवि

राडे दुख भंसय घुरम भांगु दे० ॥ २ ॥

॥ इति देव दूव्य पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथवासक्षेप पूजा ॥

॥ राग गौडी में दोहा ॥

पूज चतुर्थी इण परैं । सुमति वधारैं वास । कुमति दुरभि दूरै हरै । दहै मोह दल पास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

हां होरे देवा बावन चंदन घसि कुंकुमा चूरण विधि विरचै वासुए हां० ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा कंकोल तणों अधि वासु ए हां० ॥ वास दश्रो दिशि वासती । पूजो जिन अंग उवंगु ए हां० ॥ लाभि भुवन अधिवासिया । अनुगामी की सरम अ भंगुए ॥ १ ॥

॥ राग गौडी पूर्वी ॥

मेरे प्रभुजी की आणंद मेलें की मे० ॥ वास भुवन मोह्यो सब लोए । संपदा भेलें की पूजा ॥ १ ॥ सतर प्रकारी पूजा विजय

देवा तता थेई । अप्रमित गुण तोरा। चरण सेवा कि पूजा ॥ २ ॥ कुकुम चंदनवासैं। पूजीये जिनराज तत्ताथेई । चतुर्गति दुख गौरी चतुर्थी धन की पूजा ॥ ३ ॥

॥ इति वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पुष्पा रोहणं ॥

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां । पुष्प अनेक प्रकार । प्रन्नुपूजा ए पंचमी । पंचम गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥

पाडल चंपक केतकीए । कुंद किरण मचकुंद सोवन जाती जूहिका । बिउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरेए । मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणी से वर वरे । विधि जिन पूज विवेक ॥ २

॥ राग कानडो ॥

सोहेरीमाई मनमोहेरी चरणै । विविधकुसुमजिनचरणै । विकसी हसीजपें साहिबकुं ।

राखि प्रभू हमसरणैं सो० ॥ १ ॥ पंचमि पूज कुसुम मुकुलित की पंचविषें दुख हरणै सो० कहै साधुकीरति जगत जगवत की। भविक नरां सुख करणैसो० ॥ २ ॥

॥ इति पुष्पा रोहण पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ माला रोहण ॥

॥ राग आसाउरी में ॥ दोहा ॥

छठी पूजा ए छती। महा सुरभि पुष्फ माल। गुण गूंथी थापें गलै जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥

॥ राग राम गिरी गुर्जरी ॥

हेनागपुन्नाग मंदार नव मालिका हे मल्लिका सोग पारधिकलीए। हेमरुक दमणकं बकुल तिलक वासंतिका। हे लाल गुल्लाल पाडल भिलीए। हे जासुमण मोगरा। बेउला मालतीए। हे पंच वरणैं गुथी माल तीए। हेमाल जिन कंठ पीठें ठवी लह लहैंए। हे जाण संताप सङ्ग टालतीए। भलां २ वारतीए ॥ १ ॥

॥ राग आसाउरी ॥

देखी दामा कंठ जिन अधिक एधांति नदै चकोरकुं देपि २ जिम चंदै पंचविध वरण रची कुसुमाकी जैसी रयणा वलिसु हमदै दे० ॥ बहीरे तोफर पूजा तव भर धूजे। सब अरिजन भइ २ बंदे । कहै साधुकीरति सकल आसा सुख । जगति २ जेय जिण वंदे दे० ॥ २ ॥

॥ इति माला पूजा ॥ ६ ॥

॥ अर्थ वर्ण पूजा

॥ दोहा ॥

केतकि चंपक केवभ्रा । सोभै तेम सुगात चाढो जिम चढतां भवे सातमियें सुखसात्त १

॥ राग केदारो गोडीमे ॥

कुंकुम चरचित विविध पंच वरणका कुसुम सु हे । कुद गुल्लाल सु चपको दमण को जासु सु ए। सातमी पूजमे अग आलिगिये ए अग आलिंग मिस मानवी मुगति आलिगिये ए ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥

पंच वरणी अंगी रची कुसुम नी जाती फूलन की जाती पं० ॥ कुंद मचकुंद गुलाल सिरोवर कर करणी सोवनजाती पं० । दमणक मरुक पाडल अरविंदो अंस जूही वेउल वाती ॥ पं० ॥ पारधि चरण कल्हार मंदारो वर्ण पटकूल वनी भांती । सुरनर किन्नर रमणी गाती भैरव कुगति व्रतती दाती पं० ॥ २ ॥

॥ इति वर्ण पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ गंधबटी पूजा ॥

॥ राग सोरठ ॥ दोहा ॥

सोरठ राग सुहामणी । मुखैन मेली जाय ज्युं ज्यूं रात गलंतियां । त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १ ॥ सोरठ धांरा देशमें । गढां बडो गिर नार । नित उठ यादव वांदस्यां । स्वामी नेम कुमार ॥ २ ॥ जो हूंती चंपो बिरख वा गिर नार पहार । फूलन हार गुंथावती चढती नेम कुमार ॥ ३ ॥ राजमती गिरवर चढी । ऊभी करै पुकार । स्वामी अजकू न बा

भडे। मोमन प्राण आधार ॥ ४ ॥ रे संसारी प्राणिया। चढ्यो न गढ गिरनार। गंगा न्हाये न गोमती। गयो जमारो हार ॥ ५ ॥ धन वा राणी राजमती। धन वे नेम कुमार। शील संयमता आदरी। पोंहता भव जल पार ॥ ६ ॥ दया गुणां की वेलडी। दया गुणां की खांन अनंत जीव मुगतै गया। इण दया तणें पर माण ॥ ७ ॥ जग मे तीरथ दोय बडा सेत्रूं जो गिरनार। इण गिर रिषभ समो सरे उण गिर नेम कुमार ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अगर सेलारस सार सुमति पूजा आठमी। गंध वटी घन सार। लावो जिन तनु भाव सुं ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा। पावन घन घनसारो जी। आछो सुरभि सखर मृग नाभिजा जी देवा। चुभ रोहण अधिकारो जी। आ० वस्तु सुगध जव मोरियो जी देवा। अशुभ करम चूरीजै जी आ० आंगण सुरतरु मोरियो जी देवा। तव कु

मती जन खीजै जी ॥ १ ॥

॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई जिनवर अंग सुगंधें । गंध वटी घनसार उदारे । गोत्र तिर्थंकर वांधैं पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेलारस लावें जिन तनु रागें । धार कपूर भाव घन वरषत । सामेरी मति जागें पू० ॥ २ ॥

॥ इति गंध वटी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ ध्वज पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन मोहन धर मस्तकै । सूहव गीत समूल ॥ दीजे तीन प्रदक्षिणा । नवमी पूजअ मूल ॥ १ ॥

॥ राग मेघ गउडी में वस्तु ॥

सहस जोयण २हेममय दंड । युतपताक पांचे वरण । घुम घुमंति घूघरी वाजै । मृदु समीर लहकै गयणं । जाण कुमति दल सयल भांजै । सुरपति जिम विरचै धजा ए । नवमी पूज सुरंग । तिणपरि श्रावक धज

महति । आपें दान अनंग ॥ १ ॥

॥ राग नट्टनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहन जि० मोहना सुगरु अधिवासित्त । करि पंच सवद त्रिप्रद क्षिणा । सघव वधू शिरसोहण जि० ॥ १ ॥ नांतिवसन पांच वरण वन्योरी । विध करि ध्वज को रोहण । साधु नणति नवमी पूजा नव पाप नियांणा खोहण । शिव मंदिर कुं अधिरोहण जन मोह्यो नट्टनारायण जि० २

॥ इति ध्वजपूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ आन्नरण पूजा ॥

॥ राग केदारो दोहा ॥

शिरसोहे जिनवरतणै । रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक नाल अंगद नुजा । श्रवण कुंमल अतिकंत ॥ १ ॥ दशमी पूजा आन्नरणकी । रचना यथा अनेक । सुरपति प्रनु अगे रचै । तिम श्रावक सुविवेक ॥ २ ॥

॥ राग अधरास वा गुंमल्हार ॥

पाच पिरोजा नीलू लसणीया । मोतीमा

णक लाल लसणीया। हीरा सोहै रे। मन मोहै रे। धुनी चुनी पुलक करकेतनां। जात रूप सुभग अंक अंजना। मन मोहै रे ॥ १ ॥ मौलि मुकुट रयणे जड्यो। कांनें कुंडल हां सुजुगतै जुड्यो। उरहारू रे ॥ २ ॥ भाल तिलक वांहें अंगदा। आभरण दशमी पूज मुदा। सुखकारू रे। दुखवारू रे ॥ २ ॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभू शिर सोहै। मुगट रयणे जड्यो। अंगद बांह तिलक भालस्थल। यश नीको कोंनघड्यो प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरणि मंडल जीपें। सुरसुं अधिक अलंकस्यो। दुख के दार चमर सिंहासण। छत्र शिर उवरि धस्यो। अलंकृत उचितवस्यो ॥ २ ॥

॥ इति आभरणपूजा १० ॥

॥ अथ फूल घर पूजा ॥

॥ दोह ॥

फूल घरो अति शोभतो। फूंदै लहकै फू

ल ॥ महकै परिमल मह महा । इग्यारमी फूल अमूल ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी कौतकिया ॥

कोज अंकोल रायवेलि नव मालिका । कुंद मचकुंद वर विचिकलूए । हे तिलक दमण कदलं मोगरा परिमलं । कोमलं पाराधि पाडलूए । हे प्रमुख कसुमैं रचै त्रिभुवन कुं रुचै । कुसुम गेह विच तोरणूए । गुच्छ चंद्रोदय फूंवक उन्नय । हे जालिका गोख चितचोरणू ए ।

॥ राग राम गिरी ॥

मेरोमन मोह्यो माईरी । फूलघरै आणंद झिलै । आसत उसत दामवधारी मनोहर । देखत तवही सवदुरित खिलै फू० ॥ १ ॥ कुसुम मंडित थम्भगुच्छ चंद्रोदयं । कोरणि चारु विणाण सझै की । इग्यारमी पूज वणीहें रामगिरी । विबुध विमाण जैसे उपरि भजै की

॥ इति फूल घर पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ पुष्फवर्षा पूजा ॥

॥ दोहा मलारमें ॥

वरषै वारमी पूज में । कुसुम बादलिया फूल । हरणताप सविलोकको । जानु समा बङ्कमूल ॥ १ ॥

॥ राग भीम मलार गुंडमिश्र ॥

हेमेघवरसैभरी । पुष्फ वादलकरी जानु परिमाण करि कुसुम पगरं । पंच वरणै वन्यो विकच अमुकरवन्यो । अधर वृंतैनही पीड पसरं मे० ॥ १ ॥ वास महकै मिलै । भमर भमरीभिलै । सरसरंगै तिण दुखनिवारी । जि नप आगेकरै । सुरपजिम सुखवरें । वारमी पूजतिण परिअगारी मे० ॥ २ ॥

॥ राग भीम मलार ॥

पुष्फवादलीया वरसैसुसमां । योजन अ शुचिहर वरषै गंधोदकै । मनोहर जानु स मा पु० ॥ १ ॥ गमन आगमन कीपीर नही तसु । इह जिनको अतिशय सुगुण । गुंज ति२ मधुकर इमभणें मधुर वचन जिनगुणथु णें । कुसुम सुपरि सेवाजोकरै । तसु पीरन ही सुमणै पु० ॥ २ ॥ समवसरण पंचवरण अधोवृंत । विवुधरचै सुमना समा । वारमी पूज भविक तिमकरें । कुसुम विकसी हसी

उच्चरै तसु नीमवंधण अहराजवें । जे करै जै जै जिननमा पु० ॥ ३ ॥

॥ इति पुष्फवर्षा पूजा १२ ॥

॥ अथ अष्ट मंगलीक पूजा ॥

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥

तेरमि पूजा अवसरे मंगल अष्ट विधान । युवति रचै सुमता सही । परमानद निधान १

॥ राग वसंत ॥

अतुल विमल मिल्या । अखरू गुणै नि ल्या । सालि रजत तणा तंदुलाए । उलपण समाजकं विच पंच वरणकं । चद्रकिरण जै सा उजलाए । मेल मंगल लिखै । सयल मं गल असै । जिनप आगे सुथानक धरै ए । तेरमि पूजाविध । तेरमि मन सेरे । इष्ट मंगल अष्ट सिद्धि करे ए । अतुल० ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥

हांहो पूजा वणी तेरी रसमै ॥ अष्ट मंग ल लिखै । कुशल निधान है । तेज तरण के रसमै हां० ॥ दर्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्ण

कुंभ । मछयुग श्रीवछ तासुमैं । वर्धमान स्व स्तिक पूज मंगल की । आनंद कल्याण के सुख रस मैं हा० ॥ २ ॥

॥ इति अष्टमंगलीक पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गंधवटी मृगमद अगर । सेलारस घन सार । धर प्रभु आगल धूपणा । चउदमि अ रचा चार ॥ १ ॥

॥ राग वेलाउल सवावा ॥

कृष्णागर करचूर । सोगंध पांचेपूर । कुं दुरुक्क सेलारस सार । गंधवटी घनसार । गं धवटी घनसार । चंदन मृगमदा रस भेलिये । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरभि वर्ज्ज द्रव्य भेलिये । वेरुलिय दंड कनक मंडं । धूप घा णो करधरें । भव्यवृत्ति धूप करांति भोगं । रो ग सोग अशुभ हरें ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

सब अराति मथन मुदार धूपं । करत गंध

रसाल रे । देवाकर० । ऊाम धूमावली करिय धूसर । कलुप पातिक गाल रे स० ॥ १ ॥ ऊर्द्ध गति सूचत नविकुं । मघ मघै किरणालरे । चवदमी वामाग पूजा । दीये रयण विशालरे । आरती मगल थाल रे । मालवी गौमी ताल रे स० ॥ २ ॥

॥ इतिधूप पूजा १४ ॥

॥ अथ गीत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कठ नलै आलाप कर । गावो प्रनु गुणगीत ॥ नावो अधिकी नावनां । पनराभ पूजा प्रीत ॥ १ ॥

॥ श्रीराग ॥

यद्वदनत केवलमनत फलमस्ति । जैनगुण गानं । गुण वर्ण नाद वादै मात्रा नापा लयै युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वरसंगीतै स्थानै जंयतादि ताल करणै नच । चतुर चारी चारै गीतंगानं सुपीयूपं ॥ १ ॥

॥ श्रीराग ॥

जिनगुण गानं श्रुतअमृतं । तार मंद्रादि अनाहत तानं । केवल जिम तिम फल अमृतं जि० ॥ १ ॥ विविध कुमार कुमरी आलापें । मुरज उपांग नादज अमृतं । पाठ प्रवंध धु आप्रतिमानं । आयतिच्छंद सुरति सुमति सबद समान रच्यो त्रिभुवनकुं । सुरनर गावें जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं । पनरमि पूज हरै दुरितं जि० ॥ ३ ॥

॥ इति गीत पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ नृत्य पूजा ॥

॥ राग शुद्ध नाटक दोहा ॥

करजोडी नाटक करे । सजि सुंदर सिणगार भव नाटक ते नवि भमैं । सोलमि पूजा सार ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

भावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना । सप्पिमआसम रूप वेस वयसो मत्ते भकुंभत्थणा । लावस्मा सुगुणा पिकस्सरवई रागाइआ लावणा । कुम्मारी कुमराविं जैन

पुरउ नच्चंति सिगारणा ॥ १ ॥

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अठसयं कुमार कुमरीउ सूरिया भेणं देवेणं सदिठा। रंग मफवे पविठा। जिणं नमंता गायंता वायंता नच्चंति ॥

॥ राग त्रिगुण नाटक ॥

नाचंति कुमार कुमरी। त्रागफदि तत्ता थेइ। द्रागफदि २ थोगनि २ मुखै तत्ताथेइ ना० ॥ १ ॥ वेणु वीणा मुरज वाजे। सोलही शृगार साजे तनन निन्ना नई। घ्रणण २ घूघरी घमके। रणणनिन्नानई ना० ॥ २ ॥ कंसती कंचुकी तरुणी। मंजरी फंकार करणी। सोहंति कुमरी हास्तकं हावादि भावे। ददति भमरी ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी सुरी याभ रावणे कीधी सुधग तत्ता थेई। तेम भगते भविक लीणा। आणंद तत्ता थेई नाचंति कुमार कुमरी ॥ ४ ॥

॥ इति नृत्य पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ वाजित्र पूजा ॥

॥र्द्य॥ अथ नवपद जी की पूजा ॥



॥ गाथा ॥

उप्पन्न सन्नाण महो दयाणं । सप्पाडि हेरासण संठियाणं ॥ सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ ढाला ॥

जिए शुद्धभावें निजात्मा पिछान्यो स्वबोधे बए द्रव्यनों भेदजान्यो । निज प्राग्भवें सत्तपः कर्म साध्यो । विपाकोदयी तीर्थकृन्नाम बांध्यो ॥ १ ॥ यदीय प्रभावें जगत् सुप्रसिद्धा वसुप्राति हार्य्यादि संपत्ति सिद्धा । परानंद मग्ना सदा जे विशोका । नमो ते जिना सर्वदा भव्य लोका ॥ २ ॥ नमो नन्त संत प्रमोद प्रधानं । प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय । यथा जेह ना ध्यान थी सौख्यभाजा । सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ ३ ॥ कस्या कर्मदुम मर्म

चकचूर जेणे । न्नला न्नव्य नवपद ध्यानेन तेणे। करी पूजना न्नव्य न्नावें त्रिकालें सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ४ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनें । दिये देशना न्न व्यनें हित धरीने। सदा आठ महापाडिहारे समेता । सुरेसैं नरेसै स्तव्या ब्रम्हपूता। कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा। न्नवोपग्रही च्यार वे जे विलग्गा। जगत् पंच कल्याण के सौख्यपामे। नमो तेह तीर्थ करा मोक्षकामें॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमुं धर्मधुरंधर धीरो जी। देशना अमृत वरसता निज वीरज वड वीरो जी ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान न्नासन सर्व न्नाव प्रकाशता। निज शुद्ध श्रद्धा आत्म न्नावे चरण थिरता वासता । जिन नाम कर्म प्रन्नाव अतिशय प्राति हारज शोन्नता। जग जंतु करुणावंत न्नगवत न्नविक जनने थोन्नता॥

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर

ध्यान । अरिहंत पद पूजा करो । निज २ सगति प्रमाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

तीजे भव वर थानक तपकरि जिण बांध्युं जिन नाम । चोसठ इंद्रें पूजित जे जिन । कीजे तास प्रणाम रे ॥ १ ॥ भविका सिद्धचक्र पद वंदो जिम चिर काल आनंदो रे भ० ॥ उपशम रसनो कंदो रे भ० ॥ रत्न त्रयीनो वृंदोरे भ० । बंदी नें आनंदो रे भ० ॥ सेवे सुर नर इंदो रे भवि० ॥ १ ॥ जेहनें होइ कल्याणक दिवसे । नरकें पिणं उजवालुं । सकल अधिक गुण अतिशय धारी ते जिन नमि अघटालुं रे भ० ॥ सि० २ ॥ जे तिहुं नाण समग्ग उपन्ना । भोग करम खीण जाणी । लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जन नें । ते नमिये जिन नाणी रे भ० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महा गोप महा माहण कहिये । निर्य्यामक सत्य वाह । उपमा एहवी जेहनें छाजे । ते जिन नमिये उछाह रे भ० ॥ सि० ४ ॥ आठ महा प्राति हारज छाजे । पैंतीस गुण युत वांणी ॥ जे प्रतिबोध करे जग जन

नें । ते जिन नमिये प्राणी रे ज० ॥ सि० ॥

॥ ढाल सीमधर स्वामी उपदिसे एदेशी ॥

अरिहंत पद ध्यातां थकां ॥ दव्वह गुण पज्जाये रे । नेद छेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थाये रे ॥ २ ॥ वीर जिणेसर उपदिसे सांनल ज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानें आतमा । रिद्धि मिले संज आई रे ॥ वी० ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने० ॥

॥ इति प्रथम पद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्ध की ॥ कीजे दिल खुसि याल ॥ असुन कर्म दूरे टलें । फले मनोरथ माल ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

सिद्धाण माणद रमालयाणं । णमो णमो णंत चउक्कयाणं समग्ग कम्म रकयकारयाणं

जम्मं जरा दुख्क निवारगाणं ॥ २ ॥ निजा नादि कर्माष्टके । क्षय करी नें । जरा मृत्यु जन्मादि दूरे हरी नें । स्थिता सर्व लोकाग्र भागें विशुद्धा ॥ चिदानंद रूपा स्वरूपें प्रसिद्धा ॥ ३ ॥ निजानंत बोधादि युक्ता प्रदेशा । निराबाधता निर्वृता जे अलेशा । निराकार साकार भावे महंता । भजो ते प्रमोदे सदा सिद्ध संता ॥ ४ ॥ करी आठ कर्म क्षये पार पांध्या । जराजन्म मरणादि भय जेण वाम्या निरावर्ण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ ५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्म लेशा । रह्या ज्ञान मय जात वर्णादि देशा ॥ सदानंद सौख्या श्रिता जोति रूपा ॥ अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥

॥ ढाल ॥

सकल कर्म मल क्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी अव्या बाध प्रभुतामई । आतम संपति भूपोजी ॥ सकल० ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे भूप आतम सहज संपति । शक्तिव्यक्ति पणे करी स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावें । गुण

अनंता आदरी स्वस्वभाव। गुण पर्याय पर णिल । सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसहंससमवडनमो सिद्ध महा गुणी १ ॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अण फरसी । चरमति भाग विशेष । अवगाहन लहि जे शिव पु हता ॥ सिद्ध नमो ते अशेपरे भ० ॥ १ ॥ पूर्व प्रयोग नें गति परिणाम। वंधन छेद । असग । समय एक उर्ध्वगति जेहनी ॥ ते सिद्ध प्रण मो रगें रे भ० ॥ २ ॥ सि० ॥ निर्मल सिद्ध सिलानें ऊपर जोयण एक लो गत सादि अनंत तिहां थित जेहनी ते सिद्ध प्रणमो सतरे भ० सि० ॥ ३ ॥ जाणे पिण नस के कहि। परगुण प्राकृत तिम गुण जास। उपमा विण नांणी भव मांहें। ते सिद्ध दिउ उल्लास रे भ० ॥ ४ ॥ जोतिसुं जोति मिली जस अनुपम। विरमी सकल ऊपाधि । आत म राम रमापति समरो। ते सिद्ध सहज समा धि रे भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभाव जे। केवल दंसण ना

णीरे। ते ध्याता निज आतमा । होइं सिध गुण खाणी रे वी० ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल० ॐह्रीँ परम० सिद्धेभ्यो ॥

॥ इति श्री द्वितीय सिद्ध पद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिवआचारज पदतणी पूजा करोविशेष मोहतिमिर दूरेंहरे । सूर्यभाव अशेष ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं णमो णमो सूरिसमप्पहाणं । सद्देसणा दाण समायराणं । अखंड छत्तीसगुणायराणं ॥ २ ॥ नमूंसूरिराजा सदातत्वताजा । जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यभाजा षड् वर्गवर्गित गुणे शोभमाना । पंचाचारनें पालवें सावधाना ॥ ३ ॥ जिकेपंच आचार पालें सुभावें । अनित्यादि सद्भावना नित्यभावें । जिनेंद्रागमें ज्ञान दानेंसुरत्ता ।

बहुजव्यमें जेरहें अप्रमत्ता ॥ ४ ॥ बत्तीसे गुणे दीप्यमाना गणेशा। सदाशासना धार नूता सुलेशा। बहुजव्य लोका सुमार्गनयं ता। ज्ञयोसूरि मुष्या सदातेजवंता ॥ ५ ॥ नविप्राणिने देशना देशकालें। सदाअप्रम त्ता यथासूत्रआलें। जिकेशासनाधारदिग्द तकल्या। जगत्ते चिरंजीव जोशुद्धजल्या ॥

॥ ढाल ॥

आचारिज मुनिपतिगणी। गुणछत्तीसंधा मोजी। चिदानद रसस्वादता। परन्नावें नि ष्कामोजी ॥ १ आ० ॥

॥ त्रूटक ॥

नि. कामनिर्मलशुद्धचिदघन। साध्यनिज निरधारथी। वरज्ञान दरसण चरणवीरज। सा धनाव्यापारथी। नविजीवयोधक तत्वसोध क। सयलगुण सपातिधरा। संवर समाधिग तिउपाधि। दुविध तपगुण आगरा ॥

॥ ढाल ॥

पंचआचार जेसूधापालें। मारगन्नाखेंसा चो। तेआचारज नमियेनेहसुं। प्रेमकरीने जा चोरे न० ॥ १ ॥ वरछत्तीस गुणेकरिशोन्ने।

युगप्रधान जगमोहै । जगमोहै नरहै खिणु कोहै । सूरिनमुंते जोहै रे न० सि० ॥ २ ॥ नितअप्रमत्त धरमउवएसें । नहिविकथान कषाय । जेहनें तेआचारजनमियें । अकलुष अमलअमायरे न० सि० ॥ ३ ॥ जेदियेसार णवारण चोयण । पडिचोयण बलिजननें । पटधारी गबथंन आचारज । तेमान्या मुनि मननें रे न० सि० ॥ ४ ॥ अत्थमियें जिमसूरज केवल । वंदीजैजगदीवो । भुवन पदारथ प्रगटपटूते । आचारज चिरजीवोरे न० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारजभला । महामंत्र शुभ ध्यानीरे । पंचप्रस्थानें आतमा । आचारज होयप्राणी रे ॥ ३ ॥ वीरजि० ॥

॥ श्लोक ॥

विमलकेवल० ॥ ॐ ह्रीँ परम ० आचार्य ॥

॥ इतिश्री तृतीयकलश पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथचतुर्थ पद पूजा ४ ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुंदर सोभित गात्र ॥ उवझाया पद अरचिये । अनुभव रसनो पात्र ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

सुत्तस्थ वित्थारण तप्पराणं । णमो णमो वायग कुंजराणं । गणस्स सधारण सायराणं सव्वप्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥ महा सूत्र सिद्धांत शुद्धे करीनें । पढावें सुशिष्यां अनु ग्रह धरीनें । करें पूजना लोक मध्ये तदीया स्फुरती हवी. जास शक्ति स्वकीया ॥ २ ॥ गणे सारशुद्धिं सहर्षं करंता । मुनी वर्ग मध्ये प्रमादं हरंता । पचीसे गुणे युक्तदेहा सुधूर्या । सदा वंदिये ते उपाध्याय पूर्या ॥ ३ ॥ नही सूरि पण सूरिगुण नें सुहाया । नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधा ने निरुद्धा जिमाने ॥ ४ ॥ धरे पंच नें वर्ग वर्गित गुणोघा । प्रवादी द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा । गुणी गच्छ संधारणे स्तंभ भूता । उपा ध्याय ते वंदिये चित् प्रभूता ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

खंतिजुवा मुत्तिजुवा । अज्जव मद्दवजुत्ता जी । सच्चंसोय अकिंचना । तव संयम गुणरत्ताजी ॥ १ खंति० ॥

॥ त्रूटक ॥

जे रम्मा ब्रम्हसुगुप्तगुप्ता । सुमति सुमता श्रुति धरा। स्यादवाद वादें तत्ववादक। आत्म पर वीभंजन करा । भव भीरु साधन धीर शासन। वहनधोरी मुनि वरा । सिद्धांत वायन दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादशअंग सिज्झाय करे जे । पारग धारगतास। सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते। नमोउवज्झाय उलासे रे भ० ॥ १ ॥ अर्थ सूत्र नें दान विभागें । आचारज उवज्झाय। भवतिन्ये जेलहे शिवसंपद। नमियेते सुपसायें रे भ० २ मूरख शिष्यनिपायें जेप्रभु । पाहणनें पल्लव आणे । तेउवझाय सकल जन पूजित। सूत्र अरथ सबजाणेरे भ० ॥ ३ ॥ राज कुमर सरिखागण चिंतक। आचारज पदयोगें। जेउवझाय सदातेनमतां। नावें भवभयसोगें रे भ०

४ ॥ सि० वाचना चंदनरस समवयणे । दुःख
हित ताप सविटाले । तेउवकाय नमीजे जे
वलि । जिनशासन अजुवाले रे भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

तप सिज्झाये रत सदा । द्वादश अंगनो
ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव
जग भ्राता रे वी० ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॥ ॐ ह्रीं परम० उपा० ॥

॥ इति श्री उपाध्याय जी चतुर्थ पद पूजा ॥

॥ अथ पचम साधु पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्ष मारग साधन भणी । सावधान थ
या जेह । ते मुनिवर पद वदतां । निरमल
थाये देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

साहूण संसाहिय सयमाणं नमो नमो शु
द्ध दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं

मुणीण मानंद पयंठियाणं ॥ १ ॥ जिके दर्श न ज्ञान चारित्र रत्नें । करी मोक्ष साधै प्र धान प्रयत्नें । सुमत्ती गुपत्ती धरे सावधाना शुद्धाचार पालें हरैं मोह माना ॥ २ ॥ विवर्ज्जै विकथ्या प्रमादादि दोषा । जितेंद्री पणें जे महा ज्ञान कोसा । शुद्ध ध्यान ध्यावें गुणौ घे समिद्धा । नमो ते सदा सर्व साधु प्र सिद्धा ॥ ३ ॥ करैं सेवना सूरिवायग गणी नी । कडं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंच सुमति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्तैं नही काम भोगेषु लिप्ता ॥ ४ ॥ वली बाह्य अ भ्यंतरे ग्रंथि टाली । हुइं मुक्ति नें योग चा रित्र पाली । शुद्धाष्टांग योगें रमें चित्त वा ली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ५

॥ ढाल ॥

सकल विषय विषवारनें । निष्कामी निस्सं गीजी भवदव ताप समावता । आतम सा धन रंगी जी ॥ ५ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देहनिर्मम नि र्मदा ॥ काउसग्ग मुद्रा धीरआसन ध्यान

अभ्यासी सदा । तप तेज दीपें कर्म जीपें नही छीपें परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमूं हित जणी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जिम तरु फूलें भमरो बैसे । पीडा तसुन उपायें । लेई रस आतम संतोषें । तिममुनि गोचरि जाये रे भ० सि० ॥ १ ॥ पंचेंद्री नें जेनित जीपे । षटकायक प्रतिपालें । सयम सतरे प्रकार आराधे । वंदों तेह दयाल रे भ० ॥ २ ॥ अठार सहस्स शीलांगनाधोरी । अचल आचारचारित्र । मुनिमहंत जयणा युत वंदी कीजे जनमपवित्र रे भ० सि० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रम्हगुप्तजेपालें । बारहविहतपसूरा । एहवामुनि नमियेजेप्रगटें । पूरवपुन्य अंकूरा रे भ० सि० ४ ॥ सो नांनीं परे परिक्षादीसे । दिनदिन चढतेवानें । संयम खपकरतां मुनि नामिये । देश कालअनुमानें रे भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जेनित रहे । नविहरपे नविसोचें रे । साधु सूधा ते आतमा । स्यू मूंडे स्यू लोचें रे वी० ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमलके० ॐह्रीँ० परम० साधु ॥

॥ इति पंचम पद पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्टमदर्शण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्धनय । तत्वतणी पर तीत ते सम्यग दर्शण सदा । आदरिये सुभरीत

॥ छंद ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स । नमोनमो निम्मल दंशणस्स । मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स मूलस्स सद्धम्ममहा दुमस्स ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

अनंतानुबंधी कषायादिप्रकारें । महामोह मिथ्यात्वनें जेहवारैं इगछ्यादिभेदें करीवर्स वीजे । सभसठिभेदैं वली जे थुणीजे ॥ ३ ॥ जिनेंद्रोक्त तत्वार्थश्रद्धान रूपो । गुणासर्व मध्ये प्रवर्त्तैंअनूपो । विनाजेण नाणंचरित्तंनशुद्धं सुहंदंशणंतं नमामो विशुद्धं ॥ ४ ॥ विपर्य्या

सहोवासना रूपमिथ्या । टले जेह्मनादि ह्म
वें जे कुपथ्या । जिनोक्तै क्षयेंसहजथी शुद्ध
ध्यान । कहीयेदर्शन तेहपरमंनिधानं ॥ ५ ॥
विनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूपं चरित्रं विचित्र न्न
वारण्यकूप । प्रकृतिसातमे उपशमें क्षयेतेहहो
वे । तिहांआपरूपें सदाह्मापजोवें ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

सम्मगदर्शनगुणनमो । तत्वप्रतीत स्वरू
पोजी । जसुनिरधार स्वन्नाव वै । चेतनगुण
जेअरूपोजी ॥ ५ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे ह्मनूप श्रद्धा धर्म प्रगटैं । सयलपरईहा
टले । निजशुद्ध श्रद्धान्नाव प्रगटै । ह्मनुन्नवक
रणाउछले । वक्षमान परणति वस्तुतत्वे । ह्म
हव सुर कारण पणे निज साध्य, दृष्टें सरव कर
णी । तत्वतासपातिगिणें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरुधर्मपरीक्षा । सद्दहणा परिणा
म । जेह पांमी जे तेह नमीजें । सम्म गदर्शन
नामे रे न्न० सि० ॥ १ ॥ मलउपशम क्षयउ
पशम क्षयथी । जेहोइ त्रिविधि ह्मन्नंग । सम्म

गदर्शन तेह नमीजे। जिनधर्मैं दृढरंगें रे भ० सि० ॥ २ ॥ पंचवार उपसम लहिजै। क्षयउ पशमियअसंख। एकवार क्षायक तेसम्मग्। दर्शन नमीयें असंख रे भ० सि० ॥ ३ ॥ जे विणनाण प्रमाण नहोवें। चारित तरुनविफ लिउ। सुखनिर्व्वाणन जे विण लहिये। सम कित दर्शन वलिउ रे भ० सि० ॥ ४ ॥ सड़ सठवोलें जे अलंकरिउ। ज्ञान चारित्तनूंमूल। शमकित दर्शन ते नित प्रणमुं। शिव पंथ नुं अनुकूल रे भ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

शमसंवेगा दिकगुणा। क्षयउपसम जेआ वें रे दर्शन तेहिज आतमा। स्युं होवें नाम धरावें रे वी० ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विम० नुँङ्गी परम० दर्शन प० ६ ॥

॥ इतिश्री षष्ठम पद पूजा ॥

॥ अथसप्तम ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप माहि । आराधी जे सुज मनें । दिन दिन अधिक उछाह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

अन्नाण संमोह तमोहरस्स । नमोनमोना ण दिवायरस्स । पंचप्पयार स्सुवगारगस्स सत्ताणसव्वत्थ पयासगस्स । जवेजेहथी सर्व्व अज्ञानरोधो । जिनाधीश्वर प्रोक्तअर्थावबो धो । मतीआदिपच प्रकारप्रसिद्धो । जगज्झा सने सर्वदेवा विरुद्धो ॥ २ ॥ यदीय प्रभावें सुनक्रं अनक्रं । सुपेयं अपेय सुकृत्यं अकृत्यं जिणेजांणिये लोकमध्ये सुनाण । सदा मे त्रि शुद्धं । तदेव प्रमाण ॥ ३ ॥ जइजेहथी ज्ञान शुद्धिप्रबोधें । यथावर्णनासे विचित्रा वबोधे तिणेंजाणिये वस्तुषड् द्रव्यभावा । नहोवे वि तस्थानिजेच्छास्वभावा ॥ ४ ॥ होइंपच मत्या दि सुज्ञानभेदे । गुरुपास थीयोग्यतातेनवेदे वलिज्ञेयहेया उपादेयरूपे । लहेंचित्तमांजेम ध्यानेप्रदीपें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

नव्यनमो गुणज्ञाननें। स्वपरप्रकाशक ना वेंजी। पर्यायधर्म अनंतता। नेदानेद स्वना वेंजी न० ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

जेमुख्यपरणित सकलज्ञायक। बोधवास विलासता। मतिआदि पंचप्रकारनिर्मल। सिद्धसाधन लंकृता। स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम नेद अनेदता। सविकल्पनें अविकल्प वस्तु। सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

नक्ष अनक्ष न जेविन लहियें। पेयअपेय विचार। कृत्य अकृत्यन जे विन लहिये ज्ञानते सकल आधाररे न० सि० ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञान नें पीछेअहिंसा। श्रीसिद्धांतेनाष्युं ज्ञान नें वंदो ज्ञान मनिंदो। ज्ञानीये शिवसुखचाख्युं रे न० सि० ॥ २ ॥ सकलक्रियानो मूलजेश्रद्धा। तेहनूं मूलजे कहिये। तेहज्ञान नितनित वंदीजै। ते विन कहो किम रहिये रे न० सि० ॥ ३ ॥ पांचज्ञान मांहि जेह सदागम। स्वपर प्रकाशक तेह। दीपकपर त्रिनुवन उपकारी। वलिजिम रविशशिमेहरे न०

सि० ॥ ४ ॥ लोक उरध अध तिर्यग् ज्योतिष । वैमानिक नें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सव जेहथी । ते ज्ञाने मुझसिद्धिरे ज० सि०

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जेकर्मछे । खयउपशम तसथायेरे । तोहोय एहिजआतमा । ज्ञान अबोधताजायेरे वी० ॥ ५१ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल० ॐह्रींपरमपरमात्मनेज्ञान० ॥

॥ इतिश्री सप्तम ज्ञानपद पूजा ७ ॥

॥ अथाष्टम चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्र नों पूजो धरी उमेद । पूजन अनुभव रस मिलें । पातिक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

आरा हिया खंडिअ सक्किअस्स । नमो नमो सयम वीरिअस्स । सज्झायणा संग

निवाहि अस्स । निव्वाण दाणाइ समुज्जय स्स ॥ १ ॥ फलै जेह संपूर्ण थी तत्तकालं । गुणाणंपि सर्वात्मन्नावे विशालं । जिणें आद स्यो जे प्रयत्नें करीनें । दियो लोक नें जे अनुग्रह धरीनें ॥ २ ॥ ऊवें जेहथी रंकलोको पि पूज्यो । गुणश्रेणि थी दीपतो जेम सूर्यो । स्वकीये सुन्नेदें करी जे विचित्रं । जयो ते सदा लोक मध्ये चरित्रं ॥ ३ ॥ वली ज्ञान फल ते धरिये सुरंगें । निरायंसता द्वार रोधै प्रसंगे । न्नवांन्नोधि संतारणे यान तुल्यं । धरूं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ४ ॥ होइ जास महिमा थकी रंक राजा । वली द्वादशांगी न्नणी होइ ताजा । वली पापरूपोपि निःपाप थावे । थई सिद्ध ते कर्म नें पार जावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

चारित्र गुण वलि २ नमो । तत्व रमण जसु मूलो जी । पररमणीय पणो टलें । सकल सिद्ध अनुकूलो जी चा० ॥

॥ त्रूटक ॥

प्रतिकूल आस्रव त्याग संयम तत्व थिर

ता दम मयी । शुचि परमखंती मुनींद ग्राम पद । पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक भेद धर्म यथाख्यातै पूर्णता । अकषाय अकलुष अमल उज्जल काम कश्मल चूर्णता ॥ १

॥ ढाल ॥

देश विरतनें सर्व विरतजे । गृही यती अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजे तास प्रणामरे भ० ॥ १ ॥ तृण पर जे षट खंड सुख छंडी । चक्रवर्त्ति पण वरिउ ॥ ते चारित्र अक्षयसुख कारण । ते मे मनमांहि धरिउ रे भ० ॥ २ ॥ हूवा रंक पिण जेहनें आदरि । पूजित इंद नरिंद । अशरण शरण तेहिज वारू । वरिउ ज्ञान आनंद रे भ० ॥ ३ ॥ बारमास परिजाये जेहने अनुत्तर सुख अतिक्रमिये । शुक्ल शुकल अभिजात्य तेऊपर । ते चारित्र ने नमिये रे भ० ॥ ४ ॥ चयतें आठ कर्म नो संचय । रिक्त करै जे तेह । चारित्र नाम निरुत्ते भाख्यु । ते वन्दू गुणगेह रे । भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

जाणी चारित्र तेआतमा । निज स्वभा

वमांहि रमतोरे । लेश्या शुद्ध अलंकस्यो ।
मोह वने नवि भमतो रे वीर० ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केव० मुँझी परम परमा० चारि०

॥ इत्यष्टमी कलश पूजा

॥ अथ तप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्म काष्ठ प्रति जालवा परतिख अगिन समान तपपद पूजो भवि सदा । निरमल धरिये ध्यान ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

कम्मट्ठु मुन्मूलन कुंजरस्स । नमो नमो तिव्व तवो भरस्स । अणेग लद्धीण निबंध णस्स । दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥ इय नव पय सिद्धिं लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडिय समवग्गं ह्रींति रेहासमग्गं । दिसिवइ सुरसारं खोणि पीढा वयारं । तिजय विजय चक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ २

विधे जे कस्यो आतमा ऊजा वालै । घणा कालनी कर्मराशि प्रजाले । अनेका सुलब्धी लहै यत् प्रन्नावें । क्षमायुक्त ए साधु महान ट पावे ॥ ३ ॥ वली वाह्य अभ्यिंतरें न्नेद जिन्न जिनेद्रा गमें वर्णव्यू जे शुचिन्नं । शुनासं स्वन्नावें तिलोके सुवंद्यं । नमू ते प्रमोदे तपः पद मनिंद्यं ॥ ४ ॥ इति जिनवरवृंदं न्नक्तितो ये स्तुवति । परम पद निधान मानसे संस्म रति । परन्नव इह वा श्रीपालव न्मानवानां प्रन्नवति किल तेपां चारु कल्याण लक्ष्मीः ॥ ५ ॥ त्रिकालिक पणै कर्म कपाय टाली । निकाचित पणे वांधिया तेह वाली । कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यतर दुजे दे । क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ ६ ॥ होइं जास महि मा थकी लब्धि सिद्धि । अवांछक पणै कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तप जे महानंद हेतै । होइं सिद्धि सीमंतिनी जिम स केतै ॥ ७ इसा नवपद ध्यान ने जेह ध्यावें । सदानंद चिद्रूपता तेह पावे । वली ज्ञान विमलादि गुणरत्न धामा । नमो तेह वृदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥ इम नवपद ध्यावे । परम आनद

पावें । नव ज्ञव शिव जावें । देव नर ज्ञव पावें । ज्ञान विमलगुण गावें । श्रीसिद्धचक्र प्रज्ञावें । सवि दुरित समावें। विश्वजय कार पावें । ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधन तप नमो । वाह्यअभ्यंतर ज्ञेदेंजी। आतम सत्ता एकत्वता। परपरिणत उच्छेदैजी ।

॥ त्रूटक ॥

उच्छेदकर्म अनादि संतति जेह सिद्ध प णोवरें। योगसंगे निद्राआहारटाली। ज्ञाव अक्रियता करें। अंतर महूरत तत्वसाधे स र्व संवरता करी । निजआत्म सत्ता प्रगटज्ञा वें। करो तपगुण आदरी ॥ १० ॥

। ढाल ॥

इमनवपद गुण मंफलुं । चउनिक्षेप प्रमा णेंजी । सातनयें जेआदरें । सम्मग् ज्ञानें जा णेंजी ॥

॥ त्रूटक ॥

निरधार सेतीगुणें गुणनोकरें जेवहुमान ए । जसु करणईहा तत्वरमणें थायें निर्मल

ध्यान ए । इम शुद्ध सत्ता नलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरें। अक्षय अनंत महत चिदघन परम आनदता वरे ॥ १ ॥

॥ कलश ॥

इम सयल सुख कर गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली । सविलब्धि विज्जा सिद्धि मंदिर नविक पूंजो मनरली। उवझाय वर श्री राज सागर ज्ञान धर्म सुराजता । गुरुदीपचंद सु चरण सेवक देवचंद सु शोनता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जाणंता त्रिज्ञानें सयुत। ते नव मुकति जिणंद। जेह आदरें कर्म खपेवा। ते तप सुर तरु कंदरे न० ॥ १ ॥ करम निकाचित पिण क्षयजावें। क्षमा सहित करंतां । ते तप नमिये तेह दिपावें। जिन शासन उजवाले रे न० २ ॥ आमोसहि पमुहा बहुलब्धी। होइ जास प्रनावें अष्ट महा सिधि नव निधि प्रगटे । नमिये तेह प्रनावें रे न० ॥ ३ ॥ फल शिव सुख मोटू सुर नरवर। संपति जेहनुं फूल। ते तप सुरतरु सरिखो वंदुं । सम मकरंद अमूल रे न० ॥ ४ ॥ सर्व मगल मां

हें पहिलो मंगल । वरणावियो जे ग्रंथे । ते तप पद त्रिकरण नित नमिये । वर सहाय शिव पंथें रे न० ॥ ५ ॥ इम नव पद थुण तो तिहां लीनो । हुवो तनमय श्री पाल सुजस विलास वे चौथे खंडें । एह इग्यार मी ढालें रे न० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधें संवरी । परणित समता योगें रे तप ते एहिज आतमा । वरतें निज गुण भोगें रे वी० ॥ १ ॥ आगम नोआगमतणो । भाव ते जाणो साचो रे । आतम भावे थिर हुवो पर भावें मत राचो रे वी० ॥ २ ॥ अष्ट स कल समृद्धिनीं । घटमांहें रिद्धी दाखी रे । तिम नवपद रिद्ध जाणज्यो । आतमराम वे साखी रे वी० ॥ ३ ॥ योग असंख्य छें जिन कह्या नवपद मुख्य ते जाणो रे । एह तणें अवलंब नें । आतम ध्यान प्रमाणो रे वी० ४ ॥ ढाल बारमी एहवी । चौथे खंडें पूरी रे वाणी बाचक जस तणी । कोइ न रही अधूरी रे वी० ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ह्रँ्ज्ञी तपसे ॥

॥ इति तप पद पूजा ॥ ९ ॥

॥ इति वृहन्नवपद पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपद जी की आरती ॥

जय जय जग जन वंछित पूरण सुरतरु अभिरामी । आतम रूप विमल करतारक अनुभव परिणामी ज० ॥ १ ॥ जय २ जग सारा । भविजन आधारा ॥ आरति पार उतारा । सिद्ध चक्र सुख कारा ज० ॥ २ ॥ जग नायक जग गुरु जिणचंदा । भज श्री भग वंता । आतमराम रमा सुख भोगी । सिद्धा ज वंता ज० ॥ ३ ॥ पचाचार दिये आचारज युगवर गुण धारी । धारक वाचक सूत्र अ्र रथना पाठक भव तारी ज० ॥ ४ ॥ सम दम रूप सकल गुण धारक मोटा मुनि राया दरसण नाण सदा जय कारक । सजम तप गाया ज० ॥ ५ ॥ नवपद सार परम गुरु भाषै । सिद्धचक जयकारी । इह भव पर

भव रिधि सिधि दायक भव सायर वारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक जस गावे मन वंछित पावे। श्री जिन चंद चरण परि पूजक शिव कमला पावे ज० ॥ ७ ॥

॥ इति नवपद आरती संपूर्ण ॥



॥ अथ नवपद लघु पूजा ॥



उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं। सप्पाडिहेरास णसंठिआणं ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाणं। नमोनमो होउसया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंतसंतप्रमोदप्रधानं। प्रधानाय भव्यात्मने भास्वलाय। थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा ॥ सदा सिद्ध चक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुम मर्म चकचूर जेणें। भलाभव्य नव पद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकाले। सदा वासियो आतमा तेण का

ले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करी नें । दियें देशना जव्य ने हित धरी ने ॥ सदा आठ महापाडिहेरें समेता ॥ सुरे सें नरे से स्तव्या ब्रम्ह पूना ॥ ४ ॥ कस्याघातिया कर्म च्यारे अलग्गा । जवो पग्रही च्यार छे जे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याण के सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामें ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत पद पूजा करो । निज २ सक्ति प्रमाण ॥

॥ ढाल ॥

तीजे जव विधि सों करी । वीसस्थानक तप करिनें रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियो । समकित सुधमन धरिने रे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नितवदिये करम कठिन जिमछंडिये रे अ० ॥ जनम कल्याणकनें दिने । नारकीसुखियाथावें रे। मतिश्रुत अवधिविराजता। जसुउपमकोई नावे रे अ० ॥ २ ॥ दीक्षालीधी सुजमनें । मनपर्यव आदरियो रे ॥ तपकरि

कर्मखपायनें। ततखिणकेवल वरियोरे अ० ३ चोतिस अतिसय सोभता । वांणीगुण पें तीसोरे ॥ अठदस दोष रहितथई । पूरेंसंघ जगीसो रे अ० ॥ ४ ॥ मनतन वयण लगा यनें । अरिहंत पद आराधै रे ॥ तेनरानिश्च यथीसही । अरिहंतपदवी साधें रे अ० ५

॥ श्लोक ॥

अथाष्ट दलमध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्भूतो लसद्बोधा नावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेषदोषें धनधूमकेतू। नपार संसार समुद्रसेतून् ॥ यजेसमस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिना नंबुजकर्णिकायां २ ॐह्रींअर्हद्भ्यो नमः ॥ इति अरिहंत पूजा ॥

॥ अथ सिद्ध पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धनी कीजे दिल खुसियाल असुभ कर्म दूरें टलें फलें मनोरथ माल ॥ १ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं। करी आठकर्मक्षयें पार पाम्या जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या । निरावर्ण आत्म स्वरूपें प्रसिद्धा । थया पा

रपामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभागो न देहा
वगाहात्म प्रदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णा
दि लेशा । सदानंत सौख्या श्रिता ज्योति
रूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥

॥ ढाल ॥

सकल करमनों क्षय करी । सिद्ध अव
स्था पाई रे गुण इगतीस विराजता । उपम
जस नहि काई रे ॥ ६ ॥ मनसुध सिद्धपद
वंदिये क० आं० । जनममरण दुख नीगम्या
शुद्धातम चिदरूपी रे । अनंतचतुष्टय धारता
अव्याबाध अरूपी रे म० ॥ ७ ॥ जास ध्या
न जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे । भव २
सच्या जीवको । कठिन करम ते कापें रे ॥
म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरता सिद्धनो पूजंतां
मन रागे रे । अविचल पदवी पाईये । कह्यो
जिनवर वड भागें रे म० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

तस्यपूर्व दलेसिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणा
त्मकान् ॥ निः श्रेयस पदप्राप्तान् । निदधे
र्भक्तिनिर्भर ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परित. प्रण
ष्ट । दुष्टाष्टकर्मा नधिगम्यशुद्धिं ॥ प्राप्तान्नरा

न् सिद्धि मनंतबोधान् । सिद्धान्यजे शांति
करान्नराणां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ सिद्धेभ्यो नमः ॥
॥ इति सिद्ध पूजा ॥

॥ अथ आचार्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिवआचारिज पदतणी । पूजा करो विशे
ष ॥ मोह तिमिर दूरें हरै । सूझै भाव अशेष

॥ छंद ॥

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं । नमोनमो सू
रिसमप्पहाणं । नमोसूरिराजा सदातत्वताजा
जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्यभाजा । षट्वर्गव
र्गितगुणे शोभमाना । पंचाचारनें पालवें सा
वधाना । भविप्राणिनें देशनादेशकालें । स
दा अप्रमत्ता यथासूत्रआलें । जिके शासना
धारादिग्दंतिकल्पा । जगत्ते चिरंजीव जोशु
द्धजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

गुणछत्तीसे दीपता । पालै पंचआचारोरे ॥
जिनमारग साचोकहै ॥ युगप्रधान जयकारो

रे । आचारिज पदवदीये क० । सारण वारण चोयणा । पडिचोयण चौसिद्धा रे । भव्यजीव समझायवा । देवाने ते दद्धा रे आ० ॥ १ ॥ जिनवर सूरिज आथम्यां । परतिख दीपक जे हारे । सकल भाव परगट करें । ज्ञानमयी ज सु देहा रे आ० ॥ २ ॥ विधिसु पूजा साचवें ध्यावे निज हित जाणी रे । पावे लघुतर का लमां आचारिज पद प्राणी रे आ० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

स्थापयामि तत. सूरीन् दक्षिणेस्मिन् दले मले चरत. पंचधाचारं षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्यु तान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचाररतां न्नवसारा नाचारयतः स्वपरान्यथेष्ठ उग्रोपसर्गैक नि वारणार्थं मन्यर्चयाम्यक्षतगधधूपैः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ सूरिभ्योनमः ॥ इति आचार्य पद पूजा ॥

॥ अथ उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुंदर सोभित गात्र ॥ उवझायापद अरचिये । अनुभव रस नो पात्र ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

सुत्तत्थविथ्थारण तप्परांणं । नमो नमो वायग कुंजराणं । नहीसूरि पिणसूरिगुणनें सुहाया । नमुं वाचकात्यक्त मद मोहमाया । वलीद्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधाने निरुद्धाभिमाने । धरै पंचनें वर्गवर्गित गुणौघाः प्रवादी द्विपोच्छेदनेतुल्यसिंहा । गुणी गच्छ संधारणे स्तंभभूता । उपाध्याय तेवंदिये चित् प्रभूता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादशांगी वांणी वदें । सूत्र अरथ विस्तारै रे । पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुप्ति नित धारै रे ॥ १ ॥ श्रीउवफाया वंदीयें क० आं० ॥ दायक आगम चावना । भेदभावयुत सारी रे । मूरखकुं पंडित करै । जगतजंतु हित कारी रे ॥ २ ॥ शीतल चंद किरण समी वांणी जेहनी कहियें रे । तेउवफाया पूजतां । अविचल सुखडा लहीयें रे श्री० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

द्वादशांग श्रुता धारान् । शास्त्राध्ययन तत्परान् ॥ निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे

पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राणय निशंप्र
शांत्पै । पठतिये न्यानपिपाठयति ॥ अध्या
पकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता न्पवित्रान्परि
पूजयामि ॥ २ ॥ ॐह्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ।
॥ इति उपाध्याय पूजा ४ ॥

॥ अथ साधु पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनभणी । सावधानथया
जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां । निरमलथायें
देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

साहूण संसाहिय सजमाणं । नमो नमो
सुद्ध दयादमाणं ॥ करैसेवना सूरिवायग गणीं
नी । करू वर्णना तेहनीसी मुणीनी । समेता
सदा पचसमितित्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नही का
मभोगेपुलिप्ता । वलीवाह्य अभ्यंतरें ग्रंथि
टाली । थयेमुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ।
सुभाष्टांग योगै रमै चित्तवाली । नमुसाधुने ते
ह निज पापटाली ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सकलविषय विषवारनें। आतमध्यानेंरा तारे। उपशम रसमांझीलता। निजगुणशानें माता रे ॥ १ ॥ हित धरि मुनिपद वंदिये क० आं०। रतनत्रयी आराधतां। षट्काया प्रतिपालै रे। पंचेंद्री जीपें सदा। जिन मारग उजवालै रे हि० ॥ २ ॥ गुण सत्ता वीस अलंकस्या। पंच महाव्रत धारी रे। द्वादशविध तपआदरै। चिदानंद सुखकारी रे हि० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रम्हचरिज धरै। करम महा भट जीत्या रे। एहवामुनि ध्यावें सदा। तेनरजगत विदीता रे हि० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान्। शुभ्रध्यानैक मानसान् ॥ उदक्पत्रगतान्नित्यं साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं। सत्यंतपोद्वादशधाशारी रे येषामुदक्पत्रगतान् पवित्रान्। साधून् सदातान् परिपूजयामि २ ॥ ॐह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः ॥ इति साधु पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शन पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर ज्ञाषित शुद्धनय। तत्वतणी पर तीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा । आदरिये शु ज्ञरीत ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स । नमोनमो नि म्मलदसणस्स ॥ विपर्यासहो वासनारूप मि थ्या । टले जे अनादी अछे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते ज्ञवें सहजथी शुद्ध ध्यानं । कहिये दर्शनं तेह परम निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञा न मज्ञानरूप। चरित्रं विचित्रं ज्ञवारण्य कूपं प्रकृति सात उपशमक्षये तेहहोवें । तिहांआ परूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सुगुरू सुदेव सुधर्मनी सरदहणा चित ध रियें रे । सात प्रकृतिनो क्षय करी। क्षायक समकित वरियें रे ॥ १ ॥ दंरसण पद नित वदीये क० आं० । इण विन ज्ञान निफल कह्यो । चारित निफल जायें रे । सिव सुख जे विण नां मिलें । बद्ध संसारी थाये रे॥ द० ॥ २ ॥ सतसठि ज्ञेदें सोज्ञतो । अज

रामर फल दातारे । जे नर पूजै भाव सुं ते पामें सुख सातारे द० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

जिनेंद्रोक्त मतं श्रद्धा लक्षणं दर्शनं यजे मिथ्यात्व मथनं शुद्धं । न्यस्त मीशान सद्द ले ॥ १ ॐह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति दर्शन पद पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि । आराधीजे शुभ मनें । दिन दिन अधिक उछाहि ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

अन्नाण संमोह तमो हरस्स । नमो नमो नाण दिवायरस्स । जयें जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरणनासे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणिए वस्तु षड्द्रव्य भावा । नहोवें वितत्था निजेछा स्वभावा ॥ जवें पंच मत्यादि सुज्ञान भेदैं । गुरू पास थी योग्य तातेन वेदैं ॥ वलीज्ञेय हेयाउपादेय रूपें ।

लहे चित्तमां जेम ध्वात प्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

नक्ष अनक्ष विचारणा पेय अपेय निर धारो रे । कृत्य अकृत्य ने जांणिये ज्ञान महा जयकारो रे ॥ १ ॥ ज्ञान निरंतर वंदिये क० । ञां० ॥ ज्ञान विना जयणानही । जयणा विन नहि धर्मा रे । धर्म विना शिव सुख नही । तेविण नमिटैन्नर्मा रे ज्ञा० ॥ १ ॥ पां चप्रकारक्षे जेहना । नेदइकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजेंसदा । तेलहे केवलखासेरे ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

अत्रोपद्व्यपर्याय । रूपमेवा वन्नासकं ॥ ज्ञानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हितावहं १ ॥ इतिज्ञान पद पूजा ७ ॥

॥ अथ चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्रनो । पूजोधरी उमेद ॥ पूजत अनुनव रसमिलें । पातिक होयउच्चेद

॥ छंद ॥

आराहिया खंक्रिय सक्कियस्स । नमो २ सं

यमवीरियस्स । ज्ञानफल तेहधरियें सुरंगे । निरायंसता द्वार रोधेंप्रसंगें । नवांनोधि सं तारणे यानतुल्यं । धरुंतेहचारित्र अप्राप्तमूल्यं । हुवें जास महिमा थकी रंकराजा । वली द्वादशांगी नणीहोय ताजा । वली पाप रूपोपिनिः पापथायें । थईसिद्ध तेकर्मनोपार पायें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सर्वविरतिनें देशविरतिथी । अणागार सागारी रे । जयवंतो थावोसदा । तेचारित्र गुणधारी रे ॥ १ ॥ चारित्रपद नितवंदीये क० आं० । षटखंड सुखतजिआदरे । संयमशिव सुखदाई रे । सत्तरिनेदैं जिनकह्यो । तेआदरियेंनाई रे चा० ॥ २ ॥ तत्वरमण तसुमूलछे । सकलआस्त्रवनो त्यागी रे । विधिसेती पूजनक रे । नावधरी वडनागी रे चा० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सामायिकादित्नि भेंदै । श्चारित्रं चारुपंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं पत्रे हिनैर्क्तते क्रमात् ॥ १ ॥ ॐह्रींसम्य ग्चारित्राय नमः ८ ॥ इति चारित्र पद पूजा

॥ अथ तपपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्मकाष्ठ प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते तपपद पूजोसदा । निरमल धरियेध्यान ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

कम्मदुमुन् मूलन कुजरस्स । नमो ऽति छतवो जरस्स । त्रिकालिक पणें कर्म कपाय टाले । निकाचित पणे वांधिया तेहवालें । कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यंतर दुभेदें । क्षमा युक्ति निर्हेतु दुर्ध्यान वेदें । ऊवें जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि । अवांछ कपणे कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तपजे महानद हेतें । ऊवें सिद्धि सीमंतिनी निज सं केतै

॥ ढाल ॥

निज इच्छा अवरोधीये । तेहिज तप जिन नाख्योरे । वाह्य अभ्यंतर भेदथी द्वादश भेद दाख्योरे ॥ १ ॥ अनुपम तप पद वंदीये क० । आं० । तदभव मोक्ष गामीपणो । जाणें पिण जिनरायारे । तप कीधा अति आकरा । कुत्सित करम खपायारे अ० ॥ २

करम निकाचित क्षय जावें । ते तप नें पर
नावें रे । लवधि अठावीस ऊपजे । अष्ट म
हा सिध पावें रे अ० ॥ ३ ॥ एहवो तप
पद ध्यावतां । पूजंतां चित चाहैरे । अक्षय
गति निर्मल लहै । सब योगिंद सराहैरे ॥
अ० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

द्विधा द्वादशधा भिन्नं । पूते पत्रे तप
श्चयं निस्थापयामि भक्त्यात्र । वायव्यांदि
शिशर्मदं ॥ १ ॥ ॐह्रीं सम्यक् तपसे नमः ।

॥ इति तप पद पूजा ॥

॥ अथ कलश ॥

इम नव पद ध्यावे । परम आनंद पावे
नव भव शिव जावे । देव नर भव पावे ।
ज्ञान विमल गुण गावे । सिद्ध चक्र प्रभावे ।
सब दुरित समावे । विश्व जयकार पावे ॥

॥ अथ तवन उपरको कलश ॥

अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय साधु
दंसण नाणए । चारित्र तप नवपद थकी
इहां सिद्ध चक्र प्रमाणए । श्रीपाल राजा सु

क ताजा लह्या सिद्धचक्र ध्यानसों । नवि जन नजो जिन लाज्ञ जांणी । हिये आंणी ना वसों ॥ १ ॥ इय नवपय सिद्धिं । लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडिय सर वग्ग । ह्रींति रेहा समग्गं । दिसिवइ सुर सारं । खोणि पीढा वयारं तिजय विजय चक्कं । सिद्ध चक्कं नमामि ॥ १ ॥ निः स्वेदत्वादि दिव्यातिशय मय तनून् । श्री जिनेंद्रा न्सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टा ष्टगुण गणनृदा चार सारांश्च सूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्या दिसंत स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यति पति सहिता नर्च्चयाम्य ध्यंदानैः ॥ १ ॥ इत्य मष्टदलं पद्मं पूरये दर्हदादिन्नि. स्वाहांते प्रणवाद्यै श्च पदै र्विघ्ननिवृत्तये॥ २ ॥ ॐह्रीं पंच परमेष्ठिने सम्य ग्ज्ञानादि चतु रन्वितेन्यो नम. ॥ इति श्री नवपदस्तुतिः ॥ सिद्धचक्र तप महिमा वर्णनम् ॥

॥ इति लघु नवपद पूजा ॥



॥ अथ आरती ॥

ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम ग
त ज्ञासय सुख पावो ॥ आं० ॥ धुरथी अरि
हंतपद ध्याईजै थिरता यें श्रीसिद्ध थुणीजे ।
॥ १ ॥ आचारज तीजे आराधो । सूधै मन
निज कारिज साधो ए० ॥ २ ॥ उवझाया
पंचम अणगारा प्रणमंतां पामें भवपारा ।
३ ॥ दंसण नाण चरण भलदीपें । तप तप
तां कर्मअरिनें जीपें ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद
प्राणी नित थुणतां । गिरवा नरभव सफल
गिणंता ए० ॥ ५ ॥ सिद्ध चक्रनी कीजे सेवा
मनबंछित लहिये नितमेवा ए० ॥ ६ ॥ अ
जर अमर सुखदायक साचो । रूडै मनसे नि
तप्रति राचो ए० ॥ ७ ॥ इति आरती ॥

॥ अथ विंशति स्थानक पूजा ॥



॥ दोहा ॥

सुखसंपति दायकसदा । जगनायक जिन चंद ॥ विघनहरण मंगलकरण । नमो नाभि नृपनंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासिका । जिनवाणी चितधार ॥ विंशतिपद पूजनतणो । कहिस्यूं विधि विस्तार ॥ २ ॥ जिनवर अंगें भाषिया । तपजप विविधप्रकार ॥ विंशति पद तपसारिखो । अवर न कोइ उदार ॥ ३ ॥ दानशील तपजप किया । भावविना फलहीन जैसें भोजन लवण विन । नहीसरस गुणपीन ४ ॥ जेभवियण सेवेंसदा । भावें स्थानकवीस तेतीर्थंकर पदलहै । वंदै सुरनरईश ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

श्री अरिहंत पद १ सिधपद २ ध्यावो प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो ॥ स्थविरपं चमपद ५ पुनरुवझाया ६ । तपसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनभाया ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

मनभाव विनया १० वत्रपका ११ मल । शील १२ किरिया १३ जानिये ॥ तप १४ विविध शुभम पात्र १५ थेया । अत्र १६ समाधि १७

वखानिये ॥ हितकर अपूरव नाण संग्रह१८ ध
रो मन सुजगीसए ॥ श्रुतिभक्ति१९ फुनि तीर्थ
प्रभावन २० एह थानक वीसए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

एथानकवीश जग जयकारा। जपतांलही
ये जिनपदसारा ॥ करम निकंदै बीश बावीसै
भाष्या जग तारक जगदीसैं ॥

॥ उल्लालो ॥

जगदीस प्रथम जिणंद। जगगुरु चरमजि
नवरजीमुदा। भवतीसरैं पद सकल सेवी २०
लही जिनपति संपदा। बावीस जिनवर२२
सकल सुखकर। इंद्रजसु गुनगाइये। इग१
दोय २ त्रिण ३ सऊ २० पद जपीनें। तीर्थप
ति पदपाइये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक पदसदा। भजिये तपकरि
गुरु ॥ अतिनिर्मल शुभयोगता। करिकेतसु
गुणलुरु ॥ १ ॥ विमल पीठत्रिक तदुपरें।
ठविये जिनवर वीस ॥ पूजन उपग्रण मेलक
रि। अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक२ए पद
तणो। द्रव्यपूज परकार ॥ पंच ५ अष्ट ८ वि

धजानिये। सत्तर १७ इगविस २१ सार ॥ ३ ॥ अष्ट ८ जातिना कलश करि। विमलजलैं नर पूर ॥ पूजो भवियण सज्ज २० मुदा। होय सकल दुख दूर ॥ ४ ॥ सोहै सज्ज परमेष्ठि मैं जिनवरपद अभिराम ॥ वेद ४ निक्षेपें सम रिये। वधते शुभप रिणाम ॥ ५ ॥

॥ रागदेशाख। पूर्वमुखसावनं एचाल॥

सकलजगनायकं। परमपददायकं। लाय क जिनपदं विमलभानं। चतुरधिकतीस ३४ अतिशय अमलबार १२ गुण। वचन पणतीस ३५ गुणमणिनिधानं ॥ १ ॥ सुखकरण जिन चरण पद्मसेवित सदा। भमर सुर असुर नर हृदयहारी। एहजिनवरतणी आण पूरणसदा दामजिम जगतजन शिरसि धारी अईयो ॥ २ जिनपपददरशपारसफरशतेभवें। प्रगटनिज रूप परिणति विभासं। तजिय वहिरात्म गि रिसारता भविलहै। अनुपम आत्म कांचन प्रकाशं ॥ ३ ॥ भवड जिनराज पद जाप रवि किरण तै। तुरत वज्ञ दुरित भर तिमि र नाशं। घन चिदानंद वरकंदघन भवि

लहैं। तीर्थंकरचरण कमलाविलास ॥ ४ ॥ वर बिबुध मणि लही काच लघु स्राकल कों। ग्र हण करिवा कवण कर पसारे। तिम लहीजि न चरण स्रारण सुन्न योग सें॥ स्रवर सुरसरण कुण हृदय धारै ॥ ५ ॥ प्रनु तणैं पंच कल्या केरे दिनैं। प्रगट तिन्न लोकमें न्नइ उजेरो। नविक देव पाल श्रेणिक प्रमुख जिन नमी बांधियो गोत्र जिनराज केरो ॥ ६ ॥ जेह त्रिण काल नित नमैं जिन हरखसुं। तेह न व जल तिरे जनम तीजें। स्रधिक नव य दि करे। तदपि निश्चय करी ॥ सप्त ७ वलि स्रष्ट नव करीय सीझै॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

णमो णंतविन्नाण सद्दंसणाणं। सयाणंदि या सेस जंतू गणाणं। नवं नोज विच्चेयणे वारणाणं। णमो वोहियाणं वराणं जिणाणं ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्यो नमः ॥

॥ इति प्रथमपदे श्रीजिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तनु त्रिन्नाग के घटन ते ॥ घन स्रवगा हन जास। विमल नाण दंसण कियो। लो

कालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनासी अप्रमित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । नमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ कुंदकिरणशशिऊजलोरेदेवा ॥

अनुभव परमानंदसु रे वाला । परमातम पद वंदो रे । करम निकंदो बंदिनें रे वा० । लहि जिनपद चिरनंदो रे ॥ १ ॥ गगन पए भ्रातर बली रे वा० । समयातर अणफरसी रे द्रव्य सगुण परजायना रे वाला । एकसमय विध दरसी रे ॥ २ ॥ एक समय ऋजु गति करी रे वाला । भए परमपद रामी रे । भांजै सादि अनंत रे वा० । निरुपाधिक सुख धामी रे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरी रे वाला । सिद्ध सकल सुख कारी रे । विमल चिदानंद घन थया रे वाला । वर इकतीस गुण धारी रे ॥ ४ ॥ उतपन्नता वलि विगमता रे बाला ध्रुवता ३ त्रिपदी सगें रे । प्रभु मैं अनंत चतुष्कता रे वाला । सोहें आमकृम भगें रे ॥ ५ ॥ पनर १५ भेद ए सिद्ध थया रे वाला । सह जानंद स्वरूपी रे । परम ज्योति मैं परिण

म्यारे वाला । अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥
जिनवर पिणप्रणमैं सदारे वाला । एहनें दीक्षा
अवसरें रे । तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वा
ला । कंठे धरिये सुपरैं रे ॥ ७ ॥ हस्ति पा
ल नवि नगतिसुं रे वाला । सिद्ध परम पद
नजिनें रे । पद श्री जिन हरखे लह्यो रे वा
ला । पर गुण परणति तजिनें रे ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥

लोगग्गनागोपरि संठियाणं । बुद्धाणसिद्धा
ण मणिंदियाणं । निस्सेस कम्मक्खय कारगा
णं । णमो सया मंगल धारगाणं ॥ १ ॥ नुँह्रीँ
श्री सिद्धेन्यो नमः ॥

॥ इति द्वितीय पदे श्रीसिद्ध पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पदतृतीय प्रवचन नमो । ज्युंनन्नमो संसा
र ॥ गमो कुमति परिणमनता । दमो करण
नयकार ॥ १ ॥ जैसे जलधर वृष्टि तें । अखि
ल फलद विकसाय ॥ तैसें प्रवचन नक्तितें । गु
न्न परिणति उलसाय ॥ २ ॥

॥ श्रीराग जिनगुणगानंश्रुतअमृतं एचालमैं ॥

प्रवचन ध्यानं सुखकरण। परिहरिये सञ्ज विषय विकारं । करिये प्रवचन आचरण प्र० १ ॥ सप्त ७ नगिन्नूपित एप्रवचन। स्यादवाद मुद्रान्नरणं । सप्त नयात्मक गुणमणि आगर । बोधवीज उतपति करणं प्र० ॥ २ ॥ जैसें अमृत पानकरणते । जवें सकलविप संहरण। तैसें प्रवचन अमृतपानें । कुमति हलाहल प्रविसरणं प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनकों आधे यकहीये । सकलसंघ तसु अधिकरण । तिण एसंघ चतुरविध प्रवचन । एपद अखिल कलुषहरण प्र० ॥ ४ ॥ यदि नविजन तुमएचाहतुहे । मुगति रमणि जन वञ्य करणं । करण तीनइक करि तद करिये । प्रवचन पदसमरण धरणं प्र० ॥ ५ ॥ जिनवरजी पिण एतीरथने । प्रणमें मध्य समवसरण। नवजल तारण तरणि समानं । ए तीरथ अञ्चारण ञ्चारण प्र० ॥ ६ ॥ जिमनरतेसर संघनगति करि । लहियो पुण्यफला चरण । चक्रीपद अनुन्नवि वलि शिवपद । लीध करिय क्रम निर्जरणं प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संनवजिन हरषेंकरि आराधी प्रवचन चरणं । करम निकंद थया

जगदीसर जिनप रमाउर आन्नरणं प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स । दुरकंधया सग्ग दिवा यरस्स ॥ अणंतजीवाण दयागिहस्स । णमो णमो संघचउव्विहस्स ॥ १ ॥ नुँह्रीँश्रीप्र वचनाय नमः ॥ इति तृतीयपदे श्रीप्रवचन पूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पदचतुर्थ नमियेसदा । सूरीसर महाराज सोहम जंबू सारिसा । सकल साधु सिरताज १ ॥ सारण वारण चोयणा । पडिचोयण कर तार ॥ प्रवचनकज विकसायवा । सहस कि रण अवतार ॥ २ ॥

॥ राग रामगिरी गात्र लूहैं ॥

आचारिज पद ध्याइयेरे वाला । तासवि मल गुण गाइये ॥ पाइये हांहोरे वाला पाइये जिनपति पद जगत्रिर तिलो रे आ० ॥ १ ॥ जिन शासन उजुवालतारे वाला । सकलजी व प्रतिपाल तां ॥ पालतां हां० ॥ चरण क रण मगचाल तां आ० ॥ २ ॥ सूरी सकल गुण सोहता रे वाला । सुरनर जन मनमोह

ता। मोहता हां० ॥ नवियण नें पमिबोह ता श्रा० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराजिता रे वाला स जलजलद जिम गाजता ॥ गाजता हांहो० सूरि सकल सिर ठाजता श्रा० ॥ ४ ॥ उप देशामृत वरसतारे वाला। दुरित तापसञ्ज निरसिता ॥ निर० हांहो० ॥ परमातम पद फरसता श्रा० ॥ ५ ॥ धरम धुरंधरता धरा रे वा० जग बांधव जग हितकराहि० हांहो स्वपर समय विउ गणधरा श्रा० ॥ ६ ॥ प द श्रीजिन हरषे ग्रह्योरे वाला सूरीसर पद तप वह्यो ॥ त० हांहो० ॥ पुरुषोत्तम नृप शिवलह्यो ॥ श्रा० ॥

॥ काव्य ॥

कुवादि केली तरु सिंधुराणं। सूरीसराणं मुनिवधुराणं ॥ धीरत्तसतजिय मंदराणं। ण मो सया मगलमंदिराणं ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्रीआ चार्येभ्योनमः ॥ ४ चतुर्थपदे आचार्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्विविध थविर जिनवर कह्या ॥ द्रव्य नाव परकार। लौकिक लोकोत्तर वली। सु नियें नेद विचार ॥ १ ॥ जनका दिक लौकि

क थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचम पद में जानिये। द्वितीय थविर अधिकार ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥

नित नमिये थविर मुनी सरा । पंचमहाव्रत धारक वारक । कुमति जगत जन हित करा नि० ॥ १ ॥ संयमयोगें सीदत बालक ग्लाना दिक सङ्क मुनिवरा। एहनें उचित सहाय दियणते । वारे एहनां दुखन्नरा नि० ॥ २ ॥ पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थविरा । वीस रु साठ समोपरा । वयधर समवया धिक पाठक । एह थविर गुण आगरा नि० ॥ ३ ॥ तीजे अंग कह्या दस थविरा । रत्न त्रयीनां गुण धरा । ते इह निर्मल न्नाव ग्रहिवा न्नविक सरोज दिवाकरा नि० ॥ ४ ॥ क्षीरजलधिसम अतिहि गन्नीरा । सुरगिरि गुरु धीरज धरा । शरणागत तारणता धारा । ज्ञान विमल जल सागरा नि० ॥ ५ ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान धरणतें । द्रव्यादिक ज्ञाता वरा । तेह स्वरूप रमण कह्या थविरा। नहीय धवल केशांकुरा नि० ॥ ६ ॥ एह थविर पद सेवी न्नगतें । पदमोत्तर वसुधेसरा। पद

श्री जिन हरखे तिण लहियो । मुनिवर कुमुद निसाकरा नि० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

सम्मत्तसयम पतित नविजन । अतिहि थिर करता नला । अवगुण अदूषित गुण विनूषित । चंद्र किरण समुज्जला । अष्टाधि कादश सहस शीलांग । रथ रुचिर धारा धरा नव सिंधु तारण प्रवर कारण । नमो थविर मुनीसरा ॥ ८ ॐह्रींश्री स्थविराय नमः ॥

॥ इति पचमपदे स्थविर पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रवरनाण दरसण चरण धारक यतिध्रम सार ॥ समितिपच त्रिण गुपत्तिधर । निरुपम धीरज धार ॥ १ ॥ चरण कमल जेहनां नमें अहनिशि सुरनर राय ॥ जमतागिरि दारण कुलिश । जय जय सिरि उवझाय ॥ २ ॥

॥ राग नैरव पचवरणी अंगीरचो० एचाल ॥

नावधरि उवझाया वंदो विजयकारी । श्री उवझाय परमपद वंदी । लहो जिनपद अतिशय धारी ना० ॥ १ ॥ कुमती मदतरु

भंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी ॥ अंग दुबालस भणै भणावें । शिष्य भणी चितहित धारी भा० ॥ २ ॥ सकल सूत्र उपदेश दियण तैं वाचक श्रुति विमलाचारी ॥ भव तीजैं अमृत सुख पावें । सुर असुरेंद्र मनोहारी भा० ॥ ३ ॥ हय गय वृष पंचानन सरिखा । करमकंद वरतर वारी । वासुदेव वासव नृप दिनकर । विधु भंडारि तुलाधारी भा० ॥ ४ ॥ जंबू सीता नदि कांचन गिरि । चरमजलधि उपम भारी । एउपम बहुश्रुतनी जाणों उतराध्ययनें कही सारी भा० ॥ ५ ॥ अमल पंचविंशति गुण मणि निधि सकल भुवन जन उपगारी । संशय तिमिर हरण वासर मणि । पाप ताप आतप वारी भा० ॥ ६ ॥ प्रवर संख पय भरियो सोहै । तिमए ज्ञान चरण चारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । लहियो जिन पद विजितारी भा० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सद्बोहि बीजं कुर कारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुबोहि दंती हरिणेसरा

ण । विग्घोघ सताव पयो हराणं ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ इति षष्ठ
पदे उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जाणें जिनवाणी सरस । स्याद वाद गुण
वंत ॥ मुनि कहिये शिव पंथनें । साधैं साधु
कहंत ॥ १ ॥ समता रस जल झीलता । चि
सदानंद सुरूप ॥ तिण पाम्यो पद सप्तमें ।
नमो नमो मुनि नूप ॥ २ ॥

॥ राग गुड मिश्रित नीममल्हार मेघबरसे ॥
॥ नरी पुष्प बादल करी एचाल ॥

———o———

नक्ति धरि सातमें पद नजो मुनिवरा ।
सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा ॥ गुण स
तावीस नूपण करी सोनिता । शोनिता वि
कट कम सुनट सारा न० ॥ १ ॥ चरण सत्त
रि परम करण सत्तरि धरा । शिव करण
नाण किरिया प्रधाना ॥ प्रति दिने दोष आ
हारना वरजिता । सप्त ७ चालीस ४० यति
धृम निधाना न० ॥ २ ॥ मदन मद नंजता
कुमति जन गंजता । नक्त जन रंजता शांति

भरिया ॥ सुमत धरिया सदा चरण परिया जना । तारिया ज्ञान गंभीर दरिया भ० ॥ ३ ॥ तृणमणी सम गिणें चतुर विध धर्मना परम उपदेश दायक उदारा ॥ बहिरभ्यंतर भिदा वार विध शुति कठिन । तपतपें सकल जीउ अभयकारा भ० ॥ ४ ॥ वलि शुठा वीस मनहरण गुण लबधि निधि । सातमें छठ गुण ठाण वसिया । सप्त भय वारका प्रवरजिन आगन्या । धारका स्वगुण परिण मनरसिया भ० ॥ ५ ॥ पंच परमाद कल्लोल ता कुल महा । पार संसार सागर जिहाजा त्रिविध नव वाडि युत शील व्रत के धरा मधुर निज वाणि रंजित समाजा भ० ॥ ६ ॥ कोडि नव सहस थुणियें महामुनि वरा । वी रभद्र जिम करिय साधु सेवा ॥ परम पद जिन हर्षसुं ग्रह्योतसु तणा । चरण कजयुग नमें सकल देवा भ० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

संतज्जिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गिहाणं ॥ सन्नाण पज्जायतरू वणाणं । नमो नमो होय तवोधणाणं ॥ ८ ॥

ॐह्रीँ श्री सर्व साधुभ्यो नमः ॥ इति सप्तम पदे श्री साधु पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विमल नाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकास ॥ जीत लही निज तेज से । जिण अनंत रविन्नास ॥ १ ॥ सकल संशय तम अपहरे । जय २ नाण दिणंद ॥ नाण चरण समरण थकी विलय होय दुख दंद ॥

॥ राग घाटो मेरो मन वस करलीनो ॥

॥ जिनवर प्रभु पास एचाल ॥

———o———

नावें ज्ञान वंदन करिये । शिव सुख तरु कंद ॥ जिन चन्द्र पद गुण धरिये वरिये परम आनद ना० ॥ १ ॥ मतिनाण १ श्रुत २ पुनरवधि ३ मन परजय जाण ४ ना० । लोकालोक नाव प्रकासी । वर केवल नाण ५ ना० ॥ २ ॥ पच ५ ए इकावन ५१ नेदें । कह्यो जिनवर नान ॥ जग जीव जमता छेदें ज्ञानामृत रस पान ना० ॥ ३ ॥ विन ज्ञान धीकी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ नक्षानक्ष प्रगट ये करिये । जिम पय जल

हंस भ्रा० ॥ ४ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया करी फल दातार ॥ ऊवो ज्ञान चरण रसी ला । लहो भव जल पार भ्रा० ॥ ५ ॥ ज्ञाना नंद अमृत पीधो । * भरतेसरराय ॥ तिणसे अमृत पद लीधो । सुरपति गुण गाय भ्रा० ६ ॥ सेवी ज्ञान जयत नरेसैं । भये जिन महाराज ॥ सोहें ज्ञान ये त्रिभुवन में । स ऊ गुण सिरताज भ्रा० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

बद्दव्व पज्जाय गुणुक्करस्स । सया पयासी करणो धुरस्स ॥ मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रीँ श्री ज्ञानाय नमः ॥ इति अष्टम पदे श्री ज्ञान पूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

दरशण आश्रय धर्मनों । एहना षटउप मान ॥ दरशण विणनहि चरणचिद । उतरा ध्ययनें जान ॥ १ ॥ जिन दरसण फरस्यो भलो । अंतर मुहुरत मान ॥ अर्द्धपुगल परि यट रहें । तसु संसार वितान ॥ २ ॥

* मरुदेवीमाय ॥ इत्यपिपाठः ॥

॥ राग कामोद चंपक केतक मालती एचाल ॥

जिनदरसण मुफमनवस्योए । ञ्इयामन वस्योए । उपजत परमञ्चानंद । जिनदरसण दरसणदिये । विमल नाण तरुकंद ॥ १ ॥ दरसण मोह रिपु जीतिया ए ञ० । अरि दरसण उलसंत । दरसण घट परगट थयां । नविय ण नव न नमंत ॥ २ ॥ जिनवर देव सुगुरु व्रतीए । केवलि कथित जिनधर्म । तीन तत्व परिणति रमें । ते दरसण करें शर्म ॥ ३ ॥ जिन प्रनु वचनो परिसदाए ञ० । थिर सरदहण धरत । इण लक्षण तै जानिये । समकित वंत महंत ॥ ४ ॥ इग १ दुग २ ति ३ चउ ४ ञार ५ दस १० विहाए । सतसठि ६७ नेदविचार । वलि पररीति/समकित नण्यो द्रव्य नाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्येंजिन दरञाण कह्यो ए । नावें समकित सार । द्रव्यत दरञाण नावतो । दरञाण कारण धार ॥ ६ ॥ द्रव्यदरसण यदिगतवलीए ञ० । तदपि उन्नर हित कार ञाव्य नव जिनदरसणें । पायो दरसण सार ७ ॥ दरसण विण किरियाहताए ञ० । अक विना

...म बिंदु । वलिहणियों विनचंद्रिका । वा
...में जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतो
... आ० । दरशण पद अभिराम । पद श्री
जिन ...षैं धस्यो ॥ बधते शुभ परिणाम । ८ ।

॥ काव्य ॥

...त विन्नाण सुकारणस्स । अणंत सं
सार वि...रणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंस
णस्स । ...नो २ निम्मल दंसणस्स ॥ १ ॥ ॐह्रीँ
श्री दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ इति नवम पदे
श्री दर्शन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विनय भुवन रंजन करै । विनयें जस वि
सतार ॥ विनय जीव भूषित करै । विनयें ज
य जय कार ॥ १ ॥ विनय मूल जिनधर्मनों ।
विनय ज्ञानतरु कंद ॥ विनय सकलगुण से
हरो । जय जय विनय सआंद ॥ २ ॥

॥ रागसामेरीपूजोरीमाईजिनवरअंगसुगंधैं ॥



ध्यावोरीमाई विनय दशम पद ध्यावो ।
पंच५भेद दस १० विध तेरस१३विध । बा
वन ५२ भेद गणेसै ॥ बासठि ६२ भेद कह्या

आगम में। विनयतणा सुविसेसें ध्या० ॥ १ ॥ तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघा ५ किरिया ६ धर्म ७ वरनाणा ८ ॥ नाणी ९ आचारिज १० मुनिथविरा ११ । पाठक १२ गणि१३गुणजाणा ध्या० ॥२॥ ए अरिहादिक तेरस १३ पदनो । विनय करैं जेभावें। ते तीर्थंकर पद अनुभविनें। अमृतपद सुखपावें ध्या० ॥ ३ ॥ जिम कंचन मैं मृदुगुण लाभैं। नहीय कालिमा पावें ॥ तिण ए सकल धातु मैं उत्तम । नाम कल्पाण कहावें ध्या० ॥ ४ ॥ तिम विनयी मैं वै मृदुता गुण कुमति कठिनता नासें । कृष्नादिक लेश्यानी मलिनता जाये विनय गुण भासे ध्या० ॥ ५ ॥ दोय सहस अरु अधिक चिऊत्तर। देववदन निरधारो । गुरु वदन विधि च्यार से बाणुं ४९२ भेद करी उरधारो ध्या० ॥ ६ ॥ तीर्थंकरादिकनो मन रंगें । विनय चरण शुभ ध्यायो॥ धन नामा भविजन शुभ योगें । पद जिन हर्षे पायो ध्या० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

आणंदया सेसजगज्जणस्स । कुदिंदु पादा

मलता चणस्स ॥ सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स णमोणमो सव्विणया लयस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रींश्री विनयाय नमः १० इति दशमपदे श्रीविन यपूजा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

इग्यारमपद नितनमुं । देशसरव चारित्र पंकमलिनता दूरकरि । चेतनकरे पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करें । रंकथकी सुरराय ॥ तीन जगतपति पददिये । जसु सुरनर गुण गाय ॥ २ ॥

॥ राग सारंग बावन चंदनघसिकुम० एचाल ॥

चरण सरण मुझमन हस्यो । सुखकरण ह रण घनपापए । हांहो रे वाला ॥ एहचरण ज लधरहरें । अज्ञान तरुणतर तापए हां० १ आठकषाय निवारतां । देशविरत प्रगटहुवें खासए हां० । चारकषाय निवारिया । सम विरत लहै गुण वास ए हां० ॥ २ ॥ इगवा सर सेव्यो थको । सुधसरव संवरचारित्रए हां० परमानंद घनपददिये । सुरलोक जनि तसुखचित्रए हां० ॥ ३ ॥ नवनय तरुगण

छेदिवा । ए संयम निसित कुठार ए हां० ॥ ज्ञान परंपर करण छै । अमृतपदनों हित कार ए हां० ॥ ४ ॥ चरण अनतर करण छै । निर वाण तणों निरधार ए हां० । सरव विरति सुध चरणसे पामें अरिहंत पद सार ए हां० ॥ ५ ॥ वरस चरण पर जायमे । अनुत्तर सुख अति क्रम होय ए हां० । सतर १७ भेद चारित्रना । कहिया जिन आगम जोय ए हां० । देश थी सम संयम विषे । उज्जलता अनंत गुण भाज ए हां० । अरुण देव सेवी चरणनें । भ ये जगगुरु जिन महाराजए हां० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महो दयानं द लयाजलस्स । विन्नाण पकेरुह काणणस्स णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री चारित्राय नमः ॥ ११ ॥

॥ इति एकादश पदे श्री चारित्र पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी । काम कलश अवधार । ब्रम्हचर्य इण सम कह्यो । कामि त फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिसियां र

जनि कर । सुर गण में सुरराय । तिम सङ्ख व्र
त शिर सेहरो । व्रम्ह चरिज कहिवाय ॥ २ ॥
॥ रागकाफी जंगला भला भनुगुण वाल्हाहो ॥

भवभयहरणा शिवसुखकरणा । सदाभजो
व्रम्हचाराहो भ० ॥ शीलविशुध तरुप्रतिपाल
नकों । कही जिनवर नववाराहो भ० ॥ १ ॥
दिव्यौदारिक करण करावण । अनुमति विष
य प्रकारा हो भ० ॥ त्रिकरणजोगें ये परिहरि
ये । भजिये भेद अढारा हो भ० ॥ २ ॥ कन
क कोडिनो दान दिये नित । कनक चैत्यकर
तारा हो भ० ॥ येहथी व्रम्हचरिज धारकनो ।
फल अगणित अवधाराहो भ० ॥ ३ ॥ सहसचो
रासी श्रवण दानफल । शम व्रम्हव्रतफल सारा
हो भ० ॥ विजयसेठ विजयासेठाणी । उभय
पक्ष व्रम्ह धारा हो भ० ॥ ४ ॥ भये सुदर्शन से
ठशीलसें । मुगतिवधू भरताराहो भ० ॥ सह
स अढार शीलांगरथ धारा । धार करो निस
तारा हो भ० ॥ ५ ॥ सिंहादिक वसुभय तरु
भंजन । सिंधुर मदमतवारा हो भ० ॥ कलह
कारि नारद रिषिसरिखे । तस्योभवजलधि अ

पारा हो ज० ॥ ६ ॥ पच्चरकाण विरति न
हि एहमें । येव्रम्हव्रत उपगाराहो ज० ॥ स
कल सुरासुर किन्नर नरवर । धरीय जगति
हितकाराहो ज० ॥ ७ ॥ व्रम्हचरिज व्रतधरन
रवरके । प्रणमेंचरण उदाराहो ज० ॥ दशमें
अगेजणियो नरवर्मा । नरपति गुण श्लाघा
राहो ज० ॥ ८ ॥ व्रम्हचरिजव्रत पाल लह्यो
पद । जिनहरपें० जयकारा हो ज० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

सग्गा पवग्गग्ग सुहपयस्स । सुनिम्मला
णंत गुणालयस्स ॥ सव्वुया भूसण भूसणस्स
णमोहि सीलस्स अदूसणस्स ॥ ९ ॥ ॐह्रींश्री
व्रम्हचर्याय नमः १२ इति द्वादशपदे श्रीव्र
म्हचर्य पूजा ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

करम निरजरा हेतु है । प्रवर क्रिया गुण
खाण ॥ जिनशासन नीस्थितिरही । किरिया
रूपें जाण॥ १ ॥ भवन मांहि किरियामही ।
सकल शुद्ध विवहार ॥ प्रवरनाण दरसण त
णो । शुभकिरिया सिणगार ॥ २ ॥
॥ राग मालवीगौडी सय अरतिमथन० धूपं ॥

शुभध्यान किरिया हृदय धरिनें। धर्म सकल उरधार रे ॥ आर्त्तरौद्रनी हेतुकिरिया। अशुभ पणवीस वार रे सु० ॥ १ ॥ ज्ञानवंत अशस्त्रभटहैं। क्रिया शस्त्र वतंसरे ॥ सुभटनाणी क्रियाशस्त्रै। करयकर्म अरिध्वंस रे सु० २ ज्ञान सेती वदें शिवयदि। तेरमें गुणठाणरे ॥ येकनाणें करि जिनेसर। किमु न लहैं निरवाणरे सु० ॥ ३ ॥ जिनप शैलेशीकरण करि। चउदमें गुणठाण रे ॥ सरस संबरचरण करणें लहें पद निरवाणरे सु० ॥ ४ ॥ ये अनंतर अमृतकारण। कह्यो जिनवर भाणरे ॥ सरवसंवरचरणकिरिया। नशिवइण विनुजाणरे सु० ५ ॥ येकनाणें इकक्रियामें। नशिव वितरण शक्ति रे ॥ कहें जिनवर उभय योगें। लहेंभविजन मुक्तिरे सु० ॥ ६ ॥ गरलमिश्रित सरसभोजन। अशुभ परिणति धाररे ॥ अमृत संयुत तेहभोजन। रुचिर परिणति कार रे सु० ७ ॥ ज्ञानसहता तेमकिरिया। करिकरें निसताररे ॥ ज्ञानविन किरियानदीयें। मनोमत फलसाररे सु० ॥ ८ ॥ ज्ञान परिणत रमीकिरिया। तेहकिरिया साररे ॥ भयोहरि वाहन

जिनेसर । शुद्धकिरियाधार रे सु० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥

विशुद्ध सद्धान विभूसणस्स । सुलद्धि संपत्तिसुपोसणस्स ॥ णमोसदाणंत गुणप्पदस्स णमोणमो सुक्किरिया पदस्स ॥ १० ॥ ॐह्रीं श्री क्रियायै नमः १३ इति त्रयोदशपदे श्री क्रिया पूजा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

शमतारस युत तपरुचिर । भणियो जिन जगभान ॥ शिवसुर सुख चंदनफलद । नंदनविपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन दहन । करनविमल तपजान ॥ विपिन धूम केतनसमो । जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥
॥ रागकल्याण तेरीपूजावनीतेरसमैंएचाल ॥

मेरीलगी लगन तपचरणें। सकल कुशल मैं प्रथम कुशल ए । दुरित निकाचित हरणे मे० ॥ १ ॥ जैसे गणधर की जिनचरणें। चातक की जल धरणे ॥ जैसे चक्रवाक की अरुणे । चकोर की हिम किरणे मे० ॥ २ ॥ जिनवर पिण तद्भव शिवजाणें। त्रिणचउना

ण सुकरणें मे० ॥ तदपि सुकोमल करण सर
णनें । ठवय कठिन तप करणें मे० ॥ ३ ॥
कपट सहित तपचरणधरणतें । वांछित फल
नवितरणैं मे० ॥ नितएदंत्र रहित तपपदके
सुरपति गणगुण वरणें मे० ॥ ४ ॥ पीठम
हापीठमुनि मल्लीजिन । पूरव त्रव तप सर
णैं मे० ॥ रहिया तदपि कपट नवि बंम्यो ।
त्रये स्त्रीगोत्रा चरणें मे० ॥ ५ ॥ दृढप्रहारी
पांझव घनकरमी । बंम्याकरमावरणें मे० ॥
तपसे ज्ञोत्रलही त्रिनुवनमें । केवल कमलात्र
रणें मे० ॥ ६ ॥ लाषइग्यारह असीहजारा ।
पंचसयस दिनखिरणें मे० ॥ मासखमण करि
नंदन मुनिवर । पाम्यों फलशिव घरणैं मे० ७
तपकरियो गुणरयण संवच्छर । खंधक श्राम
तादरणें मे० ॥ चनदसहस मुनिमैं कह्यो अ
धिको । धन्नोतप आचरणें मे० ॥ ८ ॥ बाहिर
ज्यंतरन्नेदें एतप । बारन्नेद अधिकरणें मे० ॥
वसनें कनककेतु पांम्यो पद । जिन हरषें त्र
वतरणें मे० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

लक्ष्मीसरोजा वलिता वणस्स । सरूव सं

लग्ग सुपावणस्स ॥ अमगलानो कुहदुद्दवस्स णमोणमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ ॐह्रीँ श्री तपसे नमः १४ इति चतुर्दश पदे श्री तप पूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न वलिसब जिन गणधर नमों । चवदैसें बाव न्न ॥ १ ॥ दानसकल जग वशकरें । दान हरें दुरितारि ॥ मनवांछित सब सुखदिये । दान धरम हितकारि ॥ २ ॥

॥ रागसोरठ तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभुमें ॥

पनरम पद गुणगाना होभवि पनरम० ॥ भावधरी करिये मनरगें । परम सुपात्रे दाना हो भवि पनरम० ॥ १ ॥ पात्रकह्या द्रव्य भाव दुभेदे । द्रव्यलछन एजानाहो भवि प० ॥ सर्वोत्तम उत्तमभवे भाजन । रतनकनक रूपाना होभवि प० ॥ २ ॥ मध्यम पात्रकही जे एहवा । ताम्र धातु निपजाना हो भवि प० पात्रलोहादिक अपरजातिना । तेहजघन्य कहाना होभवि प० ॥ ३ ॥ भावपात्रनो लच्छन कहियें । सुनियें सुगुण सयाना हो भवि प०

पंचम चरणधरें वलि वरतें। क्षीणमोह गुण ठाणाहोन्नवि प० ॥ ४ ॥ रतनपात्र समते स वोंत्तम । पात्रकह्या जिनन्नाना हो न्नवि प० प्रवरनाण किरियाधर मुनिवर । लान्नालान्न समाना हो न्नवि प० ॥ ५ ॥ तेकांचन न्नाज न समकहिये । न्नवजल तारन याना हो न्नवि प० ॥ सुधमन द्वादशव्रत दरशन धर । तार पात्र समजाना हो न्नवि प० ॥ ६ ॥ शुध स मकित धरश्रेणिक परमुख। रह्या श्रविरति गुणठाणा हो न्नवि प० ॥ ताम्रपात्र समएहनें कहीयें। न्नावी गुणमणि खाना हो न्नवि प० ७ ॥ श्रपर सकलजन मिथ्यादृष्टी। लोहादि पात्र गिनाना हो न्नवि प० ॥ जिनशासन रंगें रंगाना । वाचंयम सुप्रमाना हो न्नवि प० ८ एहनें दान दियांशिव लहिये। एहसुपात्र प हिचाना होन्नवि प० ॥ पंचदान दशदान नि करमें । अन्नयसुपात्र महिराना होन्नवि प० ९ ॥ नरवाहन शुन्नपात्रदानतें । न्नयेजिन ह रष निधाना होन्नवि प० ॥ सालिन्नद्र वलि सुर सुखलहियो ।सुरनर करय वखाना हो न्न वि प० ॥ १० ॥

॥ काव्य ॥

अनंतविन्नाण विन्नासरस्स । दुवाल संगी कमला करस्स ॥ सुलद्धवासा जरगोयमस्स । णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ॐह्रीं गौतमाय नमः। इति पचदश्ा पदे सुपात्रदानाधिकारे गौतम पूजा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सोलमपदमें जानिये । वेयावच्च विधान अखिल विमल गुणमणि तणों । सोहै प्रवर निधान ॥ १ ॥ जिन १ सूरी २ पाठक ३ मुनी ४ बालक ५ वृद्ध ६ गिलान ॥ तपसी ८ चैत्य ९ सघनोकरो । वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥

॥ रागजगलावालोम्हारोकबमिलसीमनमेलू ॥

सेवोभाई । सोलमपद सुखकारी ॥ श्री जिनचद्र प्रमुख दशपदनो । करो वेयावच भारी से० ॥ १ ॥ श्रीतीर्थकर त्रिभुवन शंकर । अवर केवली वलिहारी२मनपर्यवधर३ अवधिनाणधर ४ चवदपूरव श्रुतधारी से० २ ॥ दशपूर्वी १६ उत्कृष्ठ चरणधर। लब्धिवंत अणगारी ॥ ए जिन कहिये इनवदनते । ज

विझवें जिनअवतारी से० ॥ ३ ॥ जिनमंदिर बिंबकरयन्नरावें। पूजकरें मनुहारी ॥ वेयावच्चकहीये जिनकी। करिये न्नवजलतारी से० ४ ॥ आचारिज परमुख नवपदकी । वेयावच विजितारी ॥ न्नक्तिपूर्व वस्त्रौषध अनजल देवें गुणविस्तारी से० ॥ ५ ॥ पंचसय मुनिनीकरीय वेयावच । पूरवन्नव व्रतचारी ॥ न्नरतबाहुबलि चक्रीपदन्नुज । बलल्ह्यो वरीशिवनारी से० ॥ ६ ॥ नंदिषेण सुलसामुनि जिनकी करीय वेयावचसारी ॥ तिनसें स्वर्गलोकमें दुयकी । न्नईय प्रशंसान्नारी से० ॥ ७ ॥ इत्यादिक सोलमपद उधरे । वहुलन्नव कूमजारी ॥ तिनसें इन वेयावचपद की । बारीजाउं वारहजारी से० ॥ ८ ॥ नृपजीमूत १ केतु २ सोलमपद । सेवीन्नये दुखवारी ॥ श्रीजिनहर्षधरी हरिवंदित। शरणागत निसतारी से०

॥ काव्य ॥

मणुस्स सह्यातिसया सयाणं। सुरा सुराधीसर वंदियाणं ॥ रवींदु बिंबामल सग्गुणाणं। दयाधणाणांहि नमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐह्रीं जिनेन्योनमः ॥ इति षोडशपदे वेयावृत्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सतरम पद में सेवियें । सङ्घ सुख करण समाधि ॥ जिन सेवन ते ज्ञविक नों । गमें व्याधि श्ररु श्राधि ॥ १ ॥ ब्रम्ह नगर पति विचरता । वरपाथेय समान ॥ ए समाधि पद जानिये । सुरमुणि कियेहै रांन ॥ २ ॥

॥ रागकहरवा बाजै तेरा विछुश्रा रे वा० ॥

मेरो रे समाधि चरण चित वसियो । तसु गुण समरण कियो मनु वसियो मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतु हें । श्रनु ज्ञव रगे श्रतिहि विकसियो मे०॥ १ ॥ द्रव्य तज्ञावत दुविधि समाधि। सुरतरु मानु नित ज्ञुवन विलसियो ॥ श्रसन वसन सलिला दिक ज्ञक्ति । करय संघनी करुणा रसियो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ये सुनियें । कह्यो जिन लोकालोक दरसियो ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखें । पतित सुथिर करै धर्म मे हरसियो मे० ॥ ३ ॥ ज्ञाव समाधि द्वितीय ये कहिये । जो करै सो जिन चरण फरसियो ॥ सकल सघ को जो उपजावत ।

दुविध समाधि दुरित तसु नासियो मे० ॥ ४ ॥ सुमति पंच त्रिण गुपति धरें नित। सुरगिर वरनों धीरज करसियो ॥ जगत जंतु छुध त पति हरन कुं अनुभव अमृत धार वरसियो मे० ॥ ५ ॥ ध्यान अनल करमें धन दाहत जिनसे पर गुण परिणत खिसियो ॥ ये मुनि तरणि तेजसम दीपत। अमृत सुखामृत पान तिरसियो मे० ॥ ६ ॥ इन पदमें असे मुनि जन के समरन तें। अये जग अवतं सियो ॥ ये पद सेवी नृपति पुरंदर भये ज गपति जिन हरख उलसियो मे० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सव्विंदिया पारविकारदारी। अकारणासेस जणोवगारी॥ महाभयातंकगणापहारी।जयो सदा शुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री नमश्चारित्र धारेभ्यः ॥ इति सप्तदश पदे समाधि पूजा १७ ॥

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रंहिवो सदा। अष्टादश पद मांहि ॥ इण पद सेवक जन तणा । सब संकट भय जाहि ॥ १ ॥ जेती कुमति निशु

रुता । घोर तपें करि होय ॥ तत अनंत गुण ग्रुरुता । सुज्ञानी की जोय ॥ २ ॥
॥ दिलदारयार गबरू रापूं रे हमारा घट में ॥



जिन चद्र नाम तेरा । महाराज ज्ञान तेरा ॥ जीतैं रे विकट नव नटनें । सदपूर्व ज्ञान धरणा ॥ वितरे जिनेंद्र चरणा । करेस र्व कर्म हरणा जी० ॥ १ ॥ जग मे महोप कारी । नय सिन्धु वार तारी ॥ कुमतांधता विदारी जी० ॥ २ ॥ सज्ञ नावनो प्रकासी । परम स्वरूप नासी । परमात्म सन्नवासी ॥ ३ ॥ विनु हेतु विश्व वंधू । गुण रत्न राशि सिधू ॥ समता पियूप अधू जी० ॥ ४ ॥ स्या द्वाद पक्ष गाजे । नयसप्त सें विराजे ॥ एकां त पक्ष नाजे जी० ॥ ५ ॥ लहि तीर्थपाव तारा । इनसें जिनेंद्र सारा ॥ नविके किया उधारा जी० ॥ ६ ॥ पद सेवि ए नरिंदा । नये सागरादि चन्दा ॥ जिन हर्ष केसमदा । जी० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

गुनक्रिया मंगल मंगनस्स । संदेह सदोह

विखंडणस्स ॥ मुत्तीउपादान सुकारणस्स । णमोहिनाणस्स जसोधणस्स ॥८॥ ऊँह्रीं श्री ज्ञानाय नमः ॥ इति अष्टादश पदे अपूर्व श्रुत ग्रहण रूपा ज्ञान पूजा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

पापताप संहरणहारि । चंदनसम श्रुतसार ॥ तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ एगुनवीस पद में भजो । जिनवर श्रुतनीभक्ति ॥ इनपद वंदनसेंलहें । विमलनाण युतमुक्ति ॥ २ ॥

॥ राग देसी व्रजवासीकानतें मेरी ॥

॥ गागरढोरीरे एचाल ॥

भविजन श्रुतभक्ति चरणशरण उरधरियें रे । ए श्रुतभक्ति सुमंगलमाल ॥ विमलकेवल कमलावरमाल भवि० ॥ १ ॥ सकलद्रव्य गणगुणपर्याय । प्रगटकरण एश्रुत मनभाय भ० अतुल अनंतक्रिरण समवाय । धरणतरणगण समकहिवाय भ० ॥ २ ॥ एश्रुतकुमति युवति नेंसंग । अगणित रमणतणो करेंभंग भ० ॥ अरथैभाख्यो श्रीजिनराज । सूत्रैंगणधर मुनि सिरताज भ० ॥ ३ ॥ एश्रुत सागर अगम

* आज आयो रे ठंकार जिवडा नाच जिनन्द आगे ॥

अपार । अनतअमल गुणरयणाधार ज० ॥
नवभय जलनिधि तरण जिहाज। निसुणमग
नजई सकलसमाज ज० ॥ ४ ॥ नवकोटील
गें तपकरिजीव । अज्ञानीकरें जितनीसदीव
ज० ॥ कर्मनिरजरा तितनीहोय । ज्ञानीके
इकक्षणमेजोय ज० ॥ ५ ॥ एकसहस कोडि
ठसयकोडि । चतुरतीस कोडि अक्करजोडि
अडसठिलापरू सातहजार । अडसय असी
य प्रमित चित धार ज० ॥ ६ ॥ इतनें वर
नसे इकपदहोय । एकश्लोकके गणितएजो
य ज० ॥ इकपदको परिमाण एजान । इण
पद से आगम परिमाण ज० ॥ ७ ॥ तीन
कोडि अरु अडसठि लाख । सहस बेयालि
स एपद भाख ज० ॥ इतनेपदसें अगइग्यार
केरीगणना भविचितधार ज० ॥ ८ ॥ बारम
दृष्टि वादकोमान । असंख्यातपदकों पहिचा
न ज० ॥ इनको चवदपूरवइकदेश। एनों पा
रलह्योहें गणेश ज० ॥ ९ ॥ एहदुवालस अग
उदार। एहनीजइये नितबलिहार ज० ॥ ए
हनों द्रव्यभाव बहुभक्ति। करियेधरिये जि
नपदयुक्ति ज० ॥ १० ॥ रत्नचूड नृपसुखमा

धार । जिनश्रुत नक्तिकरी हितकार न० ॥ नये जिनहरष परम पददाय । जिनके सुरन रपति गुनगाय न० ॥ ११ ॥

॥ काव्य ॥

अन्नाणवल्ली वणवारणस्स । सुबोहिबीजं कुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स । ण मोदया मंदर सच्कुयस्स ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्री श्रुताय नमः १९ इति एकोनविंशतिपदे श्रुतपूजा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

प्रावचनी १ अरुधर्मकथी २ । वाद ३ निमत्ती ४ जाण ॥ तपसी ५ विद्या ६ सिद्ध ७ पुन । कवी ८ एहमुनिन्नाण ॥ १ ॥ नावतीर्थके प्रनुकह्या । प्रान्नाविक एअष्ट ॥ तीर्थप्रनावन जेकरें । तेफललहें विशिष्ट ॥ २ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

तीरथ परन्नावन जयकारा । जिनसें नव सागर जल तरिये ॥ ते तीरथ गुण धारा । ती० ॥ १ ॥ जिनके गणधर तीरथकहिये । वलि सङ्घ संघ सुखकारा ॥ एह महा तीरथ पहिचानो । बंदिलहो नवपारा ती० ॥ २ ॥

अमसठि लौकिक तीरथ तजिकरि । नजलो कोत्तरसारा ॥ द्रव्यनाव दोयन्नेद लोकोत्तर । थिरजंगम नयहारा ती० ॥ ३ ॥ पुमरीक प रमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा ॥ एवर तीरथ थावरकहिये । दीठांदुरित विदारा ती० ४ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीसजिन । विहरमा न नवतारा ॥ दोयकोमि केवलिं विचरंता । जगमतीर्थ उदारा ती० ॥ ५ ॥ सघचतुर वि ध जंगमतीरथ । जिनशासन उजियारा ॥ वरअनत गुणनूपण नूपित । जिनकुं नमत जिनसारा ती० ॥ ६ ॥ एतीरथ परन्नावन करिये । नुन नावन आधारा ॥ शिवकज जलविशति तमपदकी । जाउं प्रतिदिन बलि हारा ती० ॥ ७ ॥ एतीरथ परन्नावन करती मेरुप्रन अविकारा ॥ पदजिनहरपलहीनें तरि यो । नवअंन्नोधि अपारा ती० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

महामहानदपदप्रदाय । जिनश्रुतज्ञानपयो नदाय ॥ जगत्रया धीश्वरवादिताय । नमोस्तु तीर्थाय सुनदवाय ॥ १ ॥ ॐह्रींश्रीतीर्थायनम. इतिविशतितमपदेतीर्थप्रन्नावनापूजा ॥ २०

वीसपदकी बिविध पूजन विधितणीं रचनां करी ॥ ५ ॥ इतिश्री विंशतिस्थानकस्तुति :

॥ जियाचतुरसुजाणनवपदके गुणगायरे ॥

॥ इस चालमें आरती ॥

पिया विंशतिथान मंगलआरति गायरे सुमतिप्रिया कहैं चेतनपतिकों निसुण वचन मनलायरे पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परि णति तुमचहिये । तिणको एह उपायरे पि० अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल समु दायरे पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण भवभय हरण विधायिरे । एह आरती अरतिवारती । अनुपमसुर सुखदाय रे पि० ॥ ३ ॥ जैसेंजगतैं करय आरती। स कलसुरा सुररायरे॥ तैसेंभावितुमे करोआरती एपदगुण चितलायरे पि० ॥ ४ ॥ पंचप्रदी पसें करयआरती । जेनितचित उलसायरे॥ तेलहीपंच चिदानंद घनता। अचलअमर प दपायरे पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित ज्योतैं । दुर्मति तिमिर विलायरे ॥ एहआ रती तुरत तारती । भवजल निपतित धा यरे पि० ॥ ६ ॥ पदजिन हरष तणी एकर

णी । मनहरणी कहिवायरे ॥ चंद्रविमलशि
वसिधिनिधि धरणी । वरणीकिण विधजाय
रे पि० ॥ ७ ॥ इतिविंशति स्थानकारात्रिका
॥ॐ॥ अथ चौवीसजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमी श्रीपारस विमल । चरण कमल सुखदाय ॥ अष्टमिफल पूजन रचु । बरविध जूचितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरैं । शाश्वत जिनमहाराज ॥ अरचैं अष्टविध पूजसुं ॥ जैसे सकसुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुणधरी । श्रावक समकितधार ॥ विरचैं जिन चौवीसकी । अष्टविध पूज उदार ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

सलिल१सुचदन २ कुसुमजर३ । दीवगकरणंच ४धूवदाणच५ ॥ वर अरकत६ नेविज्जं७ । सुज फल पूजाय अठविहा ॥ १ ॥ अष्टविध पूजा करणं सुणिये सूत्रमकार ॥ जे नविविरचै प्रनुतणी । ते पावें नवपार ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । योगीश्वर नरराय ॥ प्रथम नये युगआदिमे । सकलजीव

सुखदाय ॥ १ ॥

॥ रागदेसाख पूर्वमुखशावनं एचाल ॥

विमलगिरि उदयगिरिराज सिखरोपरे । तरुणतरुतेज दीपतादिणंदा ॥ युगलधर्मवार करधरम उद्योतकिय । विमलइक्ष्वाकु कुल जलधिचंदा ॥ १ ॥ मातमरुदेवि वरउदरद रि हरिवरा । सकलनृपमुकटमणि नाभिनंदा अखिलजगनायका । सुगतिसुखदायका विम लवरनाणगुण मणिसमंदा ॥ २ ॥ वृषभलांछ नधरा । सकलभवभयहरा ॥ अमरवरगीतगु णकुशलकंदा । गहिर संसारसागरतरणसमथ रा । नमतशिवचंदप्रभुचरणवंदा ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल१चंदन२पुष्प३फल४व्रजै । सुविम लाक्षत५दीप६सुधूपकै७ विविधनव्यमधुप्रव रान्नकै८ । जिनममोभिरहंवसुभिर्यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रींश्रीपरमात्मनेअनंतानंतज्ञानशक्तये ॥ जन्म जरामृत्युनिवारणाय ॥ श्रीमदृषभजिनेंद्राय ॥ जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपंअक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहेस्वाहा ॥ इतिश्रीरिषभजिनपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

जयजिणंददिणइंदसम । लखिभविकजवि कसात ॥ परमानंदसुकदजल । विजयामातसु जात ॥ १ ॥

॥ रागआसावरी हो दिलवागमे ॥

॥ प्यारे जिनजी ॥ एचाल

एक अरज अवधारिये । अजितजिन ए० अजितजिनेसर जगअलवेसर । कुरम निजर निहारिये अ० ॥ १ ॥ चरमसिंधु भवभय ज लनिपतित चरणपतित मोहे तारिये अ० ॥ २ ॥ परमानंदघन शिव वनितानन । कजम धुपान सुकारिये अ० ॥ ३ ॥ चिर संचित घ नदुरित तिमिर हर । तुम जिनभये तिमिरा रिये अ० ॥ ४ ॥ कहै शिवचंद अजित प्रभु मेरे एह अरज न विशारिये अ० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं परमप० अनं०जन्म० श्रीम० ज० चं०स्वाहा ॥ इति अजितजिन पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

जय जितारि संभव सदा । श्रीसंभवजिन राज ॥ सकललोक जिण जीतियो । जीतोमोह समाज ॥१॥ जैनाकरगुणपूर । सेवो तेजसनूर भक्तिभवपूरण उरधार । मुक्तिपुरीपथसार ॥

॥ रागवेलाउलसबाबागंधवटी०सारए० ॥

अपरमित वर शिखरसागरधार संजवका रए । जिनरायसंजव पाय बंदो लहो जवजल पारए ॥ वल जलधिजात सुजातकुंजरकुंजजंज न जानिये । तसुजनकनाम समाननामा । ज ये जिन उर आनिये ॥ १ ॥ जसु चरण पंकज मधुर मधुरस पान लयलागीरह्या । मिलकर सुरासुर खचर व्यंतर जमर निलचितऊमह्या ॥ जसुचरण कमलेंर्लवगलांबनकनक सुवरणका यए । सकलजुवननायक सुमतिदायक । जननि सेना जायए ॥ २ ॥ जसुमधुरबाणी जगवखा णी । तीस सरगुण धारिणी ॥ संसार सागर जयजराकर । पतित पारउतारिणी ॥ स्याद्वाद पक्ष कुठारधारा । कुमतिमद तरुदारिणी ॥ प्र जु बाणि नित शिवचंदगणिके । जवो मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ जुँह्रींश्रीं परम० जनं०ज्ञान० श्रीमत्संजव जिनें० ॥ जलं०स्वाहा ॥ इतितृती यसंजव पूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो जविचित लाय ॥ जगति युवति संकटहरण । करण ति

न सुध थाय ॥ १ ॥

॥ कुंदकिरणशशिउजलोरे एचाल ॥

संवरनंदन जिनवररे वाला । अभिनंदन हित कामीरे ॥ जगदभिनंदन जयकररे वा० ॥ दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोका लोक प्रकासता वा० ॥ करता अविचल धामीरे अव्यावाध अरूपितारे वा० ॥ विमल चिदानंद रामी रे ॥ २ ॥ वंछित पूरण सुरमणी रे वा० एप्रभु अंतरजामी रे । अैसे प्रभुमहाराजकुं रे वा० । सिवचंद नमेंसिरनामी रे ॥ ३ ॥ ॐह्रीं पर०अनं० अभिनंदनजिनेंद्राय जल० स्वाहा

॥ दोहा ॥

पंचमजिननायकनमूं । पंचम गतिदातार पंचनाणवरविमलकज । वनविकसनदिनकार

॥ कहरवा वसीतेरी वैरणवाजै एचाल ॥

सुधभावचितथिरधरके रे । पूजोसुमतिजिणंद ॥ जिनभक्ति करण रसीला । लहे परम आनंद सु० ॥ १ ॥ जिनराज सुमति समंदा करे कुमतिनिकंद ॥ प्रभुनाचरण अरविंदा । वंदे असुर सुरिंद सु० ॥ २ ॥ कनकाभ तनु दुतिसोहे । प्रभुसुमंगलानंद ॥ करुणोपशम

रसज्ञरिया । वंदे नित सिवचंद सु० ॥ ३ ॥
ॐह्रीँ परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत् सुमति
जिनेंद्राय जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

हिवपष्ठमाजिनवरतणी । पूजनकरिड़ं उ
दार ॥ नविचित नक्ति धरीकरी । सुखसंप
तिकरतार ॥ १ ॥

॥ रागसारंग वावनचंदनघसिकुमकुमा ॥

हांहोरेवाला पदमप्रनू मुखचंद्रमा । नित
सकललोक सुखदायए । हांहोरे वाला ॥ ह
रिसुरअसुरचकोरक्ता ! नित निरखरह्या लल
चायए । हांहोरेवाला । जिनमुख वचनअमृ
ततणो । जे श्रवणकरें नविपानए । हांहोरे
वाला ॥ ते अजरामरता लहै । हरिगण करें
जसुगुणगान ए । हांहो० धर नृप कुलनन्दि
नमणी । प्रनु मातसुसीमा नंदए हां० ॥ प्र
नु दरसणते प्रति दिनें । जयज्यो शिवचंद
आनंद ए ॥ ३ ॥ ॐह्रीँ परम० अनं० ज्ञा० ज०
श्रीमत्पदमप्रन जिनें० य जलं० नैवे० यजा
महेस्वाहा ॥ इति छठी पूजा संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसुपार्श्व सुरतरुसमो । कामित पूरण काज ॥ जो ज्ञवियण पूजो सदा । वसुविध पूजसमाज ॥ १ ॥

॥ राग तेरीपूजावणीहैं रसमें एचाल ॥

मेरी लगी लगन जिनवरसें मे० ॥ जैसें चंदचकोर ज्ञमरकी । केतकिकमलमधुरसे मे० एहसुपारस ज्ञए प्रज्ञुपारस । गुणगणसमरण फरसें मे० । चेतन लोहपणो परिहरके । ज्ञा यलैकंचन सरिसें मे० ॥ २ ॥ एप्रज्ञु करुणा करकु धरिले । ज्ञर जिमकमल ज्ञमरसे मे० ॥ जेज्ञवि जिनपदलगनधरें तसु ॥ नहिज्ञये म रन ज्ञसुरसे ॥ ३ ॥ मात पृथवी तनुजात त नुद्युति । समज्ञुज्ञकंचनसरिसे मे० ॥ कहै सिव चद चित नितमेरो रहो प्रज्ञुपदलय ज्ञरसें मे० ॐह्रीँ परम० ज्ञन० ज० सुपार्श्वजिनें० जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ इति सातमीपूजा ॥ ७

॥ दोहा ॥

अष्टमजिनपदपूजिये । विविधकष्टहरतार अष्टसिद्धनवनिध लहै । जिनपूजाकरतार ॥

॥ रागमेघवरसेज्ञरीपुष्पवादलकरीएचाल ॥

परमपदपूर्वगिरिराज परिउदयलहि । वि

जितपरचंद्र दिनकरअनंता ॥ चंद्रप्रन्नुचंद्रिका विमलकेवलकला । कलित शोन्नितसदाजिन महंता प० ॥ १ ॥ कुमतिमत तिमिरन्नरहरि यपुनन्नूरिन्नवि । कुमुद सुखकरिय गुणरयणद रिया ॥ गहिरन्नवसिंधु तारणतरणतरणिगुण धारि न्नवितारि जिनराज तरिया प० ॥ २ ॥ राखियेआज मोहेलाजजिनराजप्रन्नुकरणसुख जिनचरण सरणपरिया । परम शिवचंद्र पद पद्मनमकरंदरस ॥ पाननितकरण ततपरन्नरी या प० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं परम० जन० श्रीम च्चंद्र प्रन्नजिनें० जलं० नैवे०यजामहेस्वाहा इतिअ ष्टम जिनपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

सुबिध२समरणथकी । कामितफलप्रकटा य ॥ अतीगहनसंसारवन । बकुलअटनमिट जाय ॥ १ ॥

॥ राग चंपक केतकी मालती एचाल ॥

सुबिध चरण कजबंदियेए अइयो बं० । नंदियेअतिचिरकाल शिवतरवारनिकंदिये । बिघनकंदततकाल अइ० ॥ १ ॥ आजजनमस फलोन्नयो अ०ए दीठोप्रन्नुदीदार। तनमनद्रुग

विकसितन्नये ॥ जिमकजलखिदिनकार ॥२॥ अ
मृतजलध रवरसियो अ० ब०ए । न्नविउरखे
त्रमकार । दर्शनसुरतरु ऊगियो अ०ए शिव
फलनोंदातार ॥ ३ ॥ ॐह्रींपर०श्रुनं०ज० श्रीम
त्सुविधिजिनेंद्राय ज० नैवे० यजामहेस्वाहा
९ ॥ इति सुविधिजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मुक्तन मन शीतलकरो । श्रीशीतलजिन
राय ॥ तुमसमरण जलधारसें । अंतरतपतपु
लाय ॥ १ ॥

॥ दादाकुशलसूरिंदएचालमे ॥ घाटो ॥

मेरेदीनदयाल । तुमन्नयेसकललोक प्रति
पाल मे० ॥ सुणशीतलजिनवरमहाराज । च
रणसरणधस्यो प्रनुनोआज ॥ ननमूंसक्तकारी
देव । करिस्यूंचरणकमलनीसेव मे० ॥ १ ॥ जैसे
सुरमणिकरतलपाय । कुणलेकाचसकलउलसा
य ॥ तुमसमसुरवर अवरनकोय । हेर २ जग
निरख्योजोय मे० ॥ २ ॥ प्रनुदरसण जलध
रघनघोर । लखीयानिरतकरें न्नविजनमोर ॥
पदशिवचंद विमलन्नरतार । * शिवबनिता
बरेअतिसुखकार मे० ॥ ३ ॥ ॐह्रींपरमश्रु०न०

*परम पद अथवा शिव नार ।

मच्छीतलजिनें० ज० नै० य०स्वाहा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांसजिनेंद्रपद । नंददुति सलिलाधा
र ॥ जेनेत्रेंमज्जनकरें । तेसुचिइज्जांबिधुतार ॥

॥ राग सोहमसुरपतिवृषभ्र रूपकरएचाल ॥

श्रीश्रेयांसजिनेसरसाहिब । इंद्रियसदन
सनंदहे । जसुबसुबिधपूजनसेअरचो ॥ उरध
रिपरमानंद हे श्री० ॥ १ ॥ ए समकित धर
श्रावककरणी । हरणी भवमनरंगहे ॥ बिजय
देवजिनप्रतिमापूजी । जीवाभिगमउवंगहे ॥
श्री० ॥ २ ॥ सूरियाभजिनपूजनकरियो । रा
यपसेणीउवंगहे । ज्ञाताअंगेंद्रुपदिश्राविका ॥
पूज्याजिनचितचंगहै । जेनिन्हवकुमतीजिन
पूजन ॥उत्थापेंतेहअनंतहे काललगेंभमसीभव
बनमें ॥ मंदमतीभयभ्रांतहे ॥ २ ॥ बिस्नुमा
ततनुजांत बिस्नुन्नृप । बिमलकुलांबरहंसहे ॥
सकलपुरंदरअमरअसुरगण । शिरु वरिप्रभुअ
वतंसहे ॥ इणसुरवरनीपरभविश्रावकजेपूजैजि
नउछरंगहे ॥ ते शिवचंद परमपद लहिस्येंनि
श्चयकरि भवभंगहे श्री० ॥ ३ ॥ ॐह्रींपर०
अनं०ज० श्रेयांस जिनें० जलं० नैवे० यजा

महेस्वाहा ॥ इति एकादशमजिन पूजा ॥ ११
॥ दोहा ॥
हिववारमजिनवरतणी । पूजनकरियेसार
भावभक्तियुत भविसदा । द्रव्यभक्ति चितधार
॥ राग सवअरति०मुदारधूपं एचाल ॥
सकल जगजनकरतवंदन । जयानंदन स्वामि रे ज० । दुरिततापनिकंदचंदन । परम शिवपदगामि रे स० ॥ १ ॥ नृपतियर वसुपूज्यनृपकुल । विपिन नंदनजातरे देवा वि० सु हरिचदन नंदनदन । नदमदकियघातरे ॥ स० ॥ २ ॥ वसुपूज्यनद जिनेंद्रपूजो । सकलजिन महाराजरे ॥ करतनुति शिवचंदप्रभु ए। निखिल सुरशिरताज रे दे० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं पर० अन० ज० वासुपूज्यजिने० ज० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति वारमजिनपूजा ॥ १२
॥ दोहा ॥
विमल विमलजिन करमुझे । मलिनकरम करि दूर ॥ तेरमप्रभु रमिये सदा । मुझ उर मझि गुणपूर ॥ १ ॥
॥ सिधचक्र पदवदोरे भविका एचाल ॥
विमलचरणकजवदोरे । सूरीजनवि०वदी

नेंश्रानंदोरे ॥ जसुगणधरमुनिवरगण मधुकर। सेवतपदश्ररविंदोरे स्यामाउदरसुगति मुगला फलकृतवरमानृपनंदोरे सू० ॥ १ ॥ सकजगमं फलविमलकरणकुं निजसासन नभवंदो। उदय नयोनविकुमुदविकसवा। बरगुणरयणसमंदो रे ॥ २ ॥ यदिनवबंदिहरण नविचाहो। प्रनु बंदीचिरनंदो। बिमल चिदानंद घन मयरू पी। नितवंदित शिवचंदो रे वि० ॥ ३ ॥ऊँह्रीँ परम०श्र०ज०श्रीबिमलजिनें० जलं० स्वा०

॥ दोहा ॥

हिवचवदमजिनपूजतां। हरिये बिषयवि कार ॥ जो नवियण सुणिये सदा। एप्रनुश्रा रणाधार ॥ १ ॥

॥ पंचवरणीश्रंगीरची एचाल ॥

पूजकरणीप्रनुनीदुरितनिवारी। श्रनंततर णिहिमकिरणतरुणतर। किरण निकरजीताहै नारी। अनंतनाण वरदरशण तेजें। प्रनुसुय सोदर श्रवतारी पू० ॥ १ ॥ लोकालोक श्र नंतव्यद्गुण। पर्ययप्रगट करणहारि ॥ तातै श्रन्वययुतजिन धरियो। श्रनंतनामश्रतिम नुहारी पू० ॥ २ ॥ सिहसेननृपनन्दन बंदन

करतइद्ढुचंद्रसुखकारी । सादिश्नतत ग्गंगथि तिधरियो ॥ पदग्निवचद्र विजयधारी पू० ॥ ॐह्रीं परम०अनं० ज० श्रीम दनंतजिनेंद्राय ज०नैवे०स्वाहा इतिश्ननतजिनपूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ग्गानुन्नपकुलन्नानुकर । पनरमजिनसुखका र ॥ सोन्नित सञ्जग विपिन जन । हरख फलद्जलधार ॥ १ ॥

॥ धीरसमीरेजमुनातीरेवसतिवनेवनमाली ॥

धरमजिनेसर धरमधुरंधर । जगवंधव जग व्यालामें वारीजाउं ॥ सुव्रतानंदनपापनिकंदन प्रन्नुन्नएदीनदयालामें वारीजाउं ध० । प्रन्नुधी. रजगुणनिरखंअमरगिरि । लजिलीनो अचला धारा मे ॥ १ ॥ जिनगंन्नीरताचरमसिधुलखि कियलोकांत विहारामें ध० ॥ एजिनचद्रुचर णअरचनते । लहिजिनपतिश्रवतारामें ॥ २ करमवैरिदलकारि न्नविलहस्यो पदग्निवचद्रुउ दारा मे ॐह्रीं परम०अनं०ज०श्रीधर्मजिनेद्रा य ज०स्वाहा ॥ १५ ॥ इति धर्मजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अचिराउयरेश्रवतरी । शांतिकरीसुखका

र ॥ मारि विकार मिटायकरि । नामधस्यो शांतिसार ॥ १ ॥

॥ रागन्नाव धरिधन्य दिनआजसफलोगिणुं ॥

शांतिजिनचंद्र निजचरणकजशरणगत तरणिगुणधारि नववारितारी कुमतिजनविपिनजनिकुमतघन व्रततितत निशितधारतरबारबारी शांति० ॥ एकन्नविपदउन्नयचक्रधरतीर्थंकरधारियावारियाविघनसारा सकलमदमारियाविमल गुणधारिया सारियान्नक्तबांछित अपारा शां० हरिणलांछनधराकरणसुवरणकरासुरवराहितधरागतविकारा मोहन्नटधरणिधरगणहरणबज्रधरकुमुद शिवचंद्रपदरजनिकाराशां० ॥३॥ ॐह्रींपरम० अनं० ज० श्रीशांतिजिनेंद्राय जलं०चं० यजामहेस्वाहा १६ ॥

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीवसम । मकिन्नवसागरजाण ॥ न्नक्तियुक्ति नित पूजिये । लहिये अमलविनाण ॥ १ ॥

॥ राग अरिहंतपद नितध्याइये एचाल ॥

कुंथुजिणंद गुणगाइये । मनबंछितफलपाइये रे ॥ प्रन्नु समरण लयल्याइये । नविन्नव

तजिशिवजाइये रे कु० ॥ १ ॥ नवजलगतनि जआतमा । वारी करुणाउरधरिताइये रे चर णकरणउपयोगिता । ग्रहणकरणकुध्याइये रे कुं० ॥ २ ॥ एप्रनुदरशणजीवने । अनुनवर सनोदाई रे ॥ वरशिवचंद विमलवधें । दिन दिनसोनसवाई रे कुं० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं परम० अ० श्रीकुंथुजिनें० जलं० नै० स्वाहा ॥ १७॥ इति

॥ दोहा ॥

जिनअठारमोध्याइये । नवियण चित्तम फार ॥ करण तीनइक करिमुदा । प्रतिदिन जयजयकार ॥ १ ॥

॥ राग सगलागोही आवे० एचाल ॥

निजविमल नक्तिसे अरजिन सु नितरमि ये रे ॥ जिनगुण निजगुणतुल्यकरणकु । चंच लचित्तहयदमिये रे नि० ॥ १ ॥ सुमतियुवति सगतिउरधरिके । कुमतिनारसंगगमिये रे ॥ अनुनव अमृतपान करणसे । विषयविकृत्ति विषवमियें रे नि० ॥ २ ॥ जिनवरसगरमण दव अनिलें । पंकसघनवन धमिये रे ॥ कहें शिवचद जिनेंद्र रमणसे । नववनमे नाहिन्न मिये र नि० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं परम० अ० श्रीम

तंभ्रुरजिनें० जलं० यजामहेस्वाहा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

उगणीसमजिन चरणकज । न्नमरहोयलय लाय ॥ सेवे तसुन्नवन्नमरता । अगणिततुरत बिलाय ॥ १ ॥

मल्लिजिणंदउपगारी रे वाला हांहोरेवाला वारीजाउं वारहजारी रे वाला म० ॥ कुंन्नन रेसर गगनांगण में । सहसकिरण अवतारी रेवा० ॥ म० ॥ १ ॥ पूरबन्नव खटमित्र नरिंद पति । बोधसिंधुन्नवतारी ॥ वेदत्रई विरही तनुधास्यो । सकलसंघसुखकारी रेबा० म० ॥ २ ॥ सकलकुशलहरिचंदनतरुवर । नंदनबन अनुकारी ॥ संघचतुर्बिध न्नूरिखचरगण प्रण तचंदमनुहारी रे वा० म० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं पर म० अनं० श्रीमल्लिजिनेंद्राय जलं० यजाम हेस्वाहा ॥ इति मल्लिजिनपूजा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

पद्मोदरवरपद्मनंद गतपरपद्म समान ॥ बिंशतितमप्रन्नुपूजिये । केवललच्छिनिधान ॥

॥ न्नविन्नक्तिधरीनवपदनव० एचाल ॥

मुणसुव्रतजिनेंद्र मुनिजरधर मुकपर वर

दरसणदीजिये । प्रभुदरसप्रीतनिरूपाधिकता करियेलहिये शिवसाधकता । तवतुरतमिटेंशि वबाधकता सुण० ॥१॥ अमृत मेसाध्यपणों विलसें प्रभुदरसणसाधनताउलसें तद मुकने साधकतामिलसें सु० ॥ २ ॥ भिन्नाधिकरणता यदिविघटै । एकाधिकरणतायदिसुघटें ॥ तद मुकशिवसाधकताप्रगटें सु० ॥ ३ ॥ एकाधि करणता मुककरिये । भिन्नाधि करणतापरिह रिये ॥ शिवचंदविमलपदतदवरिये । सु० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं परम० अनं० मुनिसुव्रत जिने० जलं० चंद० यजामहेस्वाहा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

अतरवैरीमारिया । तवलहियोनमिनाम॥ भवियणएप्रभुपूजसें । सरिये वंछितकाम ॥१॥

श्रीनमिजिनवरचरणकमलमे । नयनभमरयुग धरिये रे ॥ तिणकियगुण मकरंदपानसें । चे तनमदमत करिये रे श्री० ॥ १ ॥ एहचरण कजअहनिशिविकसै । पङ्कजनिशिकुमलावें रे ॥ ए न वलेंयलि तुहिन अनलसै अपरक मल यलजावें रे श्री० ॥ २ ॥ एपदकजगुन मधुरस पीवत । जीव अमरता पावें रे वा०

ञुवर कमल रसलोन्नी मधुकर ॥ कजगतग लगलजावे रे वा० । परकज निजगुण लच्छि पात्र है ॥ पदकज संपद देवे रे । ताते पद ञिवचंद जिणंद के ॥ अहनिञि सुरनर सेवे रे श्री० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं परम० अनं० नमिजि नें० जलं० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

बावीसमजिन जगगुरू । ब्रम्हचारि विख्यात इणवंदन चंदन रसैं । पापताप मिटजात १

॥ राग गाञलूहै जिनमन रंगसु ०एचाल॥

नेमि जिणंद उर धारी रे बाला । विषय कषाय निबारिये रे बाला । वारिये रे हां रे बाला ॥ ए जिननें न बिसारिये रे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रञु गरजता रे बाला । देञाना अमृत बरसता रे बाला दे० बरसता हां रे० ञविक मोर सुण उलसता रे बाला ॥ २ ॥ समवसरण गिरि पर रह्या रे बाला । ञामंड लचपलावह्यारेवा० ॥ सुरनर चातकऊमह्या रे ॥ ३ ॥ बोधबीज उपजावियो रे बाला । ञविउरक्षेत्र बधावियो रे बाला ञ०ब० ञवि क सुगति फलपावियो रे ॥ ४ ॥ ॐह्रींपरम०

श्रीमन्नेमिजिनेंद्रायजलं०नैवे०स्वाहा ॥ २२ ॥
॥ दोहा ॥
अश्वसेननंदनसदा । वामोदरखनिहीर ॥
लोकशिखरसोंप्रभू । विजितकरमवरुवीर १
॥ वाजै तेरा विछुवा रे वा० एचाल ॥
पासजिणंदा प्रनुमेरेमनवसिया मे० ॥ शि
वकमलानन कमलविमलकल । तरमकरंदपा
नअतिहिसरसिया पा० ॥ १ ॥ वामानदनमोह
निमूरत । सकल लोक जनमन किय वसिया
पा० ॥ परमजोति मुखचंद विलोकित । सु
र नर किंनर चकोर हरसिया ॥ २ ॥ अजन
गिरि तनुदुति जिनजलधर देशन अमृतधार
वरसिया पा० ॥ २ ॥ पियकरि नवि चिर
काल तरसिया । मुगति युवति तनु तुरत
फरसिया पा० ॥ २ ॥ कुमुद सुपद शिव
चंद जिणद नी ॥ वारी जाउं मन मेरो अ
तिहिउलसिया पा० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं परम०अ०
ज० श्रीमत्पार्श्वनाथाय ज० यजामहे स्वाहा
॥ दोहा ॥
वरइखाकुकुलकेतुसम । त्रिसलोदरअवतार
एप्रभुनीनितकीजिये । विविधभक्ति सुखकार

॥ रागतेजतरणिमुखराजेंप्रभूजीको एचाल ॥

चरमवीरजिनराया । हां रेजिनराया मेरे प्रभुचरमवीर जिन० सिद्धा रथकुलमंदिरधज सम । त्रिसलाजननी जाया । निरुपम सुंदर प्रभुदरणतें । सकललोकसुखपाया मे० ॥ १ ॥ वामचरणअंगुष्टफरसतें । सुरगिरिवर कंपाया इंद्रभूतिगणधर मुनिजन । सुरपति वंदितपा या मे० ॥ २ ॥ वरतमानसाशान सुखदाया ॥ चिदानंद घनकाया । चंद्रकिरण गणविमल रु चिरकर । शिवचंदगणि गुणगाया हां० ॥ ३ ॥ वरसनंद मुनिनाग घरणामित । द्वितियाश्विन मनभाया । धवलपक्ष पंचमितिथिशानियुत ॥ पुरजयनगरसुहाया मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरिसूरीश्वर । वरखरतरगछराया । क्षेमकि र्त्तिशाषागणिभूषण रूपचंदभवकाया मे० ५ महापूर्वजसु भूरिनरेस्वर । वरखरतर गछरा या । तासुशीसवाचक पुन्यशीलगणि तसुशी ष्यनामधराया मे० ॥ ६ ॥ समयसुंदरअनुग्रहि ऋषिमंडल । जिनकीसोभसवाया । पूजरची पाठकशिवचंदनें । आनंदसंघवधाया मे० ७

॥ इति रिषिमंडल पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नंदीश्वर जीकी पूजा ॥



॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण ज
यकार ॥ अश्वसेन नंदन चरण । शरण
रुचिर उरधार ॥ १ ॥
जिनवाणी समरणकरी । सकलजीव सुख
कार ॥ कहिस्यु नदीश्वर जगत । पति
पूजन विसतार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

अखिलद्वीपासिरताज । अष्टमनंदीश्वरद्वी
पवाजै ॥ वलयाकार जगत सुख कारी । नि
रुपम अतिशय गुण मणिधारी ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

मणिधारि बावन विमल गिरिवर । जै
नमंदिर युतसदा ॥ शुभशक्ति धर निरजरपु
रंदर निरपिपामे सम्मदा । इक्कोडि शतत्रि
ण सठिकोडिय चोरासीलख योजना । इणद्वी
पमां चक्रवाल विष्कंभ । मान जाणो भोजना

॥ ढाल ॥

इण द्वीपें पूरव दक्षिणआसा । पश्चिम उत्तर दिशा चउपासा ॥ चतुरंजन गिरिसुख माधारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ २ ॥

॥ उल्लालो ॥

धरचारि निजदुति न्नरविनिर्जित सजल जलधर घनघटा । वलिचतुर शीति सहस्त्र योजन तुंगता धरता स्फुटा ॥ इणप्रवर अं जन सिखरि सिखरे शाश्वता जिनमंदिरा ॥ चउसंख्य सुंदर कनककलसो । पमधरा जग सुखकरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

इकइक अंजनगिरि चउपासा । चउपुक्क रिणी प्रगट प्रकासा ॥ विस्तर इगलख योज नसारा । तासुमांहि इक इक्कउदारा ॥ ३ ॥

॥ उल्लालो ॥

इकइक उदारा सहस्र चउसठि योजनोन्न तता कुला ॥ जिनराज मंदिर मंडिता सज्ज चंद्र किरण समुज्वला । दधिमुख धराधरदी र्घिका प्रतिविदिशि दोयदोय रतिकरा । दश सहस्रयोजन उन्नताधर उदय करुणा रुणवरा

॥ ढाल ॥

जिनमंदिर युत रतिकर विमला । पूरव दिशितेरस सङ्गअचला ॥ यह रीते परत्रिणदि शिजाणो । इम बावन्नगिरी इवखाणो ॥ ४ ॥

॥ उल्लालो ॥

इवखाणशतयोजनसुदीर्घा बह्वत्तरयोजन प्रमा । अति उन्नता पंचास योजन विस्तरा जिनगृह समा ॥ शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा पचशत धनुरुन्नता । इणरीति प्रति प्रासाद प्रतिमा जाणिये बिंबशाश्वता ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

ऋषभानन चंद्रानना । वारिषेण ब्रधमा न ॥ एजाणो शाश्वत सकल । जिनप्रति मा अभिधान ॥ ३ ॥

सुरगिरि शिखरे जिनतणों । जिन न्हव णोत्सव सार ॥ करिके नंदीश्वर जई । ह रिगण विबुध उदार ॥ ४ ॥

अनुभव रसयुत भक्तिधर । हृदय सरोज मझार ॥ इणपरि शाश्वत जिनतणों । करै पूजभति सार ॥ ५ ॥

पूरवदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जि

नराज ॥ अष्टविधि पूजायें सदा । अर
चीजै हित काज ॥ ६ ॥
प्रथम पूज जिन राजनी । विमल जलैं
भर पूर ॥ करियें न्हवण सदाभवी । हो
य सकल दुख दूर ॥ ७ ॥
॥ कुंदकिरण शशिऊजलोजी देवा एचाल ॥
मिलिकरि सकल सुरासुरा रेवाला । नि
जसेवक सुर पासें रे ॥ क्षीर जलधि मागध
थकी रे वाला । सिंधुनदी गंगासें रे ॥ १ ॥
वलि वरदामसुतीर्थसें रेवा० । विमल सलि
लछ्णावें रे ॥ मणिकनकादि कलश भरी रे
वाला । अषधि कुसुम मिलावें रे ॥ २ ॥ इं
द्रादिक सज्जसुरगणा रेवा० । शाश्वत जिन
न्हवरावें रे ॥ विमल सलिल धाराकरी रेवा
कुमति तापनें गमावें रे ॥ ३ ॥ इणपरि जे
भगतेंभवी रेवाला । न्हवणकरै जिनअंगें रे
तेसुरवर सुख अनुभवी रे वा० । लहै शिव
पद मनरंगें रे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरा
रेवा० । करै जिणंद गुणगानारे ॥ कुशल कु
मुद विकसायवारे वाला । प्रभु शिवचंद स
माना रे ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

दुरितदाव घनातप वारणं । सकलभाव विकासनकारणं ॥ जगतिभव्य भवोदधि तारण । जिनगणं स्नपयाम्य मलै र्जलैः ॥ १ ॥

ॐह्रीँ श्रीअर्हं परमात्मभ्यो ऽनतानतज्ञान शक्तिभ्यः प्रणतसकल सुरासुरेंद्र वृंद विहित भक्तिभ्य' कठिन कर्म्म शालमालो न्मूलन चरणेभ्यो जन्मजरा मृत्युनिवारण कारणेभ्यो नदीश्वराष्टम द्वीपगत पूर्वांजन गिरिशिखर स्थ सिद्धायतन मंडनायमानेभ्य. श्रीरिषभान न चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना भिधानाष्टो त्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो जल यजामहे स्वाहाः इति प्रथमजल पूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

द्वितीयपूज जिनराजकी । करहु भक्तिभ रसार ॥ वरसुगंध द्रव्ये करी । तरहु सिं धु ससार ॥ १ ॥

॥ मेघवरसेभरी पुष्फवादलकरी एचाल ॥

भक्तिधरी भविजन पूजमहाराजकुं । एह वरगध द्रव्यें सदाई ॥ विमल घनसार चदन सरसमृगमदा । कुंकमें कर विलेपन मुदाई भ०

१ ॥ जे नवि सुरनितरगंधद्रव्यें करी । सुरनि तनुकरै जिनराज केरो ॥ तेहनी चंद्र करअ मल यशवासना । सुरनितम करइ सकजग घणेरो न० ॥ २ ॥ एमवर सुरनितर द्रव्य सेंसुरवरा । अरचकरि जगपती विंबसारा ॥ परमशुन नावना नावता गावता । विशद जिनवर गुणा अतिअपारा ॥ ३ ॥ सकलसुर गणमिलीएम जंपेंमुदा । नोसुरा आज जिन राज अरची ॥ विरति गुण रहितनिज जन्म सफलो कियो । सुमति संयोग दुरमति विगू ची न० ॥ ४ ॥ दुतियइम पूज करतांहरै न व्यनो । पापघनताप आपें अपारा ॥ सरग निरवाण पुरपंथ प्रगटीकरण । विशादशिव चंद्रकरगण उदारा न० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मृगमदोज्वल कुंकुम चंदनै । श्चिर तनां तर तापनिकंदनैः ॥ जिनवरा नघता मसना स्करान् । स्वहितर्हिधये चसमर्चयेः ॥ ६ ॥ ॐह्रीं श्रीअर्हं परमात्म० प्रणत० कठिन० नं दीश्वरा० रिषनानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्ध माना श्चोत्तरैकशात शाश्वत जिनें० चंदनं य

जामहेस्वाहा इतिद्वितीया गंधपूजा सपूर्णम्

॥ दोहा ॥

तृतीयपूज जिनराजनी । विकसित ञ्ज
तिहिरसाल ॥ सुरन्नि कुसुमकरि नवियज
न । करिये नक्ति विशाल ॥ १ ॥

॥ पांचवरणी अंगीरची एचाल ॥

एह जिनकी पंकहरणी नगतिसारी । मि
लिकरि हरिवर सकल सुरासुर ॥ त्रिकरण इ
क करि हितकारी एह० ॥ १ ॥ अनुनवरस
युत चित्त नक्तिधरि । पूरव पुन्य उदय नारी
एह० ॥ इणविध कुसुम नक्ति जिनवरकी ।
करइ हरइ घन दुरितारी । एह० ॥ २ ॥ मा
लती नागपुन्नाग केवमो । दमणक कुंद सुग
धिधारी एह० ॥ मरुक केतकी पद्म मोगरा
कुसुममालकरि मनुहारी ए० ॥ ३ ॥ जिनवर
कठ ठवें प्रनु आगल । कुसुमपुज धरि दुख
वारी ए० ॥ इण विध पुष्प नक्तिकरि नवि
जन । वरइ सकल जग सिरि नारी एह० ॥
४ ॥ करिके शुकलध्यान पावकसें । नस्म वि
षम समकमवारी ए० ॥ चिदानदघनपद शिव
चंदोपम । पामे अतिगुण विसतारी ॥ ए० ॥ ५

॥ काव्य ॥

नव दवानल ताप घनाघनं । कुशल चंदन नंदन काननं ॥ विशद शारद चंद समाननं । जिनगणं कुसुमै रुच समर्चये: ॥ ६ ॥ ॐह्रींश्रीं अर्हं परमात्मभ्योऽनंता० ॥ प्रणत० कठिन० नंदी० श्री रिषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना भिधान श्रु० जिनें०भ्यो पुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ इतितृतीयपुष्पपूजा ॥ ३

॥ दोहा ॥

जगनायक जिनचंद नी । एह चतुर्थिजाण ॥ धूपपूज करिये सदा । हरिये कुमति अनाण ॥ १ ॥

सबअरतिमथनमुदारधूपं एचाल ॥

जग कुशलकारि अघालि हरणं । धूपपूज उदाररे ॥ धूप अनलै कुगति दुखभर । फलद दहन अपाररे ॥ १ ॥ ज० ॥ सरस चंदन अगर अंबर । मृगमदा घनसाररे ॥ कुंदरु कवली सेलारस । करिये गंधवटि साररे ॥ २ ॥ जग० ॥ रतनमय वर धूप धाणो ॥ धूपभृत करधाररे । सुर पुरंदर पूजकरतां ॥ लहै लाभ अपाररे ज० ॥ ३ ॥ धूपपरिमल

महमहे जिम ॥ तेम ज्जुवन मझाररे ॥ धूप पूजा ते ज्जविकनो । गुण सुगंधि विचाररे ॥ जग० ॥ ४ ॥ ज्जव अधकूप पतत उधरत । धूप अरचन धाररे ॥ कहत गणि शिवचंद पाठक । पूज चतुर्थी साररे ज० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

ज्जव सुदुस्तर वारिधि तारणं । विषय सौख्य विकार निवारकं ॥ निरुपमोत्तर मंग ल कारकं । जिनगणं घृतधूप करायते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं परमात्म० प्रणत कठिन० ॥ नंदीश्वरा० श्री रिषज्जानन चंद्रानन । वारिषेण वर्द्धमानाज्जिधान अ० धूपं यजामहे स्वाहा इति चतुर्थी धूप पूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

दीप पूज इह पचमी । करिये विविध प्रकार ॥ दीप पूज करतो ज्जविक । दीपे जगतमझार ॥ १ ॥

॥ तेरी पूजावणी तेरसमै एचाल ॥

मेरी लगीय प्रीत प्रज्जु चरणा । जिनगुण परिणति करण कारण ॥ सकललोक सुखकर ण मे० ॥ १ ॥ गहिरसिंधुज्जव निपतित ता

रण । तरण तरणिगुणधरणे ॥ अनंतरूपधर दुरगतित्रय हर । परमज्योति अधिकरणे मे० ॥ २ ॥ करुणाधार विमलगुण आगर निरुपमअन्नारण शरण मे० । एजिनचरण दीप पूजनसे ॥ अरचीजे दुख हरणे मे० ॥ ३ ॥ केवल विमल चिदानंद लहिये दीपपूजके करणें मे० । रतन दीपसे करै आरती हरिगण जिनगुण चरणे मे० ॥ ४ ॥ एप्रनुचरण सेव नवि जनकुं ॥ अमृत पद सुवितरणे मे० । कुमति रजनि अज्ञान तिमिर हर । वर शिवचंद्र सु किरणे मे० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरु कषाय करेणु समीरणं ॥ मद धराधरता वल वैरिणं जिनगणं प्रयजे वरदीपकैः ॥ ६ ॥ ॐह्रीं परमा० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्रीरिषनानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमान अ० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५

॥ दोहा ॥

बठीअक्षत अरचना । करिये धरि शुन्न नाव ॥ वरिये सिद्धवधू परम । अक्षय

सुख नोदाव ॥ १ ॥

॥ हांहोरे देवा बावनाचदनघसिकुमकुमा ॥

हांहोरे वाला एजगदीसर हितकरू । अ
लवेसर जिनमाहाराजए ॥ अतिगहिराज्ञव
जलधिते । प्रजुतारण तरण जिहाजए हां०
१ ॥ ज्ञीमकरम कुंजरघटा । ज्ञजन मृगराज
समानए ॥ हाहोरे वाला ज्ञव्यकमल प्रतिबो
धिवा । एप्रजुवासर माहिरानए हां० ॥ २ ॥
रजत शालि तदुलमयी अक्षत पूजन अग्रसा
रए ॥ एपूजा जिनचंद नी । वांछित सुखनी
दातारए हां० ॥ ३ ॥ ठवणजिनंद दरसणअ
वै । अनुज्ञव रसतरुनो कंदए ॥ ज्ञावजिणे
सरदरसनो कारण कह्यो सकलजिणंदए हां०
४ ॥ ए पाठक शिवचदने । जिनचरण शरण
आधारए ॥ प्रतिज्ञव ज्ञय ज्योयेकही वठी ।
अक्षत पूजासारये हा० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

विजित मदर ज्ञूधर धीरत । निहत साग
रराजगज्ञीरत ॥ प्रदित पातकयोध सुवीरतं
जिनगणं प्रयजोक्षत पूजया ॥ ६ ॥ ॐह्रीं
अर्ह परमात्मज्ञ्यो अनंता० प्रणत० कठिन०

नंदीश्वरा० श्रीरिषभानन चंद्रानन वारिषेणव र्द्धमाना भिधानाष्टोत्तरैक० जिनें० अक्षतंयजा महे स्वाहाः ॥ इति छठीअक्षतपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

हिवपूजा नैवेद्यनी । सप्तम अतिहिवि
साल ॥ करिये जिनवरनी अचल । लहि
ये मंगल माल ॥ १ ॥

॥ राग जिनगुणगानं श्रुतअमृतं एचाल ॥

जिनवरदरसण वरअमृतं । ए जिनदरशा ण अमृत फरसै ॥ भवि तजि मिथ्याअयगुण तं जि० ॥ १ ॥ जगदीसरपरमात्मदशापद । पामें अनुपम कांचनतं ॥ तिणसें सुरपति प्र भुदरसणवरि । भगते गावें जिनचरितं जि० २ ॥ मोदक घृत वरखज्जक परमुख । वरनैवे द्यसरसधरितं ॥ हरिगण जगप्रभु आगलढो वें । मणिमय कनकथाल भरितं जि० ॥ ३ ॥ जे नैवेद्य करी जिनपूजन । करइ तेह जगम न हरितं ॥ आलिही स्वादु सुरगति शिवपद सुख । ततिनित सेवें भवितुरितं जि० ॥ ४ ॥ विंशति पदमें ये जिनपतिपद । वरशिवचं द विमल अमितं ॥ इणपद सेवक भविजन

केरो । सचित जूरिहरइ दुरितं जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

अनंतविज्ञानमयस्वरूप । समस्त लोकत्रय जूतिजूपं ॥ लसद्गुणौघामृत चारुकूपं । यजे सुनैवेद्यचया जिनौघं ॥ ६ ॥ ॐह्रीं श्रीअर्हं परमात्मन्ज्योऽनता०प्रणत० कठिन०नंदी०श्री रिषन्नानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना नि धाना ष्ठोत्तरैकं० जिने०ज्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जिनफल पूजा अष्टमी । कष्टअनिष्ट वि दार ॥ करिये नुजनावें सदा । नरिये पु न्यजंमार ॥ १ ॥

॥ तेजतरणि मुखराजै एचाल ॥

सुरनायक जसगावें । जिनजीको सुर०ए आंकणी ॥ निरमल मनवच काय करणते । लुलि २ सीस नमावें । सुर अवतार सफल नयोमेरो । जिनपूजन सुपसावे जि० ॥ १ ॥ नयनचकोर चद्र समज्योती । सचितदूर पु लावें ॥ निरखि२ मनमोहन मूरति । आनंद अंगनमावे जि० ॥ २ ॥ नालिकेर नारगी क

वला । केला आम्र अणावें ॥ पूंगीफल दाडि
म परमुखफल । जिनवर चरण चढावें जि०
३ ॥ जेन्नवि फलपूजा जिनवरकी । करैकरा
वेंन्नावें ॥ अनुमोदें तेपरमचिदानंद । घनअ
मृत फलपावें जि० ॥ ४ ॥ वरस अढार बि
होत्तर जेठें । प्रतिपद सुकल सुहावें ॥ चंद्र
सूनुवासर जयनगरै । खरतर गच्छजगचावें
जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरि सूरीसर । वि
जयमान वरुदावें ॥ रूपचंद गणिपाठक पा
री । वादींद्र विरुद धरावें जि० ॥ ६ ॥ ता
ससीस वाचक पुन्यशील सिष ॥ समय सुंदर
कहिरावें ॥ तासुसीस पाठक शिव चंदै । पू
जरची मनन्नावें जि० ॥ ७ ॥ जेनंदीश्वर शा
श्वत जिनकी । वसुविध पूजरचावें ॥ तेजन
सकल लोकके ईश्वर । तीर्थंकरपद पावें जि०

॥ कलश ॥

सुरपति सुरासुर वृंद वंदित चरण पंकज
मघहरं । सतद्वीप नंदीश्वर जिनालय परम
तर सुख माकरं ॥ अति विशद हिमकर चं
द्रिका मल निखिल गुण मणि सागरं । जि
नराज गण मह मर्चये वरफल चयैः करुणा

कर ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने्भ्यो ऽनता०
प्रणतस० कठिन० नंदीश्वरा० श्री ऋषभा
नन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना भिधानाष्टो
त्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यः फलं यजामहे
स्वाहा. ॥ इत्यष्टमीफल पूजा ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

पूरव दिसि अंजन गिरी । मंदिरगत जि
नराज ॥ अष्टविधि पूजा ये सदा । अरची
जै हितकाज ॥ १ ॥ पूरव परमुख चिऊ दि
से । पुष्करणी अभिराम ॥ दधि मुख चउमं
दिर जिना । अरचीजै शुभ काम ॥ २ ॥ ई
शानादि विदिशिगत । वसुरतिकर गिरिराज
मंदिर गत जिनराजकी ॥ करिये पूजसमाज
३ ॥ दक्षिण अजनशैलमें । चउ दिशिदधि
मुख सार । चउमंदिर जिनराज की ॥ करिये
पूज उदार ॥ ४ ॥ दक्षिण दिशि अजन गि
री । मंदिरगत जिनराज ॥ वसुविधि पूजा
ये सदा । पूजी जे हित काज ॥ ५ ॥ दक्षि
ण ईशानादिके । विदिशी अतिहि उदार ॥
अष्ट रतिकर गिरिवर जिना । पूजो विवि
ध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिम दिशि अजन गिरी

मंदिर जिन महाराज ॥ वसुविध पूजा यें सदा । पूजो नविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधि मुखधार ॥ चउमंदिर जगनाथ की । पूज करो सुखकार ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै ॥ विदिशों जगहित काज । अरु रतिकर गिरि जिनप्रतें ॥ अरचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्तर दिशि अंजन गिरी । मंदिर गत जगराय ॥ अष्टविधार्चन से नविक । अरचो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजनशैलनें । चउदिशि दधिमुखनाम चउमंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुन्न परिणाम ११ ॥ उत्तर ईशानादिकें । विदिशों रुचिराकार । वसु रतिकरगिरि जगविनू ॥ पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल ॥ कोठारी चितचंग ॥ इनके आग्रहसे करी ॥ पूजा अतिहि सुरंग ॥ १३ ॥



॥ इति श्री नंदीश्वरजीकी पूजासंपूर्णा ॥



॥ अथ पांच कल्याणक पूजा ॥



॥ दोहा ॥

ज्योतिरूप जगदीसनो । अद्भुत रूप अनूंप ॥ प्रवचनप्रभुता प्रगटपण । जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥

चौवीसे जिनवर नमी । पच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वर्णवु । दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥

कल्याणक उच्छवकरे । इंद्रादिक जे देव तेनावें नविजन करे । श्रीजिनवरनीसेव

॥ राग सरपदो ॥

जोतिसकल जगदीसनी । हां रेज० हे ॥ च्यारनिक्षेप प्रमाण । नाम जिनादिक जिन कह्या । आगम मांहिप्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

नाम जिणाजिण नामा । ठवण जिणाउ जिणंद पडिमाउ ॥ दव्वजिणा जिण जीवा । नावजिणा समवसरणच्छा ॥ १ ॥

॥ ढालतेहीज ॥

विनकारण कारजनही हां रेका०ए । एसच लोकप्रसिद्ध ॥ भावनिक्षेप प्रधानता । कारज रूपेंसिद्ध ॥ २ ॥ विनआकारें द्रव्यनो हां० द्र० । नहुवें थापन सिद्ध ॥ नामाविना आ कारनो । प्रगट पणै नविबुद्ध ॥ ३ ॥ नामा दिक कारणसही हां०का० इनविन भावन होय । भावविशुद्धै जिनतणी पूजकरो सहु कोय ॥ ४ ॥ बिवहारै निश्चय लहै हां०नि० कारण कारज होय ॥ पावक ज्ञालाक्रमकरी । सोधचढै सहुकोय ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानकला कलितातमा । लोकालोक प्रका श ॥ व्यापक भावें थिर रह्यो । शुद्ध वि कास विलास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

हांहोरेदेवा जोतिसकल जिनराजनी । स हु लोकालोक प्रकास ए ॥ हांहोरेदेवा राजत श्रीजिनराजजी । वांणी प्रवचन शुभवासए १ हांहोरेदेवा मात नमुं नित सारदा । गुरुपंच कल्याणक सारए ॥ हांहोरेदेवा तीर्थंकरना

वर्णवुं । गुणशास्त्र परंपरधारए ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शासन नायक जगधणी । त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभुतणा । गुण गावत सबवेस ॥ १ ॥

॥ ढालतेहीज ॥

हांहोरेदेवा । वीसथान करि सेवना बां ध्युजिननाम प्रधानहे । हांहोरेदेवा दिव्यअ मरसुखअनुभवें ॥ प्रायेप्रभुपुन्य प्रमाणए १ हांहोरे देवा निरमल तरवरज्ञानना । धारक कारक शुभयोगए ॥ हांहोदेवा शब्दचरणरस गधना । शुभफरस तणा वरभोगहे ॥ ४ ॥ हाहोरेदेवा शाश्वत सिद्धायण तणा । नितउ च्छवकरत सुरंगए ॥ हांहोरे वाला बालचंद पाठक कहे । नितमंगल होतसुचगहे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पुन्य पूर्वभव प्रभुतणो । प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरीनित प्रतिकरें नाटक नवनवभाव ॥ १ ॥

॥ पूर्व मुखसावनं एचाल ॥

शुद्ध निजदर्शने करियगुणकर्सना । जिन

चरण सेवना ॥ विवधकारीहेअइयो विविध
कारी अा० । एक जिनधर्म्ममय परमलीनता
दीनतासकलतज रजनिवारीहे अइ० ॥ १ ॥
आत्मगुणअंतरातमपणैवृत्तितातजिय बहिरा
त्मजिन आंणधारी हेअ आ ॥ २ ॥ सुद्धसम्य
क्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुध धर्मरू
चिभासससारीहे०अ० । विविधमणिरत्ननीजो
तिझगमगजगें । चंद्रिका भासभासितकरारी
हे अ० सित० ॥ ३ ॥ प्रवर कुलशुद्धराजन्य
प्रमुखेंमुदा । आयुकर बंध नर भव सुधारीहे
अ० भ० ॥ गर्भ्भ अवतार निजमात उदरेंल
है । बालशुभलग्न शुभयोग चारीहे अ० ।
योगचारी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुभदिन शुभ मझरत घडी। शुभ उच्चग्र
हचार ॥ देवलोक चवि प्रभुलहै । मातुउ
दर अवतार ॥ १ ॥
सुंदरवरप्रासाद मांहि । मध्यनिशा जिनमा
त ॥ स्वप्नदेख सुखसेजमें । जाग्रत अति
हरषात ॥ २ ॥

॥ राग घाटाचैती ॥

जिनजी नजो नवि प्यारा । याते आ नंद अधिक अपारा जि० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखैं सुपना मनजाता ॥ चित हरखित जय तिणवारा जि० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार । लक्ष्मी दाम शशी दिनकार । धजकुंज पदमसर सारा जि० वर क्षीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरु समान निर्धूम पावक सुखकारा जि० ॥ ३ ॥ त्रिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी ॥ शुनसूचक पुन्य सन्नारा जि० सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरि कारंगे । निद्राशोपगई तिण वारा जि० ॥ ४ ॥ एकही पुष्पमाला चढाइये ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुष परमातमा । नावी नगवन नास ॥ प्रवचन प्रगटकरण प्रनु । पुन्य तणैं सुप्रकाश ॥ १ ॥

॥ पूजा सतर प्रकारी एचाल ॥

आज आनंद वधाई नई त्रिनुवनमें । चवद सुपन सूचित गुण जेहनां ॥ अवतरे माता उदर नेमें । आ० ॥ १ ॥ नृपति सद

न वक्त सुपन शास्त्र विध । अर्थ विचारक
रि निज गनमैं ॥ पुत्र रतन फल वचत नृप
ति कुल परम कल्याण होत जननमैं ॥ आ०
२ ॥ प्रफुलित हरख भरत हिय उलसत ।
जिन जननी तात सुनि तनमैं ॥ दिन दिन
बढत प्रवर धन जन मन । अधिक उछाह
घर घरनमैं आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि
माणक मोतियें । संख प्रवाल शिल वरसन
मैं ॥ धनद धनद सुरइं[illegible] अकमतें । भरत
झंकार नृपसदन मैं आ० ॥ [illegible] ४ ॥ ताल कंसाल
मधु वीण बजावत । गीत ग[illegible]ततननमैं ॥ दु
न्दुभि मुरज मृदंग घन गरज[illegible]त । गरज २
मानुं जैसे घनमैं आ० ॥ ५ ॥ [illegible] पुर नर लोक
मांझ अधिकउछाहवाह । निशादिन[illegible] होत जन
जनपदमैं । इंद्र इंद्राणी नृप दोहद[illegible] पूरत । म
नोरथ होत जोजो मातु मनमैं आ० [illegible] ॥ ६ ॥
परम कल्याण शुभयोग संयोग [illegible] पो । शु
भघरि शुभग्रह शुभदिन मैं ॥ वरण स[illegible]नमकै न
ताहि कवि अवसर कों । आनंद भयो त[illegible]पति १न
भुवन मैं आ० ॥ ७ ॥ इति च्यवन पूजा ।
ॐ ह्रीँ परम० अ० ज० श्रीच्य० स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटे पावन पतित प्रभु । अधम उधार
न काज ॥ नृपकुल मांहे अवतरें त्रिभुवन
के शिर ताज ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥

आजअधिक आनंद भयोरेवाला । आज
सुरंग वधाई रे ॥ जगपति जिनवर जनमि
यारे वाला । सुरवधु वन मिलआई रे १ ॥
आजोआज आनंदघन उलटो रेदेवा । दिश
कुमरी हरषाई रे ॥ आजोदशदिश निर्मलता
थई रेदेवा । फूलरही वन राई रे ॥ २ ॥ फू
ले फूली वन लतारे वाला । मधु मालती म
हकाई रे ॥ आलिप्रमुष सकुधाननीरे वाला ।
निपजी रास सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें
नरकमारे वाला । क्षणइक साता पाई रे ॥
सबजन मन हरषित भयोरे वाला । भूमंडल
वधिवाई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभमहूरतघडी
रेवाला । शुभग्रह शुभपल आई रे ॥ जन्मय
यो जिनराजनोरे वाला । प्रगटीपूर्व पुन्याई रे
५ ॥ पुष्पवर्षागुलाबजलवर्षाकरे ॥

॥ दोहा सोरठो ॥

त्रिभुवन माहिसुरूप । जन्मसमय जिनरा
जनें ॥ वाजित्र वजत अनूप । सुरनरकृत
उछव भावें ॥ १ ॥

॥ रावणनीरत वणावेंहोल्नलां एचालमें ॥

आजआनंद बधाई रे ॥ देखोआ० ॥ ज
यजय कारनयो जिनशासन ॥ सुरकुमरी ह
रषाई रे दे० ॥ १ ॥ घर२गौरी मंगलगावत
मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईत उपद्रव नय
सब नागे । खार समुद्रें जाई रे दे० ॥ २ ॥
आज सनाथ नयोहै त्रिभुवन । जिनवर ज
नम्या नाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष न
यो है । धन धन मात कहाई रे दे० ॥ ३ ॥
जन्म महोच्छव करननकुं सव । दिशिकुमरी
मिल आई रे ॥ कर कदली गृह सुंदर रचना
पावन कर फर लाई रे दे० ॥ ४ ॥ जिनज
ननी जिनवर पय प्रणमी ॥ मस्तक आण
चढाई रे । स्नान करावत उनय शारीरें ॥ तै
लाभ्यंग कराई रे दे० ॥ ५ ॥ नूषण नूषित
अंग विलेपन । देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्प
ण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल ढु
लाई रे दे० ॥ ६ ॥ पंचवरन के फूल सुगंधित

सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होमकरी रक्षापोटरि
या । जिनवरकरै बंधाई रे दे० ॥ ७ ॥ मंगल
गावत जिनजग जननी । निजगृह माहेठाई
रे सफलभयो निजआतम जाणी । दिशकुमरी
घर आई रे दे० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अतिहि अधिक उच्छवकरी । गइकुमरी
निजथान ॥ इंद्रहिवें उच्छव करै । जन्म
समय जिन जाण ॥ १ ॥

॥ रागगौडी सांझसमैंजिनवंदो एचाल ॥

आजउछव मन भायो रे ॥ देखोमाई ॥ ज
गजननी जिनजायो रे देखो आ० ॥ त्रिभुवन
माहि प्रकास भयो है । इंद्रासन थररायो रे ।
दे० आ० ॥ १ ॥ अवधि ज्ञान धर जिनजी
कुं निरखत । हृदय कमल झलसायो रे ॥ ह
रिणेगमेषी इंद्र हुकमते । घटसुघोष घुरायो
रे दे० ॥ २ ॥ वनठन नवरूप मनोहर । सु
र समुदय मनभायो रे ॥ सुरकुमरी वरभूषण
भूषित । अद्भुत रूप वनायो रे दे० ॥ ३ ॥
नवनव यानवाहनरच सुरवर । सुरगिरिशिख
रें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उच्छव ।

मेघ घटा घररायो रे दे० ॥ ४ ॥ कालीघटा वरदामनि चमकत। दादुर मोर सुहायो॥ अ तिहि सुगंध पुष्प व्रज वरसत। मोतियन की ऋरलायोरे दे० ॥ ५ ॥

प्रन्नुप्रतिमापंचतीर्थी न्नीतरसेंल्यावें। सिं हासणपरस्थापनकरैंस्नात्रपूजाकरावें॥

॥ दोहा ॥

न्नाकृजाय जिनवर गृहें। जिनजननी जिन राज ॥ प्रणमी श्री महाराजनी। न्नक्ति करै सुरराज ॥ १ ॥

॥ सुंदरनेम पियारो माई एचालमें ॥

तुमसुत प्रानपियारो माई तु० ॥ आं० ॥ जग वत्सल जगनायक निरख्यो धन २ न्नाग हमारो माई तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तु मसुतजायो। अधम उधारण हारो माई ॥ धन२ प्रगटन्नयो जगदिनकर। त्रिन्नुवन तारन हारो माई तु० ॥ २ ॥ सबसुर चाहत स्ना त्र करनकुं। सुरगिरि प्रन्नुजी पधारो माई ॥ करजोमी प्रन्नु अरजकरतकुं। सब जनकाज सुधारो माई तु० ॥ ३ ॥ मैंसेवक तुमसुत च रननको। आयोहुं अधिकारो माइ ॥ इंद्

कहें पदपंकज प्रणमुं। भयसब दूरनिवारो तु० ४ ॥ पांचरूपकरि प्रभुजीकुं लावें। पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इन्द्र महोत्सव करिहें। पूजन अष्टप्रकारो माई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पंचरूप कर इंद्र जिन। पंडुगवन लेजाय ॥ सिहांसन उछरंग गहि। स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥

॥ इतनोगुमाननकरियेंछबीलीराधाहेए० ॥

जिनजीको पूजन करिये। हांरे होरंगीले श्रावकहो जि० ॥ द्रव्यभाव बहुभेदेकरता। भवसागर निसतरिये जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक। अष्टविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धे जिनगुणगावो। नाटक नवनव करियें जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत। वर्ननकरन नतरियें ॥ बोधानंद देखें सोइजानें। दुखसब दूरेंहरिये जि० ॥ ३ ॥ पूजनकर प्रभुकुं घरल्यावे। आतम पुन्येंभरियें करअठाही महोत्सव आयत। सबसुर मिल निजघरियें जि० ॥ ४ ॥ इतिश्री जन्मकल्याणकं ज० श्री अष्ट द्रव्य स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

सुरकृतउच्छव अति अधिक। भये अनंतर प्रात ॥ मातपिता उच्छवकरें। निज कुल क्रमविष्यात ॥ १ ॥
पारनहीधनकेजहां। अगणित भरेभंडार ॥ दानमनो वंछित दिये। दयावंत दातार

॥ गात्रलूहें०एचाल ॥

जिनजन्म महोच्छव रंगसु रे। भयेप्रातक रतउछ रंगसु रे ॥ हां रेदेवा रंगसुं ॥ नृपउच्छव करै अतिघणुं ॥ १ ॥ पुत्रजनम कुलक्रमक रै रेदेवा। जगजस कीरतविस्तरें वि०। घरघरउच्छव रंगमें ॥ २ ॥ सुरवधुमिल सुरसंगसुं रे ॥ करेंनाटक नवनव रंग सुं रे रं० ॥ हां रे बाललीला जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे देवा। इंद्रादिक मन मोहता रेवा०मो० हां०। विद्याप्रभु विस्मयवती ४ परमप्रमोद प्रवीणतारे देवा। सुरक्रीडा अतिशयवता रे देवा अ० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलसुं रे देवा ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगसु रे देवा वाजित्र नवनव रंगसु रे देवा अ० ॥ वजित अहोनिशिसंगसु रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीनज्ञान अतिशय धरैं । अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीडातिशय । अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥

॥ पचवरणी अंगीरचीकु०एचाल ॥

वरणीन जातीरे व० । जिनजीकी सोभा व० न जाती ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरषत । और न ऐसोजगनाती जि० ॥ १ ॥ अनत गुणंकरि सोभित प्रभुजी । सुद्ध सवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निसदिन । पुन्यपुरुष पायाराती जि० ॥ २ ॥ परउपगारी परम पुरुषोत्तम । अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारे । भ्रातभये सुखसघाती जि० ॥ ३ ॥ जसु जसख्यात प्रगट त्रिभुवनमे । कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन२तीन भुवनके साहिब । भयामहमारो वरगाती जि० ॥ ४ ॥ इद्र अहो निश भावन भावत । देख दरस अति हरपाती ॥ दुन्दुभि प्रमुख वाजित्र वजतानित । सुरवधु वनमंगलगाती जि० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं प० पुष्प वासक्षेप चढावे ॥

॥ दोहा ॥

प्रवरन्नोग प्रन्नुपुन्यतें । प्रगटें प्रगट प्रधा
न ॥ गुणग्राहक गृहवासमें । दर्शन ज्ञान
निधान ॥ १ ॥

प्रन्नुविन दीनानाथ दया । विन कोंन क
हावत कोई रे प्र० ॥ गृहवासै सुधसंयम धा
री । शुद्धसुन्नावें होइ रे प्र० ॥ १ ॥ सम्यग
दर्शनन्नव निर्वेदें स्वतन की जरषोइरे । प्रन्नु
ता प्रन्नुकी कोकहि वरनें ॥ सुरनर नारीमो
हीरे प्र० ॥ २ ॥ शुन्नलेश्या शुन्नध्यानरमें नि
त । श्रातम निरमलधोइरे ॥ श्रात्मरूप नि
हारत निजघर । संगसुमति जह जोइरे प्र०
३ ॥ प्रगट प्रकास श्रात्मउजियारे । सामक
हावत सोइरे ॥ गृहवासैं सुधसंयम रागी ।
लागी लगनसवाइरे प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता
प्रन्नुजीनो लीनो । अंतरशत्रु विगोइरे ॥ वि
षयवासना छीणन्नइलख श्रातम शक्तिसुंठोइ
रे प्र० ॥ ५ ॥ इमकही फूलचढावें ॥

॥ दोहा ॥

दाता दीन दयाल प्रन्नु । देतसंवत्सरीदा
न ॥ दूरकरै दालिद्रजग । त्रिन्नुवन मांहि

प्रधान ॥ १ ॥

॥ मरुदेवानंदनकी क्याछविलागतप्यारी ॥ जगपति जिनवरकी। क्याछवि मोहनगारी ज० ॥ मोहत प्रभुकेमोहनरूपें। निरपनिरपनरनारी क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतरायकमंकषु। क्षीणभए निरधारी ॥ दानसंवत्सरघनजिम वरसत। पृथ्वी प्रमुदित कारी क्या० २ ॥ नवलोकांतिक देवसवेमिल। हाजरहोय सुचारी ॥ जयजय मंगल शब्द उचारत। धर्म गहोसुख कारी क्या० ॥ ३ ॥ दानधर्म शिव मारगप्रभुजी। प्रगटकियो हितकारी ॥ दाता दीन दयाल जगतमें। जिनसम कोसुविचारी क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुरसुरी नरनारी। दीक्षोत्सव अतिभारी ॥ गानदान सनमानतानकरि प्रभुगति सकलसुप्यारी क्या० ॥ ५ ॥ तजि ससार लियो मुनयोगें। संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव वरज्ञान भयोतव। विहरत पर उपगारी क्या० ॥ ६ ॥ ॐह्रीं प० अ० ज०श्री० दीक्षा० अष्टद्रव्यं० स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

गजवर अश्व समूह रथ। पायक कोश

कोम ॥ जिनदीक्षा महोच्छवसमें । हाज
रहोयं तिणठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुरअ
सुरनर । प्रभुकुं करेंप्रणाम नरनारी आसी
सदे । जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥ त
जआश्रव संवरगहै । संयमभाव निधा
न ॥ सवसंसार तजीकरी । भएअणगार
प्रधान ॥ ३ ॥

॥ तेरीपूजावणी तेरसमें एचाल ॥

धारी धारी धारी जिनभए संयमपदधा
री। चरनकमल वलिहारी जि० ॥ पंचसुमति
धर तीन गुपतिकर। सवजीवां सुखकारी जि०
१ ॥ जीतलियें उपसर्गपरी सह ॥ सत्रुसेना
गणभारी । भयभैरव तेनिप्रकंपभए । निर्म
मनिर हंकारी जि० ॥ २ ॥ क्रोधमान माया
लोभ अकिंचन। आकिंचन व्रम्हचारी ॥ पुष्क
रसम निरलेप जगत गुरु । निरंजन अवि
कारी जि० ॥ ३ ॥ चेतन परप्रभु अप्रतिघा
ती । खेसम निराश्रयारी ॥ खड्गीशृंग परें
एकाकी । अप्रतिबंध विहारी जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

रत्नत्रय परिग्रहकरी । मुक्तिमार्ग अभिराम

निशदिन करत विहारक्रम। प्रासु कामनिज धाम ॥ १ ॥

॥ सदगुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ एचाल ॥

जिनवरजी जगहितकारी जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु। जग नायक जय कारी ॥ १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्री। अप्रमाद नारंडसुचारी ॥ अतिशय धाम धामनिजवीरज। वृषभपरैं सुविहारी जि० ॥ २ ॥ सूरवीर प्रभु सिहतणीपर। कुंजर करम विदारी ॥ अतिगम्भीर सायरसम शोभित। सौम्यलेश्या सुख कारी जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत। हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणी पर। स्वच्छ हृदयकजधारी जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अनु[illegible]मरिया। कल्पातीतजिणंद ॥
वीतरागा[illegible]प्रवर। रत्नत्रयजगचंद ॥ १ ॥

॥ कुमरीनें जादूकारा एचाल ॥

जाके रागद्वेष भया न्यारा रे। सोई श्याम सव[illegible] सुखकारा जा० ॥ वासीचंदन सम प्रभु [illegible]। आपका रे उपकारारे जा० ॥

१ ॥ कंचन काष्ठ समानहै जाके । सुख दुख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत । जिनजीहै अधिकारा रे सो० ॥ २ ॥ शिव सुख अरु भवसुख दूनबांछै । वीतराग प्रभु प्यारा ॥ सूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ । मोहन मल्लपिछारा रे सो० ॥ ३ ॥ क्षायक संयमनें शुभयोगें । अनुत्तर गुणगण धारा ॥ पाठकविजय विमलकहै प्रभुके ॥ चरणकमलवलिहारारे सो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

घनघातीकरकर्मको । क्षयकरक्षायकज्ञान ॥
दर्शनलोकालोकको । प्रगटप्रकासीभान १ ॥

॥ ठूमरी वसमन खितरोकुंछ केतीर ॥
॥ भजलें श्रीमहावीर एचाल ॥

पायोप्रभु भवजलनिधि कोतीर पा० ॥ अतुलीवल वडवीर पा० ॥ अनुत्तरजाकैसुमति गुपतिहै । अनुत्तरक्षमाधीर पा० ॥ १ ॥ मार्दवआर्यव अनुत्तरजाके । रोक्योआश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रियानवि विणठी । रही ईर्यासुखसीर पा० ॥ २ ॥ घनघातीसव सत्रुविनासी । केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरनदर्शन प्रग

टजयो है । निजश्रातम गुणक्षीर पा० ३ ॥ प्रातिहार्य श्रुतिशय जिनसंपद । जयोश्रनुकूल समीर। देउपदेश जविकप्रतिबोधत । वचनातिशयगजीर पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकास परमगुरु । कहिनसके मतिसीर ॥ पाठकविजयविमल परमातम। प्रजुतापरमसुधीर पा० ॥ ५ ॥ ॐह्रींपरम०श्रु०ज० श्रीम०केवलज्ञान कल्याणके श्रष्टद्रव्यं० यजाम० स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

इंद्रादिकसुरसबमिली। तीनजुवनसिरदार ॥
सबदरसीसर्वज्ञनी। महिमाकरेश्रपार १ ॥

॥ श्रतुलविमलमिलो श्रखंडगुणेजिलो ॥

श्रतुलविमलप्रजुताप्रजुकीलखचोसठइंद्रउछवधरेए॥ च्यारप्रकारकेसुरसबमिलकरसमवसरणरचनाकरैए श्र० ॥१॥ रजतकनकरत्नप्राकारें कनकरत्नमणिकगुराए ॥ वृक्षश्रसोक सिंहासन सोजित । तीनछत्र चामरढुरैए श्र० ॥ २ ॥ दुन्दुजिप्रमुख श्रवण सुखदायक। गहिरसुरेवाजिश्रघुरेए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत । जलजथलज विकसितसुरेए श्र० ॥ ३ ॥ साधुसाधवी श्रावकश्राविका। इंद्रादिकसुरीसुर

वरेंए ॥ नरनारीतिर्यंग विद्याधर। द्वादशवि
धपरिषदभरें ए अ० ॥ ४ ॥ भविजनधर्मतणै
उपदेसें। जोजनगांमिमधुर गिरेए॥ प्रतिबो
धितचोमुख श्रीजिनवर ॥ निजरभाषाअनु
सरैंए अ० ॥ ५ ॥ वासक्षेपकीजै ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटपणैप्रभुकीप्रभा। प्रगटप्रकासकरूप॥
प्रगटीप्रभुतापरमसम। परमातमपदभूप॥

॥ बिगफ़ीकौनसुधारैंनाथबिनाबि०एचालमें ॥

भूमंडलभविकमल विबोधन। दिनकरस
मजिनरायारे भू०। अणछंतें इककोड़ अमर
पद। पंकजभमर लुभायारे भू० ॥ १ ॥ ग्रा
मनगरपुरपट्टण बिचरत। त्रिभुवननाथकहा
यारे ॥ चौसठइंद्रकरें जाकीसेवा। तनमनसे
लयलायारे भू० ॥ २ ॥ इंद्राणीमिल मंगल
गावत। मोतियनचौक पुरायारे ॥ सर्वजीव
हितकारकप्रभुजी निश्रेयससुखदायारे भू०।
३ ॥ भवजलनिधि निर्यामकजगगुरु। तारक
सकलकहायारे। शासननायक संघसकलकुं॥
प्रवचनतत्वसुनायारे भू०॥ ४ ॥ अनंतगुणा
करप्रभुजीकी महिमा। वरनेंकोकबिरायारे॥

परउपकारकप्रभुके पाठक। विजय विमलगुण गायारे प्रू० ॥ ५ ॥ वासक्षेपकरै ॥

॥ दोहा ॥

निजनिज भाषा भविकजन। रूपतन सुन तहि श्रोत ॥ मीठी अमृत समागिरा। सम कतश्रम नहि होत ॥ १ ॥

॥ राग कहरवो ॥

जिनदवामिलगयोरे। दोयचरणं परध्यान शुकल मनगह गह्यो रे जि०। ज्ञायकज्ञेय अनंतनोरे ॥ सवदरसी जिनचद। सुरतरुसम जग बालहो रे ॥ सेवत सुरनरइंद। धर्ममै लह्यो रे दो० ॥ १ ॥ चवदम गुण थानक करै रे। आतम वीर्य अनत ॥ योग निरोधन की किया रे। सूखम बादरकत ॥ वंधसवटर गयो रे। सरब सवर भयो रे दो० ॥ २ ॥ घनकर आत्मप्रदेशानों रे। करशैलेशी कर्ण कर्म सकल दूरै.किया रे। जीर्णवस्त्र जिमपर्ण मुक्ति पद जिम लह्यो रे दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मको। क्षय कर पर अनुबंध निजआतम रूपे लह्योए ॥ शाश्वत सुख संबंध। सिद्ध सुध बुध थयोरे दो० ॥ ४ ॥ इति

॥ दोहा ॥

अकल अगोचर अगमगम । सिद्धनएसु वि शुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥

॥ रागधनासरी तेजतरणिमुखराजें एचाल ॥

तेजतरणि समराजे । प्रभुजीकोते० ॥ एकसमयप्रभु ऊरधगतिकर । मुक्तिमहल सुविराजै प्र० ते० ॥ १ सादिअनंत सदासाश्वत वरअनंत महासुखभाजै । अचलअगोचर प्रभु अविनाशी सिद्ध सरूप विराजै प्र० ॥ २ ॥ निरुपाधिकनिरुपम सुखप्रभुके । कहिनसकै कविराजै ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी सकलानंद सहाजै प्र० ॥ ३ ॥ संवत उगणीसेंतेरोत्तर । श्रावण सुदिपखराजै ॥ श्रीजिनराज तणा गुणगाया । पंचमि दिवस समाजै ॥ ४ ॥ श्रीविक्रम पुरनगर मनोहर । श्री संघ सकल समाजै ॥ पंच कल्याणक पूजाप्रभुकी । कीनीहित सुखकाजै प्र० ॥ ५ ॥ श्री खरतरगछ नायक लायक । युगप्रधान पद भाजै ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री । जिनसौभाग्य सुराजै प्र० ॥ ६ ॥ श्रीप्रीत विलास ध

र्मसुंदरगणि । अमृत समुद्र सुन्राजै ॥ पाठ
कविजय विमल प्रनुकेगुण । गावत घनजि
मगाजे प्र० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिव
रकी । प्रेरणिया सुसमाजें । श्रीजिन वरकी
स्तवनाकीधी । धर्म्मप्रनावन काजें प्र० ८ ॥
ॐह्रीं प०अ्नं० जन्मजरामृत्यु निवारकेज्यः
श्री मजिनेंद्रेज्यो निर्वाणकल्याणके जलचंद०
यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ कलशपूजा राग मालवी गोडी ॥

सुनआरती मनुकी उदारचित्तें । करोन्नवि
करसालरे ॥ प्रथमधूप सुगंधजिनकुं । उखेवो
जिननालरे सु० ॥ १ ॥ न्नाल निजकरातिलक
सुंदर । पहरपुष्प सुमालरे । दक्षिणकर जि
न राज जूके । करआवर्त्त सुथाल रे सु० २ ॥
यथासगते सुद्धनगते । करोदिल पुसियालरे
द्रव्यन्नावें विविधपूजा ॥ न्नविकन्नाव विला
सरे सु० ॥ ३ ॥ गुणअनंत महंतगावो । प्रनू
परम दयालरे ॥ जन्मसफली करो न्नविजन
कहैपाठक बाल रे सु० ॥ ४ ॥

॥ इति आरती ॥

॥ इति कल्याणक पूजा ॥

॥ अथ पंच ज्ञान पूजा ॥



॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्री केलीसदन । नतसुर अलिझंकार ॥
नाभिनंदपदपद्मयुग। सुरुचिरमानसधार १ ॥
निखिलजंतुसुखकारिणी। जिनवाणीउरधार ॥
पंचज्ञानपूजनतणो। कहस्युंविधिविस्तार २ ॥

॥ ढाल ॥

सकल क्रियानो मूलजे राजै । अद्भुतिक जसुमहिमा छाजै ॥ जेसकु दुरित तिमिर अप हारै । लज्जित कोटि दिनंद अवतारै ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

अवतार जसुमतिनाण । श्रुत पुनरवधि नाण वखानियें ॥ मनभाव परिणति विशद वेदन मनः पर्यय जानियें । वर अनंतानंत केवल अपडिहय गइ जाणए ॥ प्रतिपत्ति भे दै ज्ञान भाख्युं जिनपती जगभाणए ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

विंशति पदमांहे अष्टम पद ए । भावें वंदन

करिन्नव तरियें ॥ नवपद सप्तमपद मनन्नायो श्रीतीरथ पति श्रीमुखगायो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

योग्यदेशथित वस्तु जे । विषय प्रगट प्रतिन्नास ॥ इंद्रिय मन कारणकरी । न्नेद वतीस प्रकाश ॥ १ ॥ उपयोग क्रमतेक ह्यो । मति पूर्वक सुयनाण ॥ प्रथम पीठ न्नवि श्रुरचिये । नमोनमो मइ नाण २ ॥

॥ ढाल ॥

समकित उतपति कालै मतिश्रुत । लवधे होय समकाले । सुयनिस्सिय पुन रस्सुय निस्सिय । न्नेदेसुय अजुवाले रे । न्नविका श्रीमइनाण तेवदो वंदीने चिरनंदोरे न्न० समकित रसनो कंदोरे न्न० शिवतरु बीजनोवृंदोरे न्न० श्रीमइ० एश्याकणी ॥ १ ॥ अष्टा विशतिधा सुयनिस्सिय । अत्थुग्गह१ईहा२वाय३ ॥ धारण ४ एचउपणइंद्रियमण । करि चउविंशतिधायें रेन्न० श्री० ॥ २ ॥ नयनमनोविन इंद्रियसारू । वजणुगह चउन्नेय ॥ उप्पइया १ वेणइया२ कम्मिय ३ । पारिणामिय४ अवसेयरेन्न०श्री० ३ ॥ उग्गह इक्कसमयईहावाय । श्रुरु मुजत्तम

संख ॥ संखकाल धारणउत्क्रिठ ऋरचोएहनिकं
खरे त्न० श्री० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक युग्मम् ॥

लोकेवग्रहईहनंपुनरपायोधारणेत्यंचतु । त्रै
दैःक्रूप्रमवग्रहोप्युन्नयथार्थो व्यंजनातोर्थतः॥त्व
ग्नासारसनाश्रवोन्निरथसा वेदोन्मिताव्यं जना
षोढार्थोपिमनोक्षियुक्तरसनात्वग्घ्राणकर्णैःस्फु
टम् ॥ १ ॥ षोढेहापितथेन्द्रियैश्चमनसापायो
पिषढ्धातथा । षढ्धैवंखलुधारणापिचमति
ज्ञानंकिलेत्यंचयत् ॥ अष्टाविंशतिधामतं नव
पदेगंधादिन्निः पूजन । द्रव्यै रष्टन्निरर्चयामि
तदहंनक्त्याशिवायामलम् ॥ २ ॥

ॐह्रींश्रीमति ज्ञानाय जलं १ चंदनं २ पुष्पं ३
धूपं ४ दीपं ५ अक्षतं ६ नैवेद्यं ७ फलं ८
यजामहेस्वाहा ॥ इतिमतिज्ञानपूजा १ ॥

॥ दोहा ॥

सर्वद्रव्यगुणपर्यय । प्रकट करणदिनकार
अगम अपार अनंतश्रुत । गुणगणरयणा
धार ॥ १ ॥ अन्निलापेप्लावित अरथ । ग्र
हणहेतु चिदनूप ॥ समकित मिथ्यातैंकरी
वोधावोधसरूप ॥ २ ॥

॥ रागसामेरी ॥

पूजोरेन्नवि श्रीश्रुतज्ञान उदार पू० तीरथ
पतिपद लहि न्नविजनके यातेकरत उधार१
पू० श्रक्कर१सन्नी२सम्मं३साई४ सपर्यवसित५
ज्ञुनन्नावे ॥ गमिय ६ श्रगपविठ ७ एचउदह ।
न्नेदाविपर्ययन्नावें पू० ॥ २ ॥ पर्यायादिकसमा
ससहितयह । विंशतिधापुनहोवे सर्वचरणकर
ण क्रियाधार। पातिक कलिमलखोवें पू० ३
इकइकश्रुत श्रक्करनां करता । स्वपरविन्नाग
विचार ॥ होवेंपर्ययराशिश्रनंती । सामेरीम
तिधार पू० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

यदक्करमथोन्निधावदतमादियुक्तंततः । सप
र्यवसितचवैगमिकमगविष्टतथा ॥ नजासहस
मासत पुनरिमानिचेत्यंश्रुतं । चतुर्दशविधंय
जेनवपदेशुन्नैरष्टन्नि. ॥ १ ॥

ॐह्रींश्रीश्रुत ज्ञानाय जलं० यजामहेस्वाहा ॥

इतिश्री श्रुतज्ञान पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

द्रव्यक्षेत्र पुनकाल श्ररु न्नावे विषयप्रमाण
वेदैरूपीद्रव्यकों नमोनमो। ग्रधिनाण १ ॥

॥ कुणखेले तोसुं होरीरे एचाल ॥

अवधिज्ञान नित नजियैरे निज विमल न क्तिसें अनुगामी ते देशांतरगत ज्ञानीनें अनु गमियें रे नि० ॥ १ ॥ जिमबञ्ज बञ्जतर दारु प्रक्षेपें कालाजलन वधैये रे नि० सुविमलविम लतराध्यवसायें वर्द्धमान जग जयियें रे नि० प्रतिपातीते एककालमें दीपइवास्तं गमियें रे नि० सेतरभेदें गुणकारण यह ठद्या ठहीकहि यें रे नि० ॥ ३ ॥ नव प्रत्ययिते बञ्जतर नेदें सुरनिरि नवमां गहियेंरे नि० परमावधि अ निरामचंद्रोदयेंनिहचें केवल लहियें रे नि० ४

॥ श्लोक ॥

यच्चैकं ह्यनुगामिचान्य दुदितं संवर्द्धमानं त था तातीयं प्रतिपात्य मूनिहि पुनर्नज्यूर्वका णीहशं । षोढारूपि पदार्थ मात्र विषयं श्री सिद्ध चक्रेनघे द्रव्यै रष्टभिरादरात्तदवधि ज्ञा नं शुद्धै रर्चये ॥ १ ॥

ॐह्रींश्रीअवधिज्ञानायजलंचं० यजामहेस्वाहा इति अवधि ज्ञानम् ॥

॥ दोहा ॥

जेसप्तम गुणठाण थित ऋद्धिमंत मुनिराय

उपजे तसऋजुविपुलमतिज्ञेदेमनपर्याय १
मूर्त्तवस्तु अवलंबियह द्रव्यक्षेत्र अरुकाल
जावेंचउहाजाणिये अरचिलहोसुखमाल २
॥ जिनराज नामतेरा एचाल ॥
मनपर्यवाजिधानं गुणरत्नके निधान पूजोरे
जविक जुनजावे ॥ १ ॥ घटमात्र बोधकर्त्ता
सामान्य जावधर्त्ता ससार जीतिहर्त्ता पू० २
सार्द्धद्वय दीवसागर सन्नीपचेंद्रि आगर मन
जावके दिवाकर पू० ॥ ३ ॥ मनद्रव्यके अशेष
गुणपर्ययादिशेष स्फुटजासितेविशेष ॥ ४ ॥
॥ श्लोक ॥
मन पर्यायाख्यं विपुल मतिचान्य हजुमति
द्विधेत्थं यद्ज्ञानं हृदय गतजाव प्रकटनं ॥
सुमंक्षा वत्पश्चेन्द्रिय विपयि रम्यैर्नवपदे यजे
पूजाद्रव्यै स्तदहमधुना मंगल करम् ॥
ॐह्रींश्री मनःपर्यवज्ञानाय जलंच० यजामहे
स्वाहा ॥ इतिमनःपर्यय ज्ञान पूजा ॥ ४ ॥
॥ दोहा ॥
गुरु असाधारण सकल निर्व्याघातानंत
एकसकल साकारपुनि केवल नतानत १
पचमगति दातार यह पंचमज्ञान उदार

नविनावेंअरचनकरी लहोपरमसुखसार २
केवल नाणउदार यातें आनंद अधिक अ
पार आं० नवासिद्धस्थ दुन्नेद तसअंतर वञ्
तरन्नेद तेतेश्वरणें किमु कविवार के० ॥ १ ॥
रविजिम अमल प्रकाम द्रव्यसकल परिणाम
तससत्ता विन्नतिकार के० ॥ २ ॥ काल त्रय
अनुसारें निज निज वेद्य आकारें प्रतिबिंबि
त होय तिणवार के० ॥ ३ ॥ क्षेत्रथी लोकालो
क। अन्निरामचंद्रोदया लोक यातें परमानंद
अपार के० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

सम्यक्तं समुपैति शुद्धमखिलं यस्माज्जगन्ना
सते साक्षाद्धस्तगतं त्रिकाल जनितं वृत्तंस्फुर
त्यंजसा ॥ जायंते तुलसिद्धयो नवपदे द्रव्यैः
शुन्नैः केवलज्ञानं तत्परिपूजयामि सततं न्ना
वैरनंतं महत् ॥ ५ ॥
ॐह्रींश्री समस्त लोकालोक प्रकाशकाय के
वलज्ञानाय जलं चंदनं पु० यजामहे स्वाहा॥
॥ इति पंचज्ञान पूजा समाप्ता ॥
॥ आरती ॥
जै जगसुखकारीवारी। जैसमपद चितधारी

श्रारति करूंसारी जै० । श्रष्टाविंशति न्नेदकरी ने । मतिज्ञान राजै ॥ ध्यावतपूजत न्नविजन केरा । न्नवसकट न्नाजै जे० ॥ १ ॥ न्नेद चतुर्दशश्रथवा विंशति । प्रवचन पतिदापे ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर स्वमुखथी न्नापे जे० ॥ २ ॥ रूपीद्रव्य विषयि मर्यादा । करिश्र वधीसोहै ॥ न्नेद पटक सख्यातीतीवा । न्नविज न मनमोहे जै० ॥ ३ ॥ तूर्यज्ञान मनपर्यवक हिये । न्नेदयुगम लहिये जै० ॥ ऋजुमति विपुलमति सरदहिये । न्यूनाधिक गहिये जै० ॥ लोकालोकातर्गत वस्तुगुण पर्यवन्नासी । केवल एक सहायश्रनते न्नए निर्वृतिवासी जे० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी श्रारति करतां न्नवश्रारती छीजे जिमवरदत्त कुमर गुणमजरी । तिम न्नक्तिकीजै ॥ बृहत् न्नट्टारक खरतर पति ॥ जिनहंस सूरीराया ॥ तत्पद कजमधुकरकच नानिधि । श्रानंद वरताया ॥

॥ श्रारती ॥

जयर श्रारति ज्ञानदिनदा श्रनुन्नव पद पावन सुखकदा तीन जगतके न्नाव प्रकाशक पूरणप्रन्नुता परम श्रानंदा जय२० ॥ १ ॥ म

तिश्रुति अवधि अनेंमनपर्यव। केवल काटैस
व दुखदंदा जय० ॥ २ ॥ नवजल पार उता
रण कारण ॥ सेवोध्यावो नविजनवृंदा जय०
३ ॥ शिवपुरपंथ प्रगटएसीधा। चौमुखनाषै
श्री जिनचंदा जय० ॥ ४ ॥ अविचल राज
हीयासैपावें। चिदानंद निजतेजअमंदा जय०
आरति ज्ञानदि० अनुनव ॥ इति आरती ॥

॥ अथ नाषा अष्टप्रकारी पूजा ॥

गंगामागध क्षीरनिधि अषधि मिश्रितसार कुसुमेंवासित शुचिजलें। करोजिन स्नात्र उदार ॥ मणि कनकादिक अष्टविधकरी नरी कलस सफार। शुनरुचि जेजिनवरन्हवें तसु नहि दुरित प्रचार ॥ २ ॥ मेरुसिखर जिमसुरवर जिनवर न्हवण अमान। करता बरता निजगुण समकित वृद्धि निधान ॥ ३ ॥ हर्ष नरि अप्सरावृंद आवें। स्नात्रकर एमआसी सनावें। जिहांलगे सुरगिरी जंबुदीवो ॥ अम्हतणा साध्यजीवा तुजीवो ॥ ४ ॥

श्लोक विमल०। ॐह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

वावना चंदन कुमकुमा । मृगमदने घन
सार ॥ जिनतनु लेपेंतसुटलै । मोहसंता
पविकार ॥ १ ॥

सकलसताप निवारण तारण सज्जनावि चित्त
परमअनीहाअरिहा तनुचरचो नविनित्त १
निजरूपै उपयोगी धारी जिनगुणगेह । ना
वचंदनसज्जनावथी टालै दुरितअछेह ॥ २ ॥
जिनतनुचरचता सकलनांकी । कहै कुग्रहाउ
न्नताआजथाकी ॥ सकल अनिमेपता आज
म्हांकी नव्यता अमतणी आजपाकी ॥ ३ ॥
सकलमोह० ॐह्रीँ चं० यजामहे स्वाहा २ ॥

॥ दोहा ॥

शतपत्रीवरमोगरा । चंपक जायगुलाव ॥
केतकिदमणोबोलसरि पूजो जिनत्तरभाव
अमलअखंफितमफितविकसित शुन्नकुसुमनी
घनजात लाक्षीणोटोफरठवोअगीरचोवजन्नां
त १ गुणकुसुमैनिजआतम मफितकरवान्नव्य
गुणरागीजफत्यागी पुप्प चढावो नव्य ॥ २ ॥
जगधणीपूजता विविधफूलै सुरवरातेगिणैखि
णअमूलै खांतधरिमानवाजिनपपूजै तसुतणा

पापसंतापधूजे ॥ ३ ॥
विकचनिर्मल० ॐह्रींपरम० पुष्पंयजा० ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णागर मृगमदतगर । अंबरतुरुक्कलोबा
न ॥ मेलिसुगंध घनसारघन करोजिनने
धूपदान ॥ १ ॥

धूपघटीजिममहमहे तिमदहैपातिकवृंद अर
तिअनादिनीजावै पावैमनआणंद ॥ १ ॥ जे
जिनपूजैधूपैभवकूपें फिरतेह नावेंपावें ध्रुवघ
रआवेंसुखअछेह ॥ २ ॥ जिनघरेवासतांधूप
पूरे मिच्छत्तदुर्गंधताजायदूरै धूपजिमसहजऊ
र्ध्वगसुभावें कारकाउच्चगतिभावपावें ॥ ३ ॥
सकलकर्म० ॐह्रींपरम० धूपंयजामहेस्वाहा

॥ दोहा ॥

मणिमयरजततांम्रना । पात्रकरीघृतपूर ॥
वत्तीसूत्रकुसुंभनी । करोप्रदीपसनूर १ ॥

मंगलदीपवधावोगावो जिनगुणगीत दीपत
णीजिमआलिकामालिकामंगलनीत १ दीपत
णीशुभज्योती द्योतीजिनमुखचंद निरखीहर
षोभविजनजिमलहोपूर्णानंद २ जिनगृहैंदीप
मालाप्रकाशै तेहथीतिमिरअज्ञाननाशै निज

घटैज्ञानज्योती प्रकाशै तेहथी जगतणाभाव
भाशै ॥ ३ ॥
भविकनिर्मल० ॐह्रींपर०दीपंयजा०स्वाहा ॥
॥ दोहा ॥
अक्षत अक्षतपूरसुं जेजिन आगैसार स्व
स्तिकरचतां विस्तरै निज गुणभरविस्तार
उज्जल अमल अखंडित मंडितअक्षतचंग पुं
जत्रयकरो स्वस्तिक आस्तिकभावेरंग ॥ १ ॥
निजसत्ताने सन्मुखउन्मुख भावेंजेह ज्ञानादि
क गुणगावे भावे स्वस्तिकजेह ॥ २ ॥ स्वस्ति
क पूरतां जिनपआगे स्वस्तिश्री भद्रकल्याण
जागे जन्मजरा मरणादि अशुभभागें नियत
शिवशर्मरहै तासुआगे ॥ ३ ॥
सकल मगल ॐह्रीं परम० अक्षतं यजामहे०
॥ दोहा ॥
सरस शुचीपकवानवड़ शालिदालिघृतपू
र करोनैवेद्यजिनआगलै क्षुधादोषतसुदूर
लपन श्रीवरघेवर मधुतर मोतीचूर सिहके
सरिया सेविया दालिया मोदकपूर ॥ १ ॥
साकर द्राखसिघोडा भक्त व्यंजन घृतसद्य।
करोनैवेद्य जिनआगलै जिमामिलै सुखअनव

द्र ॥ २ ॥ ठोकतांभोज्य परभावत्यागे भवि
जना निजगुणैभोज्य मांगें अमभणी अमतणुं
सरूपभोज्य आपज्योतातजीजगतपूज्य ३ ॥
सकल पुद्गल ॐह्रींपरम० नैवेद्यं० यजामहे०

॥ दोहा ॥

पक्वविजोरुं जिनकरे ठवतां शिवपद देह
सरसमधुररस फलगिणै येहजिन भेटकरेह
श्रीफल कदली सुरंगी नारंगी आंबासार अं
जीर बंजीर दाडिम करणा पटवीज सफार
मधुरसुस्वादक उत्तमलोक अनंदित जेह व
रणगंधादिक रमणिक बहुफल ढोकै तेह २
फलभरै पूजतां जगतस्वामी मनुजसुरभवेलहै
सफलपांमी सकलमुनि ध्येयगत भेदरंगें ध्या
वतां फलसमाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥
कटुककर्म ॐह्रींपरम० फलं यजामहेस्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

इम अष्टविध जिन पूजतां विरचैजेथिर
चित्त मानव भव सफलोकरै बाधैसमकि
तावित्त ॥ १ ॥
अगणित गुणगण आगर नागर वंदितपाय
श्रुतधारी उपकारी श्रीज्ञानसागर उवझाय

तासचरण कजसेवकमधुकर परलयलीन श्री जिनपूजा गाइये जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ संवतगुण युगअचल इंदु हर्षनरि गाइयो श्रीजिनेंदु तासफल सुकृतथी सकलप्राणी लह्योज्ञान उद्योत धनशिव निसाणी ॥ ३ ॥ इतिजिनवर० ॐह्रींपरमप० अर्घंयजा०स्वाहा ॥ शक्रोयथा० ॐह्रींपरम० वस्त्रंयजामहेस्वाहा

इति श्री अष्ट प्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा ॥

सुरनदी जलनिर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाघनिवारया । सकलमंगल वांछित दायकं कुशल सूरिगुरोश्चरणंयजे ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्री जिन कुशल सूरिचरण कमलेभ्यो जल निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जल पूजा ॥

मलयचंदनकेसरवारिणानिखिलजाड्य रुजा तपहारिणा सकलमं० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरु चरण कमलेभ्य. चदन निर्वपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ चदन पूजा ॥

कमल केतकि चंपक पुष्पकैः परिमला हृत षट्पद वृंदकैः सकल० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरुचरण कमलेभ्य. पुष्पं निर्वं

यानिते स्वाहा ॥ ३ ॥ पुष्प पूजा ॥
सरल तंदुलकै रति निर्मलैःप्रवर मौक्तिक पुंज वदूज्वलैः सकलमं० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं जिनकुशल सूरि चरण कम० अक्षतं निर्वपा० स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥

वज्जविधैश्चरुभिर्घटकादिकै । प्रचुर मोदक पुंज सुखज्ञकैः सकलमं० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं श्री जिन कुशल० नैवेद्यंनि० ॥

अतिसुदीप्तिमयैः खलुदीपकै विंमलकांचन भाजन संस्थितैः सकलमं० ॥ ६ ॥ ॐह्रींश्री जिनकुशल० दीपंनि० ॥

अगरुचंदन धूपदशांगजैः प्रसरिताखिल दिक्षु सुधूम्रकैः सकलमं० ॥ ७ ॥ ॐह्रींश्रीजिन कुशल० धूपंनि० ॥

पनसमोचसदाफल कर्क्कटैः सुसुखदैःकिलश्री फलचिर्भटैः सकलमं० ८ ॐह्रींश्री जिनकुशल० फलानि० ॥

जलसुगंधप्रसूनसुतंदुलै श्चरुप्रदीपकधूपफला दिभिः सकलमं० ॥ ९ ॥ ॐह्रीं श्रीजिनकुशल० अर्घंनि० ॥ ९ ॥ इतिजिनकुशलसूरिपूजाष्टकं

॥ इति श्रीजिनपूजा संग्रह ॥

॥ पूजानाम ॥

मुद्रासहस्रकिरणे ।
ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसहारी ॥
पुस्तककमलविकासी ।
द्युनिश्रांजैनप्रभाकरोजयतु ॥ १ ॥

फी पुस्तक
निछरावल } { दोरुपैये २ ॥